ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार



एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म परमपिता परमात्मा की विचित्रता से युक्त, अद्भुत और विलक्षण सृष्टि का उद्घाटन पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों से हुआ। वह ईश्वर का एक अलौकिक और दिव्य प्रकटीकरण है और सृष्टि के इतिहास की एक मात्र, विलक्षण अद्भुत घटना भी। जब १४ सितम्बर सन् १९४२ को, उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर, सलेमाबाद में एक विशेष बालक ने जन्म लिया। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो बालक की गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, लगभग १५ मिनट वेद मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त सृष्टि के आदि काल से वर्तमान काल तक के विभिन्न कालों के स्वयं और विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक एक दिव्य प्रवचन होता। बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ में आवाज अस्पष्ट होती और जैसे-जैसे आयु बढ़ने लगी, वैसे-वैसे ही आवाज और विषय दोनों स्पष्ट होने लगे। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नही था। ग्रामीण, निर्धन और अपठित समाज होने के कारण भूत प्रेत का प्रभाव मानते हुए बहुत-सी चिकित्सा भी कराई गई, पर सब व्यर्थ रहे। क्योंकि बालक की यह प्रवचन क्रिया तो यौगिक थी यह तो सतत् ऐसे ही चलती रही। आवाज जब कुछ स्पष्ट हुई तो इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित

और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। और इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में भी जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में जाता तो कुछ अन्तराल बाद स्वतः ही योग समाधि की स्थिति बन जाती। जहां इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और जैसा काल देखा था उस काल के अनुकूल व्याख्यान कण्ठ आ जाते। क्योंकि, जन्म जन्मान्तरों के संस्कार स्मृति में, अन्तःकरण में विराजमान रहते हैं। और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीर धारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती, जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि महाराज, और पूज्य महानन्द जी के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण, वहां अन्तरिक्ष में दिव्य आत्माओं के सम्मुख सत्संग में दिया जाने वाला दिव्य प्रवचन, इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन मानस को भी सुनाई देते। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, ब्रह्माण्ड की विशालता, प्रत्येक लोक में जीवन की अनिवार्यता का बोध, सृष्टि का उद्देश्य, पूर्व कालों में विज्ञान की विशालता का दिग्दर्शन, वैदिक संस्कृति का उज्ज्वलतम स्वरूप, आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का स्वरूप, विभिन्न कालों का आँखो देखा सदृश्य वर्णन, भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का साक्षात दर्शन, समाज में प्रचलित रूढ़ियों का निवारण करने वाली दृष्टि, क्या कुछ दिव्य नहीं है इन दिव्य प्रवचनों में ? ये किसी भी मनुष्य को, समाज का और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते है।

पूज्यपाद गुरुदेव की २० वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्यचकित और उनका मार्गदर्शन करते रहे। परन्तु कुछ प्रबुद्ध महानुभावों ने इन प्रवचनों की इस अमूल्य निधि को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सन् १९६२ से शब्द

ध्वनांकित यन्त्र (टेप रिकार्ड) संरक्षित करने का निश्चय किया, और यह क्रम पूज्यपाद गुरुदेव के महाप्रयाण १५ अक्टूबर सन् १९९२ तक होता रहा।

इस अन्तराल पूज्यपाद गुरुदेव के १५०० प्रवचन, टेप रिकार्ड से संरक्षित किये गये। जिनमें सृष्टि के अनन्तकाल की अमूल्य धरोहर निहित है। हम उनको व्यवस्थित रूप से और अनुसन्धानात्मक दृष्टि से पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। परमात्मा की अनुपम कृपा से प्राप्त, इस अमूल्य धरोहर को जन जन तक पंहुचाने के प्रयास में योगदान देने के लिए, प्रत्येक वैदिक धर्मी को सहयोगी बनना चाहिए। जिससे हम सृष्टि के आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक की मानव गाथा को सभी के सम्मुख रख सकें। विश्व कल्याणार्थ की भावना से निहित इस महान ज्ञान की वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति को प्रसारित कर सकें।

1. आत्मा का रहस्य नैतिक शिक्षा-920629

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और संसार के रचियता हैं और निर्माण में निर्माणित कहा जाता है इसीलिए वह परमपिता परमात्मा प्रायः अनन्तता में निहित रहने वाले हैं। तो उस परमपिता परमात्मा का जो अनन्तमयी ज्ञान है, अनन्तमयी विज्ञान है और अनन्तमयी बेटा! यह संसार की प्रतिभा कहलाती है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अनुसन्धान करता रहा है और नाना प्रकार की उड़ाने उड़ता रहा है। कोई साधक अपनी आत्मा के ऊपर उड़ाने उड़ता रहा है और वह साधना में परणित होने वाला साधक मुनिवरों! देखो, अपनी परमात्मा की आराधना करता है, और वह कहता है कि मैं तेजोमयी बनूं। जैसे परमपिता परमात्मा तेजवान है वह अग्निमयी स्वरूप कहलाता है, इसी प्रकार प्रत्येक मानव की यह आकांक्षा होती है क्या मैं तेजोमयी बनूं, जैसे अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है इसी प्रकार जब परमपिता परमात्मा ने इस मानवीय शरीर का निर्माण किया तो मानव शरीर में भी नौ द्वारों का उन्होंने गठन किया और नौ द्वारों में नौ देवता विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे! इस नौ द्वारों वाले इस मानवीय शरीर में एक चेतना विद्यमान होती है। जिस चेतना का नामोकरण हम आत्मा के रूप में वर्णित करते रहे हैं। वह आत्मा कहलाता है, जो नौ द्वारों के शरीर में प्रायः विद्यमान रहता है नौ द्वारों में मुनिवरों! देखो, एक उपस्थ और ग्रीवा दो नेत्रों के छिद्र हैं, दो नासिका के हैं, दो श्रोत्रों के हैं, एक मुखारबिन्द कहलाया जाता है। यह नौ द्वार कहलाते हैं, इसके द्वारम् ब्रह्म देखो, इसी में आत्मा विद्यमान है। आत्मा के हमारे यहां दो प्रकार के

लक्षणों का वर्णन किया गया है।

आत्मा का लोक लोकान्तरों में प्रवेश

बेटा! मुझे वह काल आज स्मरण आ रहा है, जिस काल में महर्षि जालवी ऋषि के यहां एक ब्रह्म वेत्ताओं की सभा हुई और ब्रह्म वेत्ताओं की सभा में यमाचार्य और पिप्लाद ऋषि भी विद्यमान थे तो यमाचार्य से यह प्रश्न किया गया कि कि आत्माम् भूतम् ब्रह्मा क्या यह आत्मा शरीर को त्याग कर कहां जाता है? जैसे मुनिवरों! यमाचार्य से नाचिकेता ने भी यह प्रश्न किया और उन्होंने मुनिवरों! अपने में विचार विनिमय करने वालों ने अपनी विचारधारा प्रगट करते हुए कहा सम्भवम् ब्रह्मणा लोकाम् यह आत्मा अपने में आत्मतत्त्व कहलाता है। जिसके ऊपर मानव अपने में अन्वेषण करता रहा है। तो महात्मा जालवी ऋषि ने यह कहा क्या यह जो मानव का शरीर है, यह तो पञ्च महाभौतिक कहलाया जाता है यह आत्मा का लोक माना गया है, लोक कहते हैं जिसमें वह वास करता है। तो इसी प्रकार उन्होंने जब यह प्रश्न किया कि महाराज आत्माम् भूतम् ब्रह्मे वेदाम् ब्रीहि वेद मन्त्र यह कहता है कि आत्मा को जानने का कैसे प्रयास करें। जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता है तो वह कौन से लोक लोकान्तर में जाता है? तो मानो उन्होंने कहा कि इन पञ्च मानो नौ द्वारों में इसमें ब्रह्मणे पञ्च तन्मात्रा कहलाती है काल और दिशा कहलाती है आत्मा और मन यह नौ पदार्थ माने गए हैं और नौ ही मानो नौ द्वार हैं और नौ द्वारों पर नौ ऋषि विद्यमान रहते हैं परन्तु देखो, जिस द्वार से जो आत्मा जाता है उसकी वही गतियां क्योंकि उनमें किसी में जल प्रधान है, तो किसी में गुरुत्व प्रधान है, किसी में तेजोमयी अग्नि प्रधान है जैसे नेत्रों में अग्नि प्रधान मानी गई हैं और श्रोत्रों में वायु की प्रधानता और नासिका में गुरुत्व की प्रधानता मानी गई है। परन्तु इसी प्रकार मुखारबिन्द में वायु श्वेतकेतु कहलाया जाता है। तो मेरे पुत्रों! जब इसमें किसी में अग्नि किसी में देवम् ब्रह्मा अन्नाद की प्रतिभा का जन्म होता रहता है। तो मानो देखो, जिस भी द्वार से आत्मा जाता है, उसी लोक में और उसी शरीरों को

यह प्राप्त होता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, मानो जब यह आत्मा इन मानव के नेत्र से आत्मा जाता है, तो यह पक्षी की योनियों को प्राप्त होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह अमृतम् मानो देखो, जब यह रसना के द्वार से जाता है, मुखारबिन्द से तो यह चन्द्र देवता को प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार बेटा! जालवी ऋषि ने अपना मन्तव्य देते हुए कहा क्या यह आत्मा जब उपस्थ से जाता है, तो यह क्रीड़ा करने वाला योनियों को प्राप्त होता है और जब इसमें मुनिवरों! क्रोध की मात्रा विशेषता में आत्मा को त्यागा जाता है, तो विषधर जितने भी विषैले प्राणी हैं, उनमें प्राप्त हो जाता है तो यह आत्मा अपने में मानो बड़ी विचित्र अमृतियों को प्रकृति के अवयवों को जानता हुआ ऋषि कहता है, क्या इसी के ऊपर हमें अन्वेषण करना है, विचार विनिमय करना है।

आत्मा का लोक

मेरे प्यारे! देखो, आत्माम् भूतम् ब्रह्मा जालवी से कहा कि आत्मा का लोक क्या है? उन्होंने कहा कि आत्मा का लोक पञ्चमहाभूत हैं। इस पञ्चमहाभूतों के शरीर में रहनी वाली एक चेतना है उसी को आत्मा कहते हैं। चेतना को गति है वही तो मानो इस शरीर को गतिवान बनाती रहती है, और जब यह मानो गति नहीं रहती तो मानव का शरीर पूर्णता को प्राप्त हो जाता है। परन्तु देखो, यह तो स्थिर क्रियाकलाप रहा और वास्तव में मृत्यु अपने में देखो, रूलाने वाली है। यमराज भी कहते हैं कि मृत्यु को विजय करने वाला ही मानो देखो, यमराज कहलाता है। जैसे बेटा! देखो, आत्माम् भूतम् नाचिकेता ने कहा क्या हे प्रभु! यह आत्मा शरीर को त्याग करके कहां जाता है? तो इस सम्बन्ध में जालवी ऋषि से प्रश्न किया गया जालवी ऋषि ने मुनिवरों! अपना मन्तव्य देते हुए कहा सम्भूति ब्रह्मणा लोकाम् सम्भूति लोकाम् वाचस्सुतम्। मेरे प्यारे! देखो, सम्भूति का वर्णन करते हुए, उन्होंने कहा कि आत्माम् भूतम् आत्माम् लोकाः मेरे प्यारे! देखो, यह आत्मा अपने में अपने में चेतना है, आत्मा के चले जाने से मानव का शव मानो शून्यता को प्राप्त हो जाता

है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और राजा जनक रम्भेश्वरी संवाद

यह मुनिवरों! देखो, वेद का मन्त्र कहता है यजन्म ब्रह्मे जैसा बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! राजा जनक के विद्यालय में विद्यमान हो करके यज्ञशाला में बेटा! देखो, याग का जब व्यवधान हो रहा था तो मुझे स्मरण आता रहता है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से उन्होंने देखो, उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने कहा हे प्रभु! हे ऋषिवर! हम यह जानना चाहते हैं कि आत्मा भूतवान भूवम् ब्रह्मे।

सूर्य का प्रकाश

हे प्रभु! यह प्रकाश का मूलक क्या है? तो उस समय उन्होंने कहा कि प्रकाश का जो मूलक है मानो यह सूर्य माना जाता है। सूर्य का प्रकाश आता है मानव प्रकाशित हो जाता है और प्रकाश में रत्त होता हुआ अपने में प्रकाश को प्राप्त हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, यही प्रकाश द्यौतक है। सूर्य प्रातःकाल उदय होता है माता अपने पुत्रों का जागरूक कर लेती है, विद्यालय में ब्रह्मचारियों को आचार्य जागरूक कर लेता है और कहता है आओ, देखो, जागरूक हो जाओ सूर्य प्रकाशक बन करके आ गया है यह ऊषा नाम की कान्ति नाम की किरणों को ले करके आ गया है, तुम उदय हो जाओ, अपने क्रियाकलाप में रत्त हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, वह प्रत्येक मानव याज्ञायाम् ब्रह्मणे वह जागरूक हो जाते हैं।

चन्द्रमा का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो, वह राजा जनक ने कहा प्रभु! कहीं ऐसा हो कि सूर्य का भी अभाव हो जाए तो वह किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब सूर्य का अभाव हो जाए तो हमारे नेत्र मानो चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं, और वह प्रकाश मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा का मधुर प्रकाश है। आनन्दम् ब्रह्मे वह

समुद्रों से उसका समन्वय रहता है, और वही माता के गर्भस्थल में रहने वाला जरायुज है अथवा गर्भाश्य में रहने वाला शिशु है, वह अमृत के देने वाला देखो, वह चन्द्रमा अमृत देता है। माता के रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है जब मानो देखो, चन्द्रमा का अव्रेत होता है, प्रकाश आता है तो वह नाड़ी देखो, उसमें से अमृत को ग्रहण करने लगती है वह अमृत बेटा! देखो, वह रसना से वह माता के पुरातत काल नाम की नाड़ी में जाता है और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय होता हुआ माता की नाभि और शिशु की नाभि का एक समन्वय होता है तो वह अमृत का पान करता रहता है, वह अमृतमयी कहलाता है। यह चन्द्रमा हमारा प्रकाश का द्युतक है और चन्द्रमा हमारा देवत्व कहा जाता है इसका समन्वय बेटा! समुद्रों से होता है और समुद्रों से देखो, वह अमृत को ग्रहण करता हुआ मुनिवरों! कृषक की भूमि ब्रहे नाना प्रकार की यह वसुन्धरा है जो पृथ्वी इसके गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों का जन्म हो जाता है जिससे यह संसार गतिवान मानो देखो, अपने में भरण करने लगता है। तो विचार आता है बेटा! चन्द्रमा अपने में पवित्र है, चन्द्रमा अमृत के देने वाला है, वह अमृतमयी कहलाता है। इतने में बेटा! देखो, ऋषि ने कहा सम्भवम् ब्रह्मे देखो, चन्द्रमा की उपास्य तो उपास्य देव बन जाओ उसके।

तारा मण्डलों का प्रकाश

राजा जनक अपनी पत्नी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा कि हे प्रभु! यदि चन्द्रमा का भी अभाव हो जाए। यह चन्द्रमा भी न हो तो प्रभु! हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? तब उन्होंने कहा कि जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो धीमा धीमा तारामण्डलों का प्रकाश है अन्धकार छाया हुआ है चन्द्रमा सूर्य नही है, तो मानो उस समय वह जो धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है तारामण्डलों का उसके प्रकाश में हम रत्त हो जाते हैं और अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं। वही पगडण्डी के पथप्रदर्शक बन जाते हैं। यह लोक लोकान्तर, यह ब्रह्माण्ड बड़ा विचित्र है। नाना प्रकार का

यह जो मण्डल है, तारा मण्डल एक दूसरे में समाहित हो रहा है एक दूसरे का एक दूसरा मनका बना हुआ है, और वह चेतना के सूत्र में पिरोया हुआ है।

प्रभु का अनन्तमयी राष्ट्र

मेरे प्यारे! जब हम देखो, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करने लगते हैं अनुसन्धान करते हैं तो मुनिवरों! देखो, एक दूसरा एक दूसरे में ओत प्रोत होता हुआ प्रायः हमें दृष्टिपात आता है जैसे मेरे प्यारे! यह पृथ्वियां नाना पृथ्वियों को वैज्ञानिकों ने जाना है। मुझे स्मरण आता रहता है भारद्वाज मुनि के यहां बेटा! देखो, एक वैज्ञानिकों की सभा हुई। उस सभा में यह निर्णय होने लगा कि यह सूर्य के अन्तर्गत पृथ्वियां कितनी भ्रमण करती हैं। तो उन्होंने बेटा! तीस लाख पृथ्वियों का व्यवधान किया। उन्होंने कहा तीस लाख पृथ्वियां हैं, जो सूर्य के अन्तर्गत सूर्य में समाहित होती हैं। सूर्य इतना विशाल मण्डल है, जिसमें मानो देखो, तीस लाख पृथ्वियां ओत प्रोत हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, यह नाना ब्रहे और नाना सूर्य एक सूर्य नही अनन्य सूर्य कहलाते हैं, मेरे प्यारे! देखो, एक सहस्र सूर्य, बृहस्पति में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्र बृहस्पति आरुणि मण्डल में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्र आरूणी मण्डल मेरे प्यारे! ध्रुव में समाहित हो जाते हैं। और एक सहस्र ध्रुव मण्डल पुष्प नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं, एक सहस्र पुष्प नक्षत्र स्वाति नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं। और एक सहस्र स्वाति नक्षत्र मूल नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं और मानो एक सहस्र मूल नक्षत्र अचंग मण्डल समवृत्ति लोकों को प्राप्त हो जाते हैं एक सहस्र समवृत्ति मण्डल मेरे प्यारे! देखो, व्रेतकेतु मण्डल में ओत प्रोत हो जाते हैं, एक सहस्र व्रेतकेतु मण्डल मुनिवरों! देखो, अमृत प्रव्हाः ध्रुव अमृते वाचन्नमम् गन्धर्वाम् भवे वह गन्धर्व में ओत प्रोत हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, इन सब मनको को एक अन्तिम जो एक सूत्र है, अन्तिम जो मनका है वह गन्धर्व कहलाता है, तो इतने मानो मण्डलों का एक सौर मण्डल बनता है और सौरमण्डल बेटा! अपनी एक ईकाई में रमण कर रहा है। मानो देखो, वह एक प्रकार की माला

बनी हुई है जिस माला को योगीजन अपने में धारण करते हैं। जिस माला को मेरे पुत्रों! देखो, वह वैज्ञानिक अपने में धारणा करते रहे हैं और वह विज्ञान मानो देखो, कहीं आध्यात्मिकवाद में, कहीं भौतिकवाद में रमण कर रहा है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा है कि इतने सौरमण्डलों का मेरे प्यारे! अमृत कहलाता है वह मण्डल है, वह सौर मण्डल कहलाता है। तो एक अरब छयानवे करोड़ उनतीस लाख उनस्वी हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग बेटा! देखो, इतने सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बनती है, एक आकाश गंगा कहलाती है। मुनिवरों! देखो, लगभग एक अरब अठानवे करोड़ उन्नासी लाख उनचसवीं हजार पांच सौ बावन देखो, एक सौ वृत्ति अमृतम् देवत्वाम् कहलाने वाला मेरे प्यारे! इतनी गणना में आने वाली आकाश गंगा कहलाती है। मेरे प्यारे! पौने दो अरब आकाश गंगाओं की लगभग मुनिवरों! देखो, एक अवन्तिका बनती है। पौने दो अरब अवन्तिकाओं की लगभग मुनिवरों! देखो, एक निहारिका बनती है। तो विचार आता है बेटा! प्रभु का यह राष्ट्र जगत बड़ा अनन्तमयी है। ऋषि मुनियों ने इतनी आकाश गंगा और निहारिकाओं को जान करके वह अपने में मौन हो गये हैं। तो विचार वेत्ताओं ने कहा मुनिवरों! जब उनका धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है। उसी में मानव अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। वह प्रकाश में रत्त हो जाता है और वह मानो देखो, उसी धीमे प्रकाश से अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करता रहता है।

अग्नि का प्रकाश

मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा सम्भवम् ब्रह्मे राजा ने कहा हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं जब तारा मण्डलों का भी अभाव हो जाता है तो किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंन कहा जब तारा मण्डलों का अभाव हो जाता है तो हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। अन्धकार छाया हुआ है, मेरी प्यारी माता अपने गृह को प्रकाश में अग्नि से प्रकाश में ला देती है, वह प्रकाश हो जाता है। तो अग्नि के प्रकाश में अपने क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है। यही अग्नि बेटा!

देखो, वेद के वांगमय में चार प्रकार की अग्नि का चयन किया है। सबसे प्रथम गार्हपथ्य नाम की है, जिसमें ब्रह्मचारी तपता है गृहपथ्य नाम की अग्नि में ब्रह्म अमृतम देखो, गृह तपता है, पति पत्नी तपते रहते हैं और वैश्वानर नाम की अग्नि में वानप्रस्थ तपता है और आह्वनीय नाम की अग्नि में बेटा! देखो, सन्यस्थ तपता रहता है। यह तपायमान होने वाला जगत है यह अग्नियों में तपायमान है यही अग्नि देखो, जब आचार्यों के आयुर्वेदा आचार्यों के समीप पंहुचीं तो बेटा! उन्होंने पचासी प्रकार की अग्नियों का चयन किया है और मुनिवरों! यही अग्नि जब वैज्ञानिको के कुल में पंहुचीं तो वैज्ञानिकों ने बेटा! अरबों खरबों प्रकार की अग्नि का चयन किया है बेटा! देखो, अग्नि अपने में अग्नयाधान करती रहती है।

विचारवेत्ता कहते हैं कि अग्नम् ब्रह्मा अग्नम् देवत्वाम् लोकाम् यह अग्नि हि मेरे प्यारे! हमारा वृत्त कहलाया जाता है। तो विचार आता हे कि अग्नि के ऊपर विचारवेत्ताओं ने बेटा! इस अग्नि की धाराओं के ऊपर शब्द जाता है, वह द्यौ लोक में प्रवेश कर जाता है। नाना प्रकार का जो परमाणुवाद है वह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके अपने में लय हो जाता है। यह अग्नि देवाम् मुखाम् यह देवताओं का मुख माना गया है। जो सब देवताओं को प्राप्त होता रहता है।

शब्द का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो पति पत्नी ब्रह्मे राजा और उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं। प्रभु! यदि अग्नि का अभाव हो जाए तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा कि यदि अग्नि का अभाव हो जाए, अग्नि न रहे तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यही शब्द है, जो मानो देखो, ध्वनि कर रहा है और मानव अपने में ध्वनित हो रहा है। इस ध्वनि को जानने वाला मानो बेटा! देखो, अन्धकार रात्रि काल में विचारवेत्ता मुनिवरों! देखो, परमाणुओं का जो संघर्ष होता है शान्त मुद्रा में बेटा! देखो, उसका

ध्यानावस्थित हो जाते हैं और वही ध्यानावस्थित हो करके मुनिवरों! देखो, अमृतम् वह शब्द की ध्वनि को पान करते हैं। जब साधक मुनिवरों! देखो, अन्तिम में जाता है, तो एक अनहद ध्वनि होती है जो मुनिवरों! देखो, अनहद ध्वनि के द्वारा जो ध्वनिम् ब्रह्मा ध्वनित होता रहता है वह ध्वनियों को श्रवण करता है, वह साधक मुनिवरों! देखो, अपनी ध्वनियों में ध्वनित हुआ परमाणुवाद में प्रवेश कर जाता है। विचारवेत्ता कहते हैं बेटा! अग्नम् ब्रह्मा अग्नम् देवत्वम् ब्रह्मा अग्नाम् भूतम् वाचन्नमम् ब्रह्मे अग्ने मेरे प्यारे! देखो, वही तो देखो, ध्वनि है, जो परमाणुवाद में रत्त हो रही है शब्दों की ध्वनियों में हो रही है। यदि शब्द पवित्र है तो ध्वनि मुनिवरो देखो, वह अमृत देखो, प्रदूषण को समाप्त करती है और यदि वाणी में दूषितपना है, शब्दों में दूषितपना है, ध्वनि पवित्र नही है तो वही मानो प्रदूषण को जन्म देने वाली है।

विचार आता रहता है इसीलिए वेद के ऋषियों ने कहा हे मानव! तू सत्यवादी बन और अपनी वाणी से अपनी ध्वनि में मानो परमात्मा की वाणी को सम्बोधित कर। मेरे प्यारे! इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया और उस समय वर्णन करते उन्होंने कहा यही ध्वनि है एक मानव अन्धकार में चला गया तो मार्ग से कुपथ को चला जाता है कुमार्ग में चला गया, अन्धकार में चला गया तो वह भयंकर वन में जा करके कोई मार्ग प्राप्त नही हो रहा है। वह कहता है अरे, है कोई मार्ग को चेताने वाला जो मानव मार्ग में इस तरह कहता है, आ जाओ मैं मार्ग में स्थिर हूं। बेटा! उसी शब्द ध्वनि की ध्वनि से वह ध्वनित होता उस मार्ग को प्राप्त कर लेता है, जिससे उसका विच्छेद हो गया है। तो उसी मार्ग को प्राप्त करता मार्ग का पथ प्रदर्शक बन जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि यह अमृतम् ब्रह्मा मानो देखो, वही तो अमृत है और वही ध्वनि से मानो देखो, पाण्डितव बनता है। जब पाण्डितव अपनी वाणी से वेद का बखान करता है वेद ध्वनि को ध्वनि बना लेता है तो मानो वह पाण्डितव कहलाता है सत्यवादी बन करके पाण्डितव अपनी

पाणिडतव की आभा में प्रायः परणित हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा है क्या तुम अपनी वाणी को मानो ध्वनि को जानने का प्रयास करो। वह ध्वनि देखो, कहीं तारामण्डलों से है कहीं परमाणु एक दूसरे में संघर्ष कर रहा है, मानो कहीं लोक लोकान्तरों में संघर्ष होता रहता है। वह सब ध्वनि कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, ध्वनि के ऊपर विचार विनिमय किया जाए तो वेद का शब्द कहता है शब्दम् ब्रह्मा ब्रह्मे कृतम् यह शब्द ही मानो देखो, ब्रह्म की वेदी कहा जाता है। ब्रह्म की वेदी पर विद्यमान होने वाला ही मुनिवरों! देखो, शब्द को जानता है। यह शब्द जब अग्नि नहीं होती तो शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं और यही प्रकाश मानो देखो, मानव के जीवन का द्यौतक कहा जाता है।

आत्मा का प्रकाश

मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया अपनी आभाएं प्रगट की तो उस समय राजा और पत्नी रम्भेश्वरी ने कहा प्रभु हम यह जानना चाहते हैं जब मानो यह शब्द भी नही होता, तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब ये ध्वनि नही होती जब मानो देखो, शब्द नही होता तो जटा पाठ में वेद का बखान करता है, कहीं घन पाठ में करता है, कहीं माला पाठ का उदगीत गा रहा है और कहीं मानो देखो, दीक्षित बन रहा है शब्द के कारण। इसी प्रकार मानो देखो, जब शब्द नही होता तो हे भगवन! देखो, हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं यह आत्मा हमारे प्रकाश का द्युतक है। यह आत्मा को जानने का प्रयास करो। प्रत्येक मानव परम्परागतों से साधक बना हुआ है। आचार्यों के समीप जाता रहा है और आचार्यों से जिज्ञासु यही कहता है प्रभु मैं आत्मा को जानना चाहता हूं। मुझे आत्मा के जानने का मार्ग मुझे दीजिए। तो उस समय आचार्य उसे दीक्षीत बनाता है। तो मानो देखो, इस प्रकार अमृतम् ब्रह्मा आत्माम् भूतम् बेटा! देखो, आत्मा एक चेतना है जो इस शरीर में विद्यमान रहती है।

मेरे प्यारे! देखो, जब तक आत्मा इस शरीर में विद्यमान है तब तक यह मानव चेतनित बना रहता है, और जब आत्मा निकल जाता है तो चेतना शून्य हो जाता है मानो देखो, इस शरीर पञ्च महाभूतों का वृत कहलाया गया है। इस पञ्च महाभौतिक पिण्ड को अग्नि में दाह कर देते हैं, अग्नि का भाग अग्नि में प्रवेश कर जाता है, आपो का भाग जल में प्रवेश कर जाता है, गुरुत्व गुरुत्व में प्रवेश कर गया है और वायु मुनिवरों! वायु में प्रवेश कर जाती है और मुनिवरों! अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष में चला जाता है। विचार आता है बेटा! प्राण अपनी आभा में चित्त के मण्डल को ले करके गमन करता रहता है। तो विचार आता रहता है बेटा! मानव का शरीर जब तक चेतनित बना रहता है, जब तक आत्मा विद्यमान है। आचार्यों ने इसीलिए नाना प्रकार के वेद का अध्ययन किया है मन्त्रों के वांगमय में पंहुच गये हैं। उनका एक ही मन्तव्य रहा है कि हम आत्मा को जानने का प्रयास करें, जिस आत्मा के कारण हम चेतना में चेतनित रहे हैं। और इसके न रहने पर शून्यता को प्राप्त होते रहे हैं उसको समाज कोई मृत्यु कहता है, कोई शरीरान्त कहता है, कोई कहता है मानो शरीर को त्याग दिया है कोई किसी प्रकार को सम्बोधित करता रहता है परन्तु मन्तव्य केवल यह है कि चेतना से रहित हो गया है और वह शून्यता को प्राप्त होना ही मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणो ब्रहाः वही आत्मा का न रहना तो आत्मा को जानो जो इस शरीर में पञ्च महाभूतों वाले लोक में रमण करता है। यह पञ्च महाभूतों के लोक में रहने वाला ही तो आत्मा कहलाता है। इस आत्मा के ऊपर मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहता है।

आत्मा को जानने को प्रेरणा

जितना भी मानव मोह कर रहा है, वह आत्मा को तृप्त करने के लिए जितना मानव त्याग कर रहा है, वह गृह को त्याग देता है, तपस्या करता है अपने में तपस्वी बना हुआ है। मेरे प्यारे! वह आत्मा को जानने के लिए एक मानव बेटा! साधक बन करके अपने अन्तरात्मा को न जान करके मुनिवरों! देखो, जगत का भ्रमण

करता है उसका मन्तव्य भी केवल यही रहता है कि मैं आत्मा को जानूं। तो मेरे प्यारे! देखो, एक मानव प्राणायाम कर रहा है वह आत्मा को जानने के लिए। एक मानव बेटा! मृत्युञ्जय बन रहा है कि मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूं। इन्द्रियों के रूग्णों में मैं रमण करना नही चाहता। केवल उसका मन्तव्य भी यही है कि मैं आत्मा को जानने का प्रयास करूं। परन्तु विचार आता है कि आत्मा एक चेतना है, आत्मा मानो देखो, ज्ञान युक्त है, आत्मा इस शरीर में वास करने वाला है। आत्मा नहीं रहेगा, तो चेतना नही रहेगी और चेतना नही रहेगी तो संसार का कोई भी क्रियाकलाप नहीं कर सकता। तो इसीलिए चेतना के ऊपर हमारा एक नृत होना चाहिए अथवा उसके ऊपर अनुसन्धान होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, आत्मा के निकल जाने के पश्चात मानव को नाना प्रकार की संज्ञाओं से सम्बोधित किया जाता है। परन्तु देखो, यह मृत्युम् ब्रह्मा मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही कहलाता है। यह दोनों का मुनिवरों! अपने अपने में रूपान्तर हो जाना है जैसा मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्लाद ने अपनी देवी से कहा था क्या हे देवी! जब आत्मा निकल जाता है तो मानो देखो, अग्नि, अग्नि में, अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष में, और देखो, यह आपो, आपो में गुरुत्व गुरुत्व में पृथ्वी का भाग पृथ्वी में प्रवेश हो जाता है और यह आत्मा अपने संस्कारों के मानो समूह को ले करके मन बुद्धि दोनों सम्मिलित हो करके आत्मा इस शरीर से निकल जाता है। मानो जन्माम् भूतम् ब्रह्मा संस्कार रहते हैं। अन्तःकरण में तो पुनः संस्कारों के आधार पर किसी माता के गर्भ से यह प्रवेश कर जाता है। तो विचार आता रहता है परन्तु देखो, मोक्षाम् भूतम् ब्रह्मे आचार्यों ने कहा इसको हमें मोक्ष में पंहुचाना है, हमे इसको जान करके ही मोक्ष को प्राप्त करना है। मोक्षाणाम् भूतम् ब्रह्मे मोक्ष कहते हैं जो संस्कारों से विहिन हो जाता है। संस्कारों से विहिन हो जाने का नाम ही मोक्ष है। मेरे प्यारे! देखो, इस संसार की प्रतिभा में न रहना ही आनन्द और देखो, वह परमात्मा के आनन्द में अपने को परमात्मा में रमण कर देता है।

विचार आता रहता है आचार्यों ने कहा है पिप्लाद ने भी यही कहा क्या मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है, मृत्यु को जानने वाले की मृत्यु नही हुआ करती है क्योंकि वह आत्मा का ही आत्मा है। आत्मा संस्कारों का समूह है यह केवल शरीर का रूपान्तर होता रहता है और रूपान्तर वह यह जो अन्तम् ब्रह्मा वच्चतप्रव्हे जो अन्त में विचार होते हैं उसी विचारों के आधार पर किसी माता के गर्भ में जाने का उसे अवसर प्राप्त हो जाता है। उसी को प्राप्त हो जाता है जो अन्त में संस्कार शरीर को त्यागते समय जो संस्कार बने रहेंगें उसी के आधार पर जन्म लेता रहता है।

अनन्त गम्भीर रहस्य

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट करना नही चाहता हूं विचार विनिमय यह कि हमारे इस शरीर का यह नौ द्वारों वाला यह शरीर है, एक मानो भव्य भवन है जिसमें आत्मा विद्यमान रहता है और यह आत्मा नौ द्वारों से जाता है। मुनिवरों! देखो, जो किसी द्वार से जाने से यह पक्षियों की योनियों को प्राप्त होता है और यह किसी द्वार से जाने से यह मानो विषैले प्राणियों को सर्प इत्यादियों को प्राप्त होता रहता है। और कोई मानो देखो, यह सिंह इत्यादि को प्राप्त होता रहता है कोई जब नासिका से जाता है, सूर्य स्वर से जाता है तो यह मानव की योनि को प्राप्त होता है चन्द्र स्वर से जाता है तो मानो यह मानव की योनि को प्राप्त होता है। चन्द्र स्वर से जाता है तो मानो यह मानव तो बनता है परन्तु विलासी बन जाता है। इसी प्रकार अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् जो मुखारबिन्द से जाता है, वह देखो, विरानकेतु पक्षियों में प्रवेश करता है। जो हिंसक प्राणी हैं उनमें अवान्तर भेदन माने गये हैं। तो बेटा! देखो,मुखारबिन्द में ब्रहे दो प्रकार की प्रकृति होती है, वह एक श्वांस की गति ब्राहा होती है एक मानो देखो, अप्रहा होती है। जो अप्रहा से जाता है देवत्व को प्राप्त होता है और जो आत्मा ब्रह्मरन्ध्र से जाता है, नौ द्वारों से शरीर से जाता है तो बेटा! वह देव कोटि को प्राप्त होता रहता है। तो विचार आता रहता है मुनिवरों! यह नौ द्वारो का यह एक मानव का शरीर है, यह बड़ा विचित्र है इसके

ऊपर मानव परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से मानो अनुसन्धान करता चला आया है। ऋषि मुनियों ने बहुत कुछ जाना इसके ऊपर परन्तु देखो, यह उसके पश्चात भी अनन्तता में एक मानो गम्भीर रहस्यतम बना हुआ है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूं, विचार विनिमय क्या जब मुनिवरों! देखो, राजा जनक उनकी पत्नी ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह प्रश्न उत्तर लिए तो उनका अन्तरात्मा प्रसन्न हो गया। उन्होंने कहा धन्य है ऋषिवर! आप ने हमें प्रकाश में पंहुचा दिया है अन्धकार से प्रकाश में इसीलिए आप को धन्य है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अमृतम् ब्रह्मा कोई प्राप्त होता है, अपने में मौन हो गया। आत्मा पर जा करके राजा मौन हो गया, उनकी पत्नी भी मौन हो गई और ऋषि भी मौन हो करके और वह प्रभु के चिन्तन में मानो सदैव देखो, रत्त हो गये। यह है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए पञ्च महाभूतों वाले लोक को जानने का प्रयास करें और देवत्व को प्राप्त हो जाऐं यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् मनुगतम् वाचन्नमः। ओ३म् तनु गायन्त्वा रथम् माऽम प्राची रेवाः आप्याम् मनाःम सर्वा।

2. नैतिक शिक्षा मृत्यु और जीवन-920701

परमपिता परमात्मा की गाथा का यशोगान

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहरवेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गयाहोगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुण गान गाते रहते हैं। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। इसीलिए हमारा वेदमन्त्रों उस परमपिता परमात्मा को अनन्तवान कहता है और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड केमूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। जो उस परमपिता परमात्मा को मानो अन्तर्हृदय से उसको निहारता रहता है उसको वह प्रायः दृष्टिपात आते रहते हैं। तो वह परमपिता परमात्मा जो जड़ और चेतना में अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहता है हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा को सदैव जानने का प्रयास करें। क्योंकि हमारे यहाँ प्रत्येक वेदमन्त्रों उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार यह पृथ्वी इस ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्रों उस परमपिता परमात्मा का यशोगान गा रहा है अथवा उसकी गाथा गा रहा है और उसका यह वर्णन करता है कि परमपिता परमात्मा है। मानो योगेश्वर अपने में निश्चयात्मक उस परमपिता परमात्मा को प्रायः अपने में धारण करते रहते हैं। ब्रह्मवर्चस का गान आओ मुनिवरो! यह आज का हमारा वेदमन्त्र जहाँ परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गान गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है जिस प्रकार माता का निर्णय देने वाला उसका पुत्र है।

इसी प्रकार ब्रह्माण्ड की जब गाथा गाई जाती है तो उसके मूल में पृथ्वी रहती है क्योंकि जब से संसार की रचना हुई है, नाना प्रकार के वैज्ञानिक हुए हैं परन्तु उन वैज्ञानिकों ने परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण किया और जब वह परमाणुवाद में क्योंकि वह पृथ्वी के गर्भ में ही जाना जाता है और पृथ्वी के गर्भ को जानता हुआ मानव विज्ञान के वाङ्गमय में प्रवेश होजाता है। तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है उसका यशोगान गाने वाली यह पृथ्वी है। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र अपने में जब गान गाता रहता है, अपने में जब यशोगान गाता है और गान गाता हुआ कहता है ब्रह्मणं ब्रह्मा वर्चस्सुतम् ब्रह्म लोकाम्ः मेरे प्यारे! वह ब्रह्मवर्चोर्सी है और ब्रह्म वर्चस कहलाया गया है। जब जिज्ञासु अपने में जिज्ञासा करता है तो परमात्मा का निश्चयात्मक उसका विश्वास करता है और विश्वास से ही मुनिवरो! देखो, परमात्मा को निश्चय स्वीकार करता रहता है। तो वह परमात्मा का यशोगान गान गाने वाला प्रत्येक वेदमन्त्रों बेटा! अपने में गान गाता रहता है।

परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहें

आओ, बेटा! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गान गाते रहें और ब्रह्म ज्ञान में मानो अपने को ले जाते ब्रह्मवेत्ता बनाने के लिए सदैव तत्पर रहें। तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब ऋषि मुनि अपनी अपनी एकन्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके नाना प्रकार का विचार विनिमय करते रहे हैं। नाना प्रकार का जो विचार है वह अपने में बड़ा भव्यतव में माना गया है क्योंकि ब्रह्म ज्ञान का बखान करने वाला ब्रह्म की जिज्ञासा में सदैव निहित रहता है।

परमपिता परमात्मा यम

बेटा! आज का हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा है अमृतम् मृयं यमास्वञ्जनम् देवत्वम्

लोकाः क्या वह परमपिता परमात्मा को यम कहते हैं और यम उसे कहा जाता है जो मृत्यु से परे होता है। मेरे प्यारे! देखो, वह परमपिता परमात्मा मृत्युञ्जम् ब्रह्मणां लोकाम् वसुतरम् तो बेटा! देखो, लोकप्रियता में भी वास्तव में यम कहते हैं जो मृत्यु को विजय कर लेता है। मैंने बेटा! तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है क्या आत्मा परमात्मा का ध्यानावस्थित हो करके मानो मृत्युञ्जय बन जाता है, मृत्यु को अपने से दूरी कर देता है।

महर्षि जमदग्नि आश्रम में मृत्यु पर चिन्तन

आओ बेटा! मैं आज तुम्हें एक सभा में ले जाना चाहता हूँ जिन वाक्यों को मैंने पुरातन कालों में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा है। आज भी मुझे वह वाक स्मरण आते रहते हैं। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है जब महात्मा जमदग्नि के यहाँ एक सभा हुई और उस सभा में मुनिवरों! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेवक और वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक, देवर्षि नारद, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रोहणी केतु और मुनिवरों! देखो, उनके मध्य में महर्षि पिप्पलाद, चाक्राणी गार्गी और भी नाना ऋषि मुनियों का बेटा! एक समूह विद्यमान था। तो वहाँ मुनिवरो! देखो, महात्मा जमदग्नि और पारेत्वरं ऋषि महाराज दोनों एक वेदमन्त्रों के ऊपर अध्ययन कर रहे थे और वह अध्ययन था मृत्युञ्जयम् ब्रह्मा मृत्यु वर्णाम् ब्रव्हे लोकाम् क्या वह पिप्पलाम् ब्रहे बेटा! देखो, वह अपने में अध्ययन करते हुए महात्मा जमद्गि ने यह कहा क्या यह मृत्यु क्या है जिसके ऊपर मानव सदैव व्याकुल रहता है। मेरे प्यारी माताएँ मानो देखो, पुत्र के विच्छेद होने से कितनी व्याकुलता होती हैं। मानव अपने में व्याकुल होता रहता है यह है क्या? तो महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज अमृतम् ब्रह्मा देखो, सभा में विद्यमान थे परन्तु उससे पूर्वकाल में महात्मा जमदग्नि और पारेत्वर ऋषि महाराज ने अपने में विचारा कि ब्रह्मवेत्ताओं का एक समूह एकत्रित हो। तो वह समूह इसलिए एकत्रित हुआ क्या हम मृत्यु के ऊपर कुछ विचार विनिमय करेंगे।

मेरे प्यारे! देखो, यहाँ ऋषि मुनि अपने में जब एकत्रित हो गये तो महात्मा जमदग्नि ने बेटा! एक वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया और वेदमन्त्र था मृत्युञ्जम् ब्रह्मा लोकाम् वसु देवत्वाम् ब्रह्मे वाचन्नमम् ब्रह्मा मृत्यु मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि वेदमन्त्रों कहता है कि यह मृत्यु क्या है? जिस मृत्युके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अपना अन्वेषण करता चला आया है और जिस मृत्यु के ऊपर नाना दार्शनिक विद्यमान हो करके अपने दर्शनों की प्रायः मीमांसा करते रहे हैं। जहाँ बेटा! देखो, यहाँ अमृतम् नाना ऋषि मुनि अपने में मीमांसक बन करके और यहाँ महात्मा दधीचि जैसे ऋषि मुनियों ने मृत्यु के ऊपर अन्वेषण किया और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने भी तप किया इसी सम्बन्ध में।

चाक्राणी गार्गी का विचार

मेरे प्यारे! देखो, इस सभा में उन्होंने वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया तो सभा में मुनिवरो! एक दूसरा एक दूसरे को दृष्टिपात करने लगा। परन्तु इतने में चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और चाक्राणी गार्गी ने कहा हे ब्रह्म वेताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं ऋषि के प्रश्नों का उत्तर दूँ? तो उन्होंने कहा बहुत प्रिय, प्रारम्भ हो। तो बेटा! उनके विचार प्रारम्भ होने लगे। तो महात्मा जमदग्नि अवृति ऋषि मुनियों की सभा में बेटा! चाक्राणी गार्गी ने यह कहा क्या शरीर का और आत्मा का, दोनों का विच्छेद हो जाना ही, पृथक पृथक हो जाना ही मानो यह मृत्यु मानी जाती है। और यह अपने में अपने अपने अव्ययों को प्राप्त होते रहे हैं।

महात्मा कवन्धि की जिज्ञासा

मेरे पुत्रो! देखो, जब इस प्रकार का विचार विनिमय होने लगा तो देखो, महात्मा कवन्धि ने कहा क्या हे माते! यह वाक हमने स्वीकार कर लिया है परन्तु शरीर और आत्मा के विच्छेद का नाम मृत्यु नहीं कहा जाएगा, यह मृत्यु नहीं बनता क्योंकि जिस वस्तु का निर्माण हुआ है उस वस्तु का विच्छेद होना बहुत अनिवार्य

है। मानो दोनों का पृथक पृथक हो जाना, उनका अपना अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ। मेरे प्यारे! देखो, जब महात्मा ने यह वाक कहा तो माता चाक्राणी गार्गी शान्त हो गई और यह कहा कि मेरे विचार में तो ऐसा ही आता है। मेरे आचार्यों ने मुझे इसी प्रकार की दीक्षित बनाया है। मैं आगे इसका विचार विनिमय अवश्य कर पाऊँगी।

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज का निर्णय

मेरे पुत्रो! देखो, इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि उपस्थित हुए और पिप्पलाद मुनि ने कहा कि अवाम् भूतम ब्रह्मा लोकाम् वचुसतम्। वेद का मन्त्र उच्चारण करके बोले ऋषिवर क्या मैं मृत्यु का अभाव स्वीकार करता हूँ, मृत्यु अपने में कोई वस्तु नहीं होती। मेरे पुत्रो! देखो, जब यह वाक आया तो ऋषि मुनि अपने में शान्त हो गये। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा तो देवर्षि नारद मुनि ने इस प्रकार उनका समर्थन किया और महात्मा पारेत्वर ऋषि महाराज ने कहा वाक यथार्थ है क्या मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती। क्योंकि मृत्यु नाम अन्धकार का है और मानो देखो, अन्धकार ही अन्धकार को हम शरीराम् भूतम् ब्रह्मा वह अज्ञान है और अज्ञान का नाम मृत्यु माना गया है इसलिए अज्ञान नहीं होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का जब विचार विनिमय होने लगा तो मुनिवरो! देखो, वह सायँ काल का समय हो गया, सँध्या काल हो गया। सँध्या काल को ऋषि मुनि अपने अपने कक्षों में जा पहुँचे।

महर्षि पिप्पलाद मुनि शकुन्तका संवाद

महर्षि पिप्पलाद मुनि को बहुत समय हो गया था अपने आश्रम को त्यागे हुए। उनका निकटतम आश्रम था महात्मा जमदग्नि के। तो बेटा! वहाँ से उन्होंने गमन किया, रात्रि काल में अपने गृह में पहुँचे। उनकी पत्नी शकुन्तका दृष्टिपात करते ही बड़ी व्याकुल होने लगी।

पिप्पलाद मुनि बोले देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा पुत्रम्मृत्युम् भू समभवप्रहे हे प्रभु! मेरा एक पुत्र था वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

सप्तम् ब्रह्मा, देखो, सात वर्ष का ब्रह्मचारी मेरे से दूरी हो गया है और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले देवी! मैं ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से मेरा आगमन हो रहा है और मैं अपने में निर्णय कर चुका हूँ कि मृत्युम् भावाम् प्रमहे अभावम् ब्रह्मे यह मृत्यु तो अभाव में है यह अभाव है मृत्यु का क्योंकि मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती।

पुत्र कहाँ चला गया

मेरे पुत्रो! तो उन्होंने कहा तो भगवन! मेरा पुत्र कहाँ चला गया और यह मेरा बाल्य, यह मेरा शरीर क्या है? उन्होंने कहा कि हे देवी! पुत्र तो अपने संस्कारों के आधार पर किसी माता के गर्भ में प्रवेश हो गया है आत्मा अपने चित्त के संस्कारों को ले करके। परन्तु रहा यह कि मेरा शरीर क्या है तो हे देवी! यह परमाणुओं का समूह है। परमाणु एकत्रित होते हैं मानो संगठित होते हैं और उसी से तुम्हारे शरीर का निर्माण होता है। मानो देखो, यह परमाणु आते रहते हैं बलवती होता रहता है मानव।

जब देखो, शिशु रूप में है और माता के गर्भस्थल में जरायु रूप में है वही बाल्य जगत में आ करके शिशु रूप बन जाता है और जब शिशु रूप में आगे अग्रणीय बनता है तो परमाणुओं का मिलान होता रहता है और शरीर को स्पर्श करते रहते हैं आहार के द्वारा, व्यवहार के द्वारा तो वही बाल्य मानो देखो, युवा हो जाता है। युवा हो करके वही शरीर का जिसका निर्माण हुआ है वही मानो देखो, वृद्धपन को प्राप्त हो करके इस संसार से चला जाता है। तो देवी यह परमाणुओं का संघात है और परमाणुओं की प्रतिभा कहलाती है।

परमाणुवुवाद कहाँ रहता है

मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा तो पिप्पलाद मुनि की देवी ने कहा हे प्रभु! चलो मैंने यह आपका वाक स्वीकार कर लिया परन्तु मैं जानना चाहती हूँ जब यह मेरा शरीर इस रूप में नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा जब तुम्हारा शरीर इस रूप में नहीं था तो यह परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में मानो तुम्हारे शरीर का निर्माण कर रहे थे, वह निर्माण में प्रवेश हो रहा था। निर्माणवेत्ता निर्माण करता रहता है। मानव के शरीर का जब निर्माण होता है तो निर्माणवेत्ता वह जो चैतन्य देव है जो निर्माण करने वाला है वह निर्माण करता रहता है। माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है परन्तु मेरी भोली माँ उस निर्माणवेत्ता से वंचित रहती है जो परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है और निर्माणवेत्ता है। परन्तु माता अपनम् ब्रह्मे जब उससे वंचित रहती है तो निर्माणवेत्ता, जब निर्माणवेत्ता ने इस मानव शरीर का निर्माण किया तो बेटा! बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो, कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है। बुद्धि भी मानो चतुष प्रकार की कहलाई जाती है जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है। मेरे पुत्रो! देखो, इसी प्रकार हृदय भी दो प्रकार के हैं एक अनुष्ठान और स्थली मानो देखो, जो हृदय मानो जो शरीर के मध्य में है। एक लघु मस्तिष्क में हृदय कहलाता है जो मेरे प्यारे! देखो, योगीजन उन हृदयों का अन्वेषण करते हैं। मुनिवरो! इस प्रकार का कहीं बुद्धि का निर्माण है तो कहीं मानो देखो, चित्त के संस्कारों का निर्माण हो रहा है, कहीं अहङ्कार में इस शरीर को कटिबद्ध किया जा रहा है। तो निर्माण करने वाला कौन वह मेरा प्यारा प्रभु निर्माण कर रहा है और निर्माणवेत्ता ही मानो देखो, अपना निर्माण शाला में अपने को अमृत कर रहा है। मेरे पुत्रो! जब महर्षि पिप्पलाद ने इस प्रकार अपना वर्णन किया अपनी देवी से। देवी ने कहा प्रभु! आपम् ब्रह्मे कृतम्।

उन्होंने कहा नहीं इसका निर्माण करने वाला प्रभु है और निर्माण कहाँ, माता के गर्भस्थल में होता है। माता के गर्भ में एक बिन्दु है और बिन्दु में शिशु है और जब

शिशु जैसे ही प्रवेश होता है बिन्दु में तो मानो सर्वत्र देवता अपने अपने क्रियाकलापों में तत्पर हो जाते हैं। माता के गर्भस्थल में निर्माण में सहयोगी वह मानो देखो, चन्द्रमा उसे अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है और अग्नि तेजोमयी बनाती है, उष्णता देता है और मुनिवरो! देखो, जल, जल उसके पांशे बन जाते हैं, जल ही उसका ओढ़न है, जल ही उसका बिछौना है और वह पांशे बन करके बेटा! माता के गर्भस्थल में निहित रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, अमृतम् ब्रह्मा असुति देवाः और वह पृथ्वी गुरुत्व देने वाली जिससे देखो, पिण्ड का निर्माण होता है। मेरे पुत्रो! मेरा प्रभु कितना महान विज्ञानवेत्ता है। मुनिवरो! देखो, तरलत्व, तेजोमयी और गुरुत्व तीन प्रकार के परमाणु से इस संसार की रचना होती है, संसार यह भव्य भवन उपस्थित हो जाता है। इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में मानव के शरीर का भी इसी प्रकार निर्माण होता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् ब्रह्मानिर्माण करने वाला प्रभु है। तो हे देवी माता के गर्भस्थल में मानो देखो, एक बिन्दु है, बिन्दु में शिशु है और शिशु के होते ही वायु प्राण देता है, अन्तरिक्ष अवकाश देता है यह मानो देखो, तारामण्डल बन करके लघुमस्तिष्कों का, रेणुकेतु मस्तिष्कों का निर्माण करते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वह प्रभु कितना महान देवत्व कहलाता है। तो विचार आता रहता है माता अमृतम् ब्रह्मा देखो, शकुन्तका ने कहा प्रभु अमृतम् ब्रह्मे। तो देव ने कहा, पिप्पलाद ने क्या देवी! मेरे विचार में तो ऐसा आता है कि निर्माणवेत्ता वह प्रभु है माता के गर्भ में निर्माण होता है।

वीर और वीरांगंगना

मेरे पुत्रो! इतने में देवी ने उपस्थित हो करके कहा भगवन जब यह माता का गर्भाशय नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा देवी! यह ही परमाणं ब्रह्मे हे देवी! यह परमाणुवाद मानो देखो, कुछ वीरत्व रूप में था, कुछ मानो देखो, वीरांगना के रूप में विद्यमान था। वीरांगना जब देखो, उन परमाणुओं की रक्षा करती है तो वह वीरांगना कहलाती है यह देवत्व को प्राप्त होती है और

जब मानो मानव, पुरुष अपने में पालन करता है तो यह ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। ब्रह्मवर्चसम् ब्रह्मलोकाम् वाचसुतम् देवत्वाम् ब्रह्मे वर्चसुताः वहवर्चोसी बन करके वह परमात्मा को अपने में धारण कर लेता है मानो देखो, ब्रह्मचारी देवताओं की सभा में मानो देखो, सुशोभनीय हो जाता है।

अरे, देवता कौन है जो ब्रह्म को अपने में चरी की भाँति अपने में रमण कर लेता है, अपने में धारण कर लेता है। वह बेटा! ब्रह्मवर्चोसी कहलाता है और ब्रह्म की चरी को वही तो चरने वाला है। तो विचार आता रहता है बेटा! पिप्पलाद ने कहा देवी! वह मानो देखो, ब्रह्मचारी है ब्रह्मं ब्रहेव्रतम् देवाः ब्रह्मचारी ही मानो एक एक श्वांस को अपना मनका बना करके, ब्रह्म सूत्र में पिरो करके मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। वह तपस्वी कहलाता है तप का अभिप्रायः इन्द्रियों को तपाना है और इन्द्रियों को तपा करके मानव तपस्वी बनता है और वह ब्रह्मवर्चोसी को अपने में और ब्रह्म को अपने में स्वीकार करता हुआ अपने में धारयामि बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना वर्णन किया तो देवी मौन हो गई और उन्होंने कहा देवी! वही तो वीरांगना है इनकी रक्षा करने वाली परमाणुओं की जैसी चाक्राणी गार्गी जब भयँकर वनों में उद्गीत गाती रही। जब वेदमन्त्रों का जटा पाठ में गान गाया जाता है। हमारे यहाँ वेदमन्त्रों में नाना प्रकार की स्वर ध्वनि होती है जैसे जटा पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में देखो, मानव गान गाता रहता है इसी प्रकार जब माता अपने में गान गाती थी तो सिंहराज और सर्पराज चरणों की वन्दना करते रहते थे। तो विचार आता रहता है बेटा! नाना ऋषिवर उनसे नाना प्रश्नों को करते रहे। तो विचार विनिमय क्या वह मेरी पुत्र वीरांगना बन जाती है जो उन परमाणुओं की रक्षा करती है। इसी प्रकार इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला वीरत्व की प्राप्त हो करके, ब्रह्मवर्चोसी बन करके ब्रह्म में अपने को स्वीकार करता है।

सात प्रकार का अन्न

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो माता चाक्राणांब्रहे माता शकुन्तका ने कहा प्रभु! मैंने चाक्राणी के सम्बन्ध में पूर्वकाल मेंभी बहुत कुछ श्रवण किया परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन! जब मानो यह वीर और वीरांगना नहीं होते यह परमाणुवाद कहाँ रहता है भगवन्! उन्होंने कहा हे देवी! यह परमाणुवाद जब वीरांगना और वीरत्व नहीं होते तो यही परमाणुवाद देखो, उस अन्न में विद्यमान होते हैं।

परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया, सृष्टि का प्रारम्भ किया,रचा तो उन्होंने, देव ने सात प्रकार के अन्न की उत्पत्ति की। उस परमपिता परमात्मा ने उस सात प्रकार के अन्न को रचा है।

दो प्रकार का अन्न

मेरे प्यारे! देखो, एक अन्न वह है जो एक ही पौधा उसपे दो प्रकार का एक मानव पान करता है, एक को पशु पान करता है। पशु पान करके बेटा! देखो, दुग्ध देता है और मानव पान करता है तो मानव देखो, ओज और तेज की उत्पत्ति करता है। एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है और गायत्राणी छन्दों का पठन पाठन करती हुई और वह तेजोमयी बनाती है, अपने पुत्रो को तेजोमयी बनाती है मानो देखो, वह अव्रतम् ब्रह्मा वह अन्न कहलाता है। एक ही पौधा है, एक पौधे पर दो प्रकार का अन्न है निचरले अन्न को गो नाम का पशु पान करता है तो बेटा! दुग्ध दे रहा है। वाह रे! प्रभु तू कितना विज्ञानवेत्ता है। एक ही पौधा है उस पर दो प्रकार का अन्न है एक को देखो, गऊ पान कर रही है, पशु पान कर रहा है वह दुग्ध दे रहा है, उससे ऊपर ले भाग को मानव पान कर रहा है तो ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। बेटा! यह सबका साझा अन्न है, अमृता कहलाता है। तो विचार विनिमय यहकि अमृतम् ब्रह्मा तो तोय प्रव्हेः वही तो तेजोमयी कहलाता है इसको धारण करने के पश्चात्। मेरे प्यारे! दो प्रकार का अन्न एक ही पौधा एक पौधे

में से अन्न को ले करके माता अन्न को भोजनालय में तपाती रहती है और कहती रहती है शुद्धम् भूतम् ब्रह्मा अन्नाः हे अन्न! तू पवित्र है तू मेरी बुद्धि और मेरे मन को पवित्र बना जिससे क्योंकि मना उत्पन्नम्ब्रव्हा यह मन की जो उत्पत्ति है यह अन्न के द्वारा होती है। अन्न जितना पवित्र होता है उतना ही मन भी पवित्र होगा और मन जितना पवित्र होगा उतना मानो देखो, यह हमारी प्राण क्रिया स्वच्छता में रमण करेगी। और जितनी प्राण क्रिया स्वच्छता में रहेगी उतने हमारे जीवन का जो नित्य प्रति क्रियाकलाप है वह पवित्र रहेगा। हम वेद के वाङ्गमय में प्रवेश कर सकते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया जब मन्तव्य दिया उन्होंने कहा एक पौधा है और एक पौधा मानो देखो,उस पर दो प्रकार का अन्न है।

तीसरा अन्न हुत

एक अन्न मानो देखो, हुत कहलाता है। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह हुत कर रहा है और कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके बेटा! देखो,अग्नि के मुखारबिन्द में मानो देखो, देव को तृप्त करना चाहता है। हे यजमान! जब तू याग करता है और याग में कहता है प्राणाय स्वाहा मैं अपने प्राण की आहुति दे रहा हूँ। प्राणों में दोष नहीं रहना चाहिए।

अपानाय स्वाहा मैं अपान में पृथ्वी के विज्ञान को जानना चाहता हूँ। अमृतम् देखो, वह व्यानाय स्वाहा मैं वितरण विज्ञान को जानना चाहता हूँ। और वह कहता है समानाय स्वाहा मैं समानाय जो प्राण सम सर्वत्रता में विद्यमान है उस प्राण प्रतिष्ठा को अब मैं अपने में जानना चाहता हूँ। कहता है उदानाय स्वाहा उदान के द्वारा जो चित्त का मण्डल है मैं जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों में निहित हो रहा हूँ मैं इन संस्कारों से विहिन होना चाहता हूँ। मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ। इस प्रकार जिज्ञासु यजमान कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा कह करके देखो,

उदानाय की आहुति प्रदान करता है तो वह हुत कहलाता है। यह भी अन्न है जिससे मानव देखो, हुत करता है, सुगन्ध देता है और देखो, वह प्रदूषणता को समाप्त करता रहता है। परन्तु देखो, वह हुत कर रहा है, हुताम् भूताम ब्रह्मणा लोकाम् अमृतम् ब्रह्मे देवत्वाम् लोकम् वसुतम ब्रह्मामेरे प्यारे! देखो, वह हुत कहलाता है जो देवताओं को प्रसन्न किया जाता है। काला हिरण याग को ले गया बेटा! मुझे एक समय वर्णन करते मुझे एक आख्यायिका स्मरण आती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, एक जिज्ञासु याग कर रहा था। याग को एक समय बेटा! काला हिरण ले गया और काले हिरण ने बेटा! वत्रासुर को प्रदान कर दिया और वत्रासुर ने बेटा! देखो, वृष्टि कर दी और वृष्टि कर दी तो गऊ के बछड़े की बलि का वर्णन आया। तो मेरे प्यारे! देखो, इसमें ऋषि मुनि अपने में विचारने लगे बल देखो, बैल के अमृतम् देखो, गऊ के बछड़े ने पृथ्वी के मानो देखो, चमड़ी को उधेड़ करके अमृतम् देखो, इसमें अन्न की स्थापना की। मेरे पुत्रो! देखो,जब यह यज्ञ चला गया तो देवताओं ने प्रार्थना की और इन्द्र से कहा हे इन्द्र! हमारे यहाँ से देवता अमृतम् दैत्यम् ब्रह्मा वत्रासुर हमारा यज्ञ ले गया है। तो उस समय मानो देखो, इन्द्र के समीप शचि जाती है और शचि ने कहा हे देव! देवता क्या पुकार कर रहे हैं? तुम मानो देखो, देवताओं की वाणी को श्रवण करो। उन्होंने बेटा! देवताओं की वाणी को श्रवण किया। इन्द्र ने कहा बहुत प्रिय मैं इसको निकासने का प्रयास करूँगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने गोतम ब्रहे वह वत्रासुर को अपने प्राण रूपी वज्र को ले करके बटा! देखो, हमारे यहाँ वायु को यहाँ इन्द्र कहा गया है इन्द्र ने वायु रूपी वज्र को ले करके वत्रासुर कहते हैं मेघ मण्डलों, को उन्हें छिन्न भिन्न कर दिया और वृष्टि हो गइ और वृष्टि हो करके ही मानो देखो, गऊ के बछड़ों ने अमृतम् देखो, वह पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके उसमें बीज की स्थापना कर देई। तो मेरे पुत्रो! देखो, हिरण्यम्ब्रह्मा यह हिरण नाम यागांम् भूतम् ब्रहे धुएं का नाम हिरण है जो याग को ले जाता है और याग कहते हैं जो यागाम् जितना भी सुविचार है, शुक्रिया है, स्वाहा है वह सर्वत्र मानो देखो, प्रजा की सु भावना है। तो आज मैं बेटा! इस

सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं केवल मैं अलंकारों की चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। यह मानो देखो, अलंकार हैं मैं अलंकारों में जाना नहीं चाहता हूँ। विचार विनिमय केवल यह कि मुनिवरों! देखो, कि हिरण्यम् ब्रहे यह हुत कहलाता है जो कहता है हुतम् ब्रह्मा देखो, प्राणाय स्वाहा आसुतम ब्रह्मे लोकाम् स्वाहा प्रजापतये स्वाहा कह करके यजमान अपने याग को मानो देवताओं को प्रसन्न करता है। तो उसे मानो देखो, अन्न एक हुत जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, प्रदूषण समाप्त होता है वायु मण्डल जिससे पवित्र बन जाता है।

चौथा अन्न प्रहूत पुरोहित

मेरे प्यारे! चौथा जो अन्न है उसको प्रुहुत कहते हैं। हमारे यहाँ प्रहूत कहते हैं पुरोहितों को! जो पुरोहित मुनिवरो! देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, समाज को ऊँचा बनाता है। बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब पुरोहितों की चर्चा आती है तो पुरोहित कहते हैं जो राष्ट्र और समाज को कल्याण के मार्ग पर ले जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जिस समय अमृतम् देखो, राजम् ब्रहे जब मुनिवरो! अयोध्या में दशरथ का राज तप रहा था तो उस समय मुनिवरो! देखो, महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र दोनों एक समय अपनी स्थली पर विद्यमान थे। मेरे प्यारे! वशिष्ठ ने कहा था हे अमृतम्, हे विश्वामित्र तुम याग करो। तुम मानो देखो, एक धनुर्याग करो। तो देखो, उन्होंने एक धनुर्याग किया दण्डक वनों में। मेरे प्यारे! मुझे वह याग स्मरण आता रहता है। मैं जब उस याग की चर्चा करता रहता हूँ तो मेरा अन्तर्हृदय गद् गद् हो जाता है। उनके यहाँ बेटा! नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे और उनके यहाँ राम ब्रहे जब अध्ययन करते थे तो याग को सफल करने के लिए मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र गमन करते हैं और गमन करते वह जो अयोध्या में पधारे। तो अयोध्या में पधारने के पश्चात राजा ने दृष्टिपात किया कि ऋषि का आगमन हो रहा है। तो बेटा! राजस्थली को त्याग दिया और राजा ने कहा आईये भगवन विराजिये। वह विराजमान हो गये। उन्होंने कहा कहो भगवन आज बिना सूचना के

तुम्हारे आने का कारण क्या है? तो महर्षि विश्वामित्र बोले कि मैं एक याग कर रहा हूँ दण्डक वनों में और मेरे याग को सफल करने के लिए मुझे राजकुमार चाहिए। उन्होंने कहा भगवन अमृतम् यह बाल्य तो किशोर हैं, मैं आपके याग को सफल करूँगा। विश्वामित्र ने कहा नहीं मुझे स्वयँ अपने में सफल करना है। ब्रह्मणे व्रतम मुझे राजकुमारों की आवश्यकता है। मेरे प्यारे! देखो, यह वार्ता, यह सूचना राष्ट्र गृह में पहुँची जहाँ देखो, कौशल्या और सुमित्र और देखो, कैकई अमृतम् मानो देखो, इन्हें यह प्रतीत है यह बारी बारी अपने में न्यायालय में न्याय करते थे। अपने देखो, अयोध्या का एक नियम था त्रेता के काल में जैसे पुरुषों के न्यायालय में पुरुष न्याय करता है इसी प्रकार देवियां का न्याय करने के लिए देवियों का मानो देखो, न्यायालय था। अयोध्या का एक नियम था भगवान मनु के काल से ही देखो, देवियों का न्याय देवियाँ करें और पुरुषों का न्याय पुरुष राजा करे। मेरे प्यारे! राज पुरुष का न्याय होना चाहिए।

जिस प्रकार अपने अपने न्यायालय में से वह देवियों ने देखो, बारी बारी ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और वह विराजमान हो गये और उन्होंने कहा क्या चाहते हैं ऋषि वर? तो उस समय राजा ने कहा कि राजकुमारों को चाहते हैं, वह धनुर्याग कर रहे हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। मेरे प्यारे! माता कौशल्या ने कहा था उस समय हे राजन! यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाले पुत्र यदि एक ऋषि की सेवा नहीं कर सकते और उसके याग को सफल नहीं कर सकते तो हमारा गर्भाश्य दूषित हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, माता कौशल्या ने जब ऐसा कहा तो राजा नम हो गये और नमः होने के पश्चात उन्होंने कहा जाओ राजकुमारों को प्रदान करो। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने चारो राजकुमारों को महर्षि विश्वामित्र के सहित जाओतुम देखो, याग को सफल करो।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र चारों पुत्रो को ले करके उन्होंने धनुर्याग में जिसमें दो सौ ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। उन्होंने बेटा! देखो,अस्त्रो शस्त्रो की विद्या प्रदान

की, वह धनुर्याग कहलाता है। तो वह कौन करता है वह पुरोहित है। तो बेटा! देखो, राज पुरोहित जो होते हैं वह पुरोहित उसे कहते हैं जो पराविद्या को देने वाला हो। पराविद्या को मानो देखो, राष्ट्र और समाज के लिए और जन समाज के लिए मानो देखो, जो क्रियाकलापों में आ सके उसका नाम धनुर्याग कहलाता है। वह मानो देखो, इस प्रकार के धनुर्याग को करने लगे। तो बेटा! आज मैं विशेष नहीं केवल यह क्या मुनिवरो! देखो, वह पुरोहित हैं। यह प्रुहूत भी अन्न कहलाता है।

साझा अन्न

यह चार प्रकार का जो अन्न है ये जो एक पौधे पर दो प्रकार का अन्न है और एक अन्न को मानो देखो, देवताजन जो हुत करने वाले हैं, यजमान करता है और मानो तीसरा चतुर्थ जो अन्न है देखो, प्रुहुत कहलाता है। यह चार प्रकार का अन्न सबका साझा अन्न कहलाता है। जिससे बेटा! मानव का कल्याण होता है।

आत्मा का अन्न

तीन प्रकार का जो अन्न है बेटा! वह आत्मा का अन्न है। वह देखो, मन, कर्म और विचार को ले करके जो मुनिवरो! देखो, मानव याग करता है उसका साकल्य बना करके अन्तरात्मा में जो आहुति देता है बेटा! उससे आत्मा बलवान होता है वह आत्मीय यज्ञ क्या जिसको यौगिकवाद, यौगिकवाद में यौगिक याग कहा जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, ऋषि ने अमृतम् ब्रह्मा वर्णनम् ब्रहे देवाम् ब्राहा महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले देवी! मन, कर्म और विचार इनके द्वारा जो इनका साकल्य बना करके ऋषि मुनि देखो, हृदय रूपी यज्ञशाला में जो यागकरता है इनका साकल्य बना करके वह आत्मा मानो उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

मेरे प्यार! देखो, यह हुतम ब्रह्मा कृतम् यह सात प्रकार का अन्न है जो परमपिता

परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया था। चार प्रकार का अन्न मानो यह देखो, सबका साझा अन्न है और तीन प्रकार का अन्न है जिसमें आत्मा बलवान होता है, आत्मा में बलिष्ठता आती है।

उस आत्मा को जानने वाला ही मुनिवरो! आत्म तत्त्ववेत्ता बनता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया, मैं व्याख्याता नहीं हूँ मैं केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह कि सृष्टि के पिता ने जब संसार की रचना की तो बेटा! सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। एक पौधे पर दो प्रकार का अन्न है एक पशु का अन्न है तो एक मानव का अन्न है, एक प्रहुत अन्न है जिससे देवता प्रसन्न किए जाते हैं। जो अग्नि के मुखारबिन्द में आहुति देने वाला मानो यजमान अपने साकल्य की आहुति देता है जो देवताओं को प्राप्त हो करके वृष्टि वह प्रसन्न हो करके वृष्टि करते हैं और वृष्टि के द्वारा यह पृथ्वी को नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है। इसी प्रकार एक अन्न जो पुरोहित मानो देखो, पुरोहितजन जो राष्ट्र और समाज का कल्याण करने वाले हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, मन, कर्म और विचार यह तीन प्रकार का अन्न है बेटा! जो मन है, कर्म है जो मन से कर्म किया जाता है और विचार है परन्तु देखो, उनका साकल्य बना करके जो हृदयरूपी यज्ञशाला में बेटा! याग करता है वह योगी कहलाता है। वह योगेश्वर बन जाता है तो यह सात प्रकार का अन्न अन्न का अभिप्राय यह है कि जिससे तृप्त होता है उसी का नाम अन्न है। जैसै मानो क्षुधा लग रही है मोटा अन्न ग्रहण करने से बेटा! देखो, भोजनालय में शरीर को तृप्त किया जाता है और मुनिवरो! देखो, वह वाणी के द्वारा जो उपदेश देता है उससे मानव का आन्तरिक जगत पवित्र होता है। मेरे प्यारे! इसी प्रकार आहुति देने वाला कर्म मानो देखो, वायु मण्डल को पवित्र बनाता है और देखो, मन, कर्म वचन, विचार को ले करके जो याग करता है वह यौगिक याग कहलाता है जिससे देखो, बेटा! आत्मा बलिष्ठ होता है और हृदय रूपी यज्ञशाला में वह याग करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें

विशेष चर्चा प्रगट नहीं कर रहा हूँ विचार विनिमय केवल यह कि सृष्टि के पिता ने यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। अव्ययों में निहित रहता है।

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि इतना वाक उच्चारण करके जब मौन होने लगे तो देवी ने कहा, शकुन्तका ने प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ जब यह सात प्रकार को अन्न नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? तो मेरे प्यारे! देखो, देवी के वाक्यों को पान करके ऋषि पिप्पलाद ने कहा हे देवी! देखो, जब यह अन्ननम् ब्रह्मा वर्णास्सुतम मानो देखो, जब अन्नाद वृति देवाः जब यह अन्ननम् अन्न भी नहीं था तो यह परमाणुवाद मानो अपने अपने अव्ययों में निहित रहते हैं। जब यह आत्मा शरीर को त्याग देता है देवी! तो मानो देखो, अग्नि के परमाणु अग्नि में प्रवेश हो जाते हैं, जल, जल में प्रवेश हो जाता है और पृथ्वी गुरुत्व में प्रवेश हो जाती है, पृथ्वी में रत्त हो जाते हैं और प्राण वायु में चला गया और मानो देखो, अवकाश अन्तरिक्ष में चला गया। हे देवी! यह आत्मा अपने संस्कारों को ले करके, मानो चित्त के मण्डल को ले करके यह मानो देखो, वायु मण्डल में प्रवेश हो जाता है। तो देवी मैं जानना यह चाहता रहता हूँ, तुम जो कहती हो कि मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है, तो देवी! मैं जानना चाहता हूँ कि मृत्यु है क्या? क्योंकि न तो परमाणुवाद की मृत्यु होती है, न आत्मा की मृत्यु होती है कर्म बन्धन की डोरी को ले करके जब यह आत्मा गमन करता है, शरीर को त्याग देता है यह सूक्ष्म शरीर में चला जाता है। यह मानो पाँच प्रकार की वायु में भ्रमण करता हुआ यह आत्मा मानो जैसे संस्कार अन्तिम में होते हैं उसी के आधार पर किसी माता के गर्भ में प्रवेश कर गया है। क्योंकि चित्त का मण्डल इसके साथ रहता है और मानम् ब्रह्मे व्रतम् आत्माम् भूतम् ब्रह्मे जब यह आत्मा मानो देखो, चित्त के सूक्ष्म शरीर में प्रवेश और जब सूक्ष्म शरीर से उपराम होता है तो कारण शरीर में चला जाता है। आज मैं बेटा! विशेषता में नहीं जा रहा हूँ केवल विचार विनिमय यह कि अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् मानो देखो, अमृत है, वह आत्मा शाश्वत है। आत्मा किसी काल में विनाश

को प्राप्त नहीं होता, न परमाणुवाद का ही विनाश होता है परन्तु एक सङ्कल्प मात्र वही एक सङ्कल्प विकृत होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, माता शकुन्तका बड़ी प्रसन्न हुई और अपने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने कहा धन्य हे प्रभु! आपने मुझे मृत्यु से पार कर दिया है। प्रभु मानम् ब्रह्मे देवत्वाम् ब्रह्मे।

मृत्यु की मृत्यु

उन्होंने कहा देवी! मृत्यु भी है आगे तुम प्रश्न नहीं कर रही हो। मेरे प्यारे! शकुन्तका ने कहा प्रभु वह कैसे? क्या है देवी! एक समय राजा जनक की सभा में जब अर्द्धभाग विद्यमान थे तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया अर्द्धभाग ने भगवन मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उस समय पिप्पलाद ब्रहे देखो, अर्द्धभाग के वाक्यों को पान करने वाले देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा था क्या हे ऋषि! मत कहो मृत्यु की मृत्यु नहीं होती, मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है क्योंकि ब्रह्म के जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती। तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ आकर के ऋषि अपने में मौन हो गया और उसने कहा देवी! जो ब्रह्म को जानने वाला है उसकी मृत्यु नहीं होती और अज्ञान का नाम मृत्यु है, प्रकाश का नाम जीवन है। मानो देखो,आत्मा को जानने वाला शाश्वत कहलाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया, अपनी वार्ता प्रगट की तो वह ऋषि अपने में मौन हो गया और देवी ने चरणों को स्पर्श किया उन्होंने कहा धन्य, हे प्रभु! आप ने मेरे अज्ञान को दूरी किया है मैं मृत्युम् ब्रह्मा मैं मृत्यु को जान गई हूँ। बेटा! देखो, विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गा करके बेटा! इस सागर से पार होने का प्रयास करें। मानव का कर्तव्य है कि अपने में अपनेपन में ही समाहित हो जाए और अपनी आभा में परणित होता हुआ सागर से पार हो जाए। यह ससांर रूपी सागर है जिसको हमें जानना है। तो यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या मुनिवरो! देखो, यहाँ मृत्यु को जानना चाहिए।

यह मृत्यु क्या है अज्ञान का नाम मृत्यु है, प्रकाश का नाम जीवन है। जब ज्ञानी बन जाता है तो प्रकाश हो जाता है अज्ञान आ जाता है तो अन्धकार आ जाता है। तो यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या महर्षि पिप्पलाद उनकी पत्नी दोनों का संवाद और महात्मा जमदग्नि को यह निर्णय हो गया था क्या वास्तव में मृत्यु का अभाव है सर्वस्व ऋषि जानते हैं। तो मेरे प्यारे! यह अनुपम है इस जगत को जानना और जगत में मानो प्रभु की प्रतिभा में परणित होना यही हमारा वाक है। इस वाक कोले करके जब हम आगे रमण करते हैं तो हमारा जीवन पवित्र बनता है।

यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ में कल प्रगट करूँगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन।ओ३म् देवा आभ्याम् रथा माम् प्रजाम् रथम् आप्याम्।

3. नैतिक शिक्षा प्रकाश का स्रोत-920706

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं। परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके। वह सीमा से रहित हैं और सीमा में आने वाले नहीं हैं। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसका सदैव गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। तो मानव अपने में गान गा रहा है और नाना प्रकार का जो गान गाता है तो उस गान में जो स्वर संगम होता है वह उस परमपिता परमात्मा की महती है और उसकी महानता का वह स्रोत कहा जाता है। तो जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अपने में प्रायः अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है कि वह परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है उस ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में हम सदैव रत्त हो जाएं।

विष्णु की मीमांसा

आओ मुनिवरो! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना, विशेष वार्ता प्रायः प्रगट करने नहीं आया हूँ, केवल तुम्हें परिचय देना चाहता हूँ। आज के हमारे वेद के मन्त्रों में एक मन्त्र आ रहा था विष्णु ब्रह्मणा व्रतम् देवाम् आत्मा। तो मुनिवरो! वह परमपिता

परमात्मा विष्णु है जो संसार का पालक है, नियामक है और जो पालना करने वाला है, प्रकाश में रत्त रहने वाला है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसको आत्माम् भूतम ब्रह्मणां वह जो आत्मा है उस अमृते विष्णु के रूप में सदैव वर्णित रही है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्द आते रहे हैं। जैसे विष्णु शब्द है। विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का वाची है और विष्णु नाम माता का है और विष्णु नाम आत्मा का है और विष्णु नाम सूर्य को कहा जाता है। जब महर्षि यास्काचार्य से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज इतने नामों का पर्यायवाची का क्या अभिप्राय है। तो ऋषि ने उत्तर देते हुए कहा पालनाम पालमव्रत देवत्वाय्! वेद की एक आख्यिका का वर्णन करते हुए कहा क्या जहाँ भी पालना का मूलक आता है, वहीं विष्णु शब्द आता है। क्योंकि विष्णु पालना के मूल में विद्यमान रहता है और जब पालना का रहस्य समाप्त हो जाता है, तो विष्णु की प्रतिभा भी नष्ट हो जाती है। तो विचार आता है कि जहाँ भी पालना करने वाला वह प्रभु है वहीं पालना करने वाली मेरी प्यारी माँ है और जहाँ माता का नाम पालक है वहीं आत्मा का नाम पालक है और जहाँ आत्मा का नाम पालक है वहीं सूर्य का वाची शब्द है। और मुनिवरो! देखो, इसी प्रकार जहाँ भी पालना का प्रसंग है वहीं विष्णु शब्द का प्रतिपादन होता रहा है। तो आओ मुनिवरो! देखो, यहाँ प्राणों का नाम भी विष्णु कहा गया है क्योंकि प्राण चले जाते हैं तो मानव क्रिया शून्य हो जाता है। आत्मा इस शरीर से निकल जाता है तो चेतना से शून्य हो जाता है। तो इसीलिए मानो देखो, इसको आत्मम् ब्रह्मणे विष्णु ब्रहा यह विष्णु शब्द से सम्बोधित किया जाता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का जो पालन करने वाला है। हमारे यहाँ ब्रह्मणां विष्णु वर्णनम् देवत्वाऽम्। मेरे प्यारे! देखो, हे विष्णु! तू कल्याणकारी है, और पालन करने वाला है। मेरे प्यारे! जैसे वृक्ष पे नाना प्रकार के जब फल आ जाते हैं। वह नीचे को

नमन करने लगता है। तो नमन करके ही मानव पालन करता है। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा को कहा गया है ध्रुवाम् विष्णु ब्रह्मणां लोकाम्। क्या वह जो विष्णु है वह ध्रुवा में गमन करने वाला है। ध्रुवाम् भूतम् ब्रह्मा ध्रुवाः वह ध्रुवा में रहता है। जैसे वृक्ष पे मानो फल आने के पश्चात्, उसकी सम्पदा आने के पश्चात वह नीचे को नमन करता है इसी प्रकार देखो, माता का वाची शब्द है। माता जब पालन करती है तो नम्र हो करके और सतोगुण में रमण करती उसका पालन करती है, और लोरियों का पान कराती कहती है, बुद्धयाम्, शुद्धयाम् भवि अवर्णते। इस प्रकार वेदमन्त्रों का उद्गीत गाती हुई वह मानो अपने बाल्य का पालन करते हुए कहती है हे आत्मा! तू बुद्धिमान है, तू शुद्ध है, तू अखण्ड रहने वाली चेतना है, मानो तू अमृत है। इस प्रकार माता जब लोरियों का पान कराती है, तो पालन में उसे रत्त कराती रहती है। परन्तु देखो, जब अनुशासन में प्रवेश करती रहती है तो मानो उसे अनुशासित बना देती है और जब वह पालनम् ब्रव्हा जब वह उत्पत्ति के मूल में रहती है तो वहाँ तमोगुण की प्रवृत्ति में भी मानो देखो, वहाँ एक रहस्यतम है।

तो इसी प्रकार आत्मम् भूतम् ब्रह्मे माता का नाम भी बेटा! देखो, विष्णु कहा गया है। जो पालन करने वाला है उसका नाम विष्णु है। तो वह कल्याणकारी है, कल्याण करने वाला है।

अक्षय क्षीर सागर में विष्णु

मेरे प्यारे! देखो, आत्माम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम् अव्रतम देवाः ऐसा हमारे यहाँ वेद के आचार्यों ने वर्णन करते हुए कहा क्या विष्णु तो अक्षयक्षीर सागर में रहते हैं। और अक्षयक्षीर सागर में मानो नारद अपनी वीणा को ले करके वह ध्वनि करता है और अमृतम् मानो देखो, वह अव्रेतम गन्धर्वः गान गाने लगता है और लक्ष्मी चरणों में ओत प्रोत हो जाती है। वह अक्षयक्षीर सागर में मानो शेषनाग की शैय्या पर विद्यमान

रहता है। मेरे प्यारे! जब महर्षि यास्काचार्य ने इस रहस्य का उद्घाटन किया तो उन्होंने कहा क्या असुतम देवत्वाम् विवेकाम् भूतम् ब्रह्मा मानो जब यह आत्मा विवेक में परणित होता है तो यह आत्मा का नाम विष्णु है, यह अक्षयक्षीर सागर में रहता है। जब यह मानव साधक बनता है, और साधना करने लगता है। तो साधना के मूल में जब प्रवेश करता है तो बेटा! देखो, अक्षयक्षीर सागर में पहुँच जाता है। अक्षयक्षीर सागर नाम कहते हैं जो ज्ञान का मार्ग है, अथवा ज्ञान का सागर है। जहाँ विवेक से कटिबद्ध होने वाला ज्ञान है, उसी में ओत प्रोत हो जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, जब यह आत्माम् भूतम् विष्णु जब यह आत्मा मुनिवरो! देखो, विष्णु बन करके अक्षयक्षीर सागर में रहता है। तो उस समय नारद नाम का जो मन है यह भी अपनी चञ्चल रूपी वीणा को ले करके उनके समीप आ जाता है। हे प्रभु! मैं अपनी चञ्चलता को त्याग रहा हूँ, समिताम् भूतम् मैं आपके समीप आना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! गन्धर्वः नाम बुद्धि का है जो नाना प्रकार के भेदों वाली है। बुद्धि भी मानो अपना गान गाने लगती है और स्वर ध्वनि में गान गाती है कहीं जटा पाठ, घन पाठ, माला पाठ नाना प्रकार के गानों से यह मानो अपने को सुशोभित करती रही है और अपने में अपने को जानने में तत्पर रही है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, यहाँ अमृतम् देवः लक्ष्मी चरणों में ओत प्रोत रहती है। लक्ष्मी नाम मेरे प्यारे! जो संसार का लुभाने वाली है। जो दृष्टिपात आने वाला जगत है इसमें नाना प्रकार का जो चमत्कार है नाना प्रकार से जो संसार को यह मोहने वाली है। यह भी मुनिवरो! देखो, अपने अपने में उसके चरणों में ओत प्रोत हो जाती है और मुनिवरों! शेषनाग की शैय्या पर विष्णु विद्यमान हैं। शेषनाग कहते हैं बेटा! जो पञ्च फणों वाला शेष नाग है। मेरे प्यारे! काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वाला जो यह शेष नाग है इसके ऊपर आत्मा विश्राम करने लगता है और यह अक्षय क्षीर सागर में बेटा! विश्राम को प्राप्त हो जाता है। विचारवेत्ताओं ने कहा है कि उस समय यह आत्मा विवेकाम् भूतम् मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड को अपने को देखो, ब्रह्माण्ड को अपने नीचे दबा करके उसमें ओत प्रोत हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह में यह सर्वत्र

विभाजन क्रिया निहित है। जब यह इसमें ओत प्रोत हो जाता है, तो इसके ऊपर नीचे तो विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, जब यौगिक आत्मा विष्णु बन करके, विवेकी बन करके मेरे प्यारे! काम, क्रोध, मद, लोभ मोह वाले शेष नाग को नीचे दबा कर लेता है तो अमृतम् यह विष्णु बन जाता है। तो यहाँ आत्मा का नाम विष्णु माना गया है। आज मेरे प्यारे! मैं यौगिक प्रतिक्रियाओं में नहीं जाना चाहता हूँ केवल यह कि हमारे यहाँ यह जो आत्मा है इसको जानने की आवश्यकता है, क्योंकि आत्मा इस पञ्चमहाभूतों के लोक में विद्यमान रहती है। मुनिवरो! देखो, यह जो हमारा शरीर है, यह पञ्च महाभूत है और इसी में रहने वाला आत्मा है। जब मुनिवरों! देखो, आत्मा इस शरीर से निकल जाता है, सुत हो जाता है।

राजा जनक और पत्नी रम्भेश्वरी का चिन्तन

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें राजा जनक के यहाँ ले जाना चाहता हूँ जहाँ मुनिवरो! देखो, पति और पत्नी दोनों परस्पर अपनी विचार धारा प्रगट करते रहे हैं। एक समय बेटा! देखो, सायँकाल का समय था। सायँकाल समय में महर्षि यास्काचार्य अमृतम् ब्रह्मे देखो, महात्मा अर्द्धभाग वह भ्रमण करते बेटा! देखो, राजा जनक के गृह में उन्होंने प्रवेश किया। सायँकाल का समय था राजा जनक की पत्नी रम्भेश्वरी अपने मानो अपने कक्ष गृह में विश्राम को प्राप्त होने वाली थी। परन्तु उन्होंने वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया और देखो, जब अर्द्धभाग जी ने वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया तो वह निन्द्रा में तल्लीन हो गये परन्तु ऋषि मुनि अपने स्थान को उन्होंने गमन किया। गमन करने के पश्चात अमृताम् वह तो अमृता को प्राप्त हो गये। परन्तु देखो, वह देवी रम्मेश्वरी मुनिवरो! देखो, जब रात्रि के मध्यकाल में जब निन्द्रा से जागरूक हुई, तो वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आने लगे और वेदमन्त्रों में उच्चारण कर दिया जा रहा था प्रकाशाम् भूतम् ब्रह्मे प्रकाशाम् दिव्याम् देवत्वाम् ब्रहुवसुतेदेवम् अस्सुतम् सूर्याणी गच्छतम् देवत्वाम् चन्द्रो वसुतो देवाः। ऐसा वेद का मन्त्र जब वह उद्गीत रूप में गाने लगी तो अपने में विचारने लगी की वेदमन्त्र यह प्रश्न कर रहा है क्या कौन प्रकाश

का द्युतक है संसार में, कौन प्रकाश के देने वाला है? मेरे प्यारे! देखो, इसी विचार को ले करके अपने में कोई निपटारा नहीं कर सकी। जब निपटारा नहीं हो सका तो देखो, रम्भेश्वरी ने विचारा क्या रात्रि का अन्तिम चरण रह गया है मैं अपने स्वामी के द्वारा चलूं और उनसे यह मानो दोनों परस्पर अपने विचार विनिमय करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, जब अन्तिम रात्रि का चरण रहा तो देवी रम्मेश्वरी ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते राजा जनक के कक्ष में पहुँची। राजा जनक जागरूक हो करके बोले देवी! इस रात्रि के अन्तिम चरण में तुम्हारे आने का अभिप्राय? उन्होंने कहा प्रकाशाम् भूतम् प्रकाशाम् नेत्राणीगच्छतम् प्रव्हा लोकाम्। हे प्रभु! यह वेदमन्त्र मुझे बारम्बार स्मरण आ रहे हैं और वेदमन्त्र यह प्रश्न कर रहा है कि कौन नेत्रों का द्युतक है, कौन नेत्रों को मानो देखो, प्रकाश देने वाला है? मैं उस प्रकाश केलिए ललायित हूँ भगवन्! राजा जनक ने कहा तो आओ, विराजो। तो दोनों परस्पर विचार विनिमय करने लगे। उन्होंने कहीं सूर्य को अपना प्रकाशक स्वीकार किया, कहीं उन्होंने चन्द्रमा को अपना प्रकाशक स्वीकार किया। परन्तु इसी विचारधारा में उन्हें बेटा! देखो, रात्रि समाप्त हो गई और दिवस मानो सूर्य उदय होने लगे। मेरे प्यारे! अपने में दोनों कोई निपटारा नहीं कर सके। उन्होंने कहा देवी अब प्रातः काल हो गया, सूर्य उदय हो गया है। यह विष्णु है, प्रकाशक है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपने अपने आसन को त्याग करके अपनी क्रियाओं से निवृत्त हुई।

राजा जनक के यहाँ अग्नि होत्र

राजा जनक के यहाँ जहाँ ब्रह्मयाग होता रहता था वहाँ मानो देव याग की भी प्रतिभा का वर्णन प्रायः देखो, उनके हृदयों में होता रहता। तो मुनिवरो! देखो, राजा जनक और रम्भेश्वरी अपनी क्रियाओं से प्रातःकाल की निवृत होकर के मुनिवरो! देखो, अपनी यज्ञशाला में पहुँचे, जहाँ प्रातःकालीन नाना ब्रह्मवेत्ता एक पंक्तियों में विद्यमान हैं और वह स्वयं अग्नि को प्रचण्ड करके ब्रह्मवेत्ता देखो, अग्नि होत्र करते। तो मुनिवरो! मुझे स्मरण आता रहता है क्या वह दोनों जब उस यज्ञशाला में पहुँचे

तो सबसे ऊर्ध्वा आसन पर याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यमान हैं और मुनिवरो! देखो, महात्मा अर्द्धभाग हैं, महात्मा दिग्ध, महात्मा अश्वल और भी मुनिवरो! देखो, चाक्राणी गार्गी और स्वेध धन्नतः ऋषि महाराज और भी जैसे महर्षि अश्वेत ऋषि और ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारी सुकेता भी विद्यमान हैं। तो बेटा! देखो, जब वह अपने आसन पर पहुँचे तो वह उन्होंने अपने में सङ्कल्प कर लिया कि हम बिना आज्ञा के आज आचार्य से कोई प्रश्न नहीं करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अग्नि को प्रचण्ड किया अग्नि में साकल्य की आहुति दी और साकल्य दे करके उन्होंने जब अग्निहोत्र उनका समाप्त हुआ।

नेत्रों का प्रकाशक

मेरे प्यारे! देखो, जैसे समाप्त इतने में महात्मा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि यजमान मेरे से कोई प्रश्न कर सकता है। तो उन्होंने, यजमान ने। राजा जनक और उनकी पत्नी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! आज हम प्रातःकालीन एक वेदमन्त्र के ऊपर विचार विनिमय कर रहे थे और वेदमन्त्र कह रहा था प्रकाशाम् भूतम् प्रकाशं देवत्वाम् लोकाः! हे प्रभु! देखो, हम यह जानना चाहते हैं क्या हमारे जो नेत्र हैं वह किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? तो मुनिवरो! देखो, राजा जनक और उनकी पत्नी के प्रश्न करने के पश्चात राजा जनक राजम् ब्रह्मा देवत्वाम् उस समय ऋषि ने कहा राजन हमारे जो नेत्र हैं वह सूर्य के प्रकाश में प्रकाशित होते हैं। मानो प्रातः काल सूर्य उदय हो जाता है और वह उदय भानु जब उदय होता है तो मानो वह प्रकाश देता चला जाता है। नाना प्रकार की वनस्पतियों को तपाता है, अन्नाद को तपाता है और मा अमृते मानो देखो, नेत्र माता अपने पुत्रों को जागरूक कर लेती है और कहती है हे बाल्य! आओ, सूर्य उदय हो गया, प्रकाशक आ गया है। मानो देखो, आचार्यजन ब्रह्मचारियों को जागरूक कर देते हैं हे ब्रह्मचारी! आओ सूर्य उदय हो गया अपने कक्ष को त्यागो।

तो मानो देखो, इस प्रकार यह सूर्य हमारे नेत्रों का प्रकाशक है। यह सूर्य प्रकाश के देने वाला है और यह प्रकाश में ही रत्त रहने वाला है। मेरे प्यारे! जब प्रकाश की वार्ता आई उन्होंने कहा आईए प्रातः काल में उषा और कान्ति किरण दोनों मानो प्रकाश को देती चली जाती हैं प्रकाश को अपने गर्भ में धारण कर लेती हैं उस समय मानो देखो, सूर्य को इन्द्र के नामों से सम्बोधित किया जाता है। यह इन्द्र बन करके ही मुनिवरो! देखो, रात्रि को अपने में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे!देखो, यह सहस्राणी किरणाम् भूतम् यह सहस्रों किरणों को ले करके संसारको प्रकाशमान मानो देखो, पृथ्वी गमन और द्यौ और देखो, अन्तरिक्ष तीनोंमें यह छायामान हो जाता है और नाना प्रकार की वनस्पतियों को यहप्रकाश देता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा हे दिव्याम्, हे राजन यह सूर्यहमारे नेत्रों का देवेवता है, यह देवत्व को प्राप्त कराता है, हमारे जीवन को प्रकाश में ले जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् ब्रह्मा और यही मुनिवरो! देखो, गो नामका जो पशु है इसके रीढ़ के भाग में एक नाड़ी कहलाती है जिस नाड़ीका नाम सूर्यकेतु नाम की नाड़ी है। इसके निचरले भाग में एक मानोदेखो, स्वर्ण के परमाणुओं को ग्रहण करने वाली सूर्य केतु नाम की नाड़ी देखो, उन परमाणुओं को अपने में ग्रहण करती है इसीलिए गो का जोघृत है उसमें पीत वर्ण है मानो देखो, वह अमृतम् उसमें स्वर्ण की मात्रा कहलाती है।

चन्द्रमा का प्रकाश

मुनिवरो! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो वह दोनों रम्भेश्वरी ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ जब यह सूर्य नहीं होता तो उस समय हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? क्योंकि यह जो सूर्य है यह तो प्रकाश देता रहता है परन्तु यह न हो रात्रि छा जाती है प्रकाश में रत्त रहना चाहते हैं, नेत्र तो किसके प्रकाश से प्रकाशमान? उन्होंने कहा हे दिव्या! जब मानो देखो, सूर्य नहीं

होता तो चन्द्रमा के प्रकाश से हम प्रकाशमान होते हैं। यह चन्द्रमा हमारे नेत्रों का द्युतक है। चन्द्रमा का समन्वय देखो, समुद्रों से होता है। समुद्रों से जलों का उत्थान करता है और यह जल ही मानो देखो, वृष्टि के मूल में रहता है, वह मानो देखो, पृथ्वी के अमृत को अमृत की वृष्टि करता है उससे अन्नाद का जन्म होता है। मानो यह चन्द्रमा हमारे अमृत को ग्रहण कराता है।

जब माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है और उस नाड़ी का समन्वय पुरातत नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय मानो माता की लोरियों से होता है। वहाँ से पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है और उसका समन्वय माता की और बाल्य की नाभि का, दोनों का एक समन्वय होकर के उसे अमृत प्रदान करता रहता है। यह चन्द्रमा अमृत के देने वाला है, नाना प्रकार की औषधियों का रस देता है यह सोम कहलाता है। तो ये प्रकाश का द्युतक है मानो देखो, जब सूर्य नहीं होता तो चन्द्रमा हमें प्रकाश देता है।

तारा मण्डलों का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो राजा और उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! हम जानना चाहते हैं जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो प्रकाश का द्युतक कौन है? उन्होंने कहा जब चन्द्रमा नहीं होता तो हमें प्रकाश के देने वाले ये नाना प्रकार के तारा मण्डल हैं। अन्धकार छाया हुआ है, तारामण्डलों का धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है और वह प्रकाश में ही मानो देखो, मानव अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। यही प्रकाश तारा मण्डलों का प्रकाश है जिस प्रकाश में मानव रत्त हो करके अपने को प्रकाशक स्वीकार करता है और अपनी मानो देखो, उस पगडण्डी को ग्रहण करता है जिस मानो देखो, पगडण्डी पे उसे जाना है। तो विचारवेत्ता कहते हैं यही तो तारा मण्डलों का धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है और

उसी के प्रकाश से हमारे नेत्र प्रकाशमान हो जाते हैं। परन्तु देखो, प्रभु ने कैसी माला बनाई है बेटा! एक दूसरे में मानो लोक लोकान्तर एक दूसरे में मण्डल पिरोया हुआ है। यह नाना पृथ्वी बेटा! देखो, सूर्य में पिरोई हुई हैं, सूर्य बृहस्पति में पिरोया हुआ है और बृहस्पति आरूणी मण्डल में पिरोया हुआ है और आरूणी मण्डल ध्रुव में पिरोया हुआ है और ध्रुव मुनिवरो! देखो, स्वाति में पिरोया हुआ है। स्वाति मुनिवरो! देखो,अमृतम् पुष्प नक्षत्र में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार एक दूसरा मण्डल बेटा! एक दूसरे में पिरोया हुआ है। जैसे माता का पुत्र माता में पिरोया हुआ है इसी प्रकार मुनिवरो! यह जगत एक दूसरे में पिरोया हुआ सा हमें प्रायः दृष्टिपात आता रहता है। यह मानो देखो, परमपिता परमात्मा का जो अमूल्य जगत है यह नाना ब्रह्माण्ड वाला एक ब्रह्माण्ड एक दूसरे में पिरोया हुआ है। एक आकाश गंगा दूसरी आकाश गंगा में पिरोई हुई है, एक निहारिका दूसरी निहारिका में पिराई हुई है। वाह, रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। आज जब मैं तेरे ब्रह्माण्ड का बखान करने लगता हूँ, वेदमन्त्रों की विवेचना करने लगता हूँ तो तेरा अनन्तमयी ब्रह्माण्ड हमारे समीप आ जाता है। एक दूसरा ब्रह्माण्ड मानो एक दूसरे में समाहित हो रहा है इतना विशाल यह जगत है जिसके ऊपर बेटा! विचार करके विचारवेत्ता अन्त में नेति कह करके मौन हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे राजन! हम मानो देखो, जब चन्द्रमा नहीं होता तो तारा मण्डलों के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं और तारा मण्डलों का जो प्रकाश है वह बड़ा अनन्तमयी माना गया है।

अग्नि का प्रकाश

परन्तु राजा जनक और उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! ऐसा हो जाए, क्या इस पे मेघों का आवरण छा जाए और अन्धकार हो जाए तो प्रभु! जब यह तारामण्डल नहीं होते तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब यह तारामण्डल भी नहीं होते तो हम मानो देखो, अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह अग्नि

मानो देखो, अन्धकार छाया हुआ है, मेरी प्यारी माता अपने गृह को अग्नि से प्रकाशित कर लेती है। काष्ठो में रहने वाली अग्नि का समन्वय हो जाता है और वह जब प्रकाश हो जाता है तो मानव उसमें कार्यरत हो जाता है, अपने अपने क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! इस अग्नि के सम्बन्ध में आचार्यों ने अपनी बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी हैं। मानो देखो, अग्नि को कहीं गार्हपथ्य नाम की अग्नि को माना है जिसमें ब्रह्मचारी तपता है। एक अग्नि मानो देखो, गृहपथ्य नाम की अग्नि है जिसमें में पति और पत्नी गृह में तपते हैं। एक वैश्वानर नाम की अग्नि होती है जिसमें वानप्रस्थ तपता रहता है। एक अग्नि आवहनीय नाम की अग्नि है जिसमें बेटा! देखो, ब्रह्मज्ञानी तपता रहता है। विचार आता है बेटा! यह अग्नि ब्रह्मवेत्ताओं की अग्नि मानी गई है।

परन्तु जब यही अग्नि आयुर्वेदाचार्यों के गृहों में प्रवेश होती है तो बेटा! देखो, उन्होंने पच्चासी प्रकार की अग्नि का चयन किया है। जब यही अग्नि मुनिवरो! देखो, वैज्ञानिकों के कुल में पहुँची है तो उन्होंने बेटा! अरबों खरबों प्रकार की अग्नि का चयन किया है। तो यह अनन्तमयी जो अग्नि है जो अग्नि एक एक शब्द को अपने ऊपर धारारूप में रमण कराती हुई, वह शब्द को व्यापक बना देती है। मेरे प्यारे! देखो, वह तरंगों को व्यापक बना देती है तो यह अग्नि का व्यवधान है, यह अग्नि की प्रतिभा कहलाती है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, अग्नाम्भूतम् ब्रह्मा अव्रते देवत्वम् ब्रह्म वाचा। मेरे प्यारे! देखो, यह ब्रह्मा अग्नि बन करके हमें प्रकाश देने वाली है और यही अग्नि बेटा! देखो, जो गृह में प्रकाश को प्राप्त हो करके मानव अपने क्रियाकलापों में तत्पर हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, यह अग्नि हमें प्रकाश के देने वाली है। यह प्रकाशक है और यह मानो देखो, अणु और परमाणु में अग्नि प्रदीप्त होने वाली है। यही अग्नि है बेटा! शब्द को द्यौ में पहुँचा देती है और द्यौ का निर्माण करने वाली है, भूतल में रमण करने वाली है। इन तीन ही प्रकार के परमाणुओं को ले करके बेटा! वैज्ञानिक अपने में स्थिर हो जाते हैं।

विचारवेत्ताओं ने जो इस प्रकार वर्णन किया तो बेटा! देखो, राजा जनक और उनकी पत्नी बोली कि प्रभु! हम विस्तार से नहीं जानना चाहते हैं। हम यह और जानना चाहते हैं जब यह अग्नि नहीं होती तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब यह अग्नि नहीं होती तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। अन्धकार छाया हुआ है और एक मानव अपने पथ से मानो कुपथ को रमण कर जाता है। वह भयँकर वन में चला गया है, पथ प्राप्त नहीं हो रहा है, वह कहता है अरे! है कोई मार्ग चेताने वाला। उस समय मुनिवरो! देखो, एक मानव जो मार्ग में स्थिर है, वह कहता है, आ जाओ मैं मार्ग में स्थिर हूँ। तो बेटा! उस शब्द के प्रकाश से अपने मार्ग को प्राप्त करलेता है, अपनी पगडण्डी को प्राप्त कर लेता है वह पथदर्शक बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, इसी वाणी के कारण, शब्द के कारण ही मुनिवरो! पाण्डितव पाण्डितव को प्राप्त होता रहता है। वह एक एक वेदमन्त्र को उद्गीत रूप में गाता है और उसको मुनिवरो! देखो, व्याख्या के रूप में वर्णन करता रहता है। नाना प्रकार के मानो मेरे प्यारे! देखो, पाण्डितव में रमण करता है तो वह शब्द के ही कारण देखो, पाण्डितव कहलाता है। एक राजा अपने राज्यसभा से घोषणा कर रहा है परन्तु शब्द के कारण उसका शब्द मान्य हो जाता है। मानो देखो, वह शब्द का प्रकाश है तो शब्द के प्रकाश से ही मेरे प्यारे! देखो, ध्वनि पर नाना प्रकार की ध्वनियाँ आ रही हैं। जब साधक इस मानो देखो, ध्वनि के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करता है तो अनहाद मेरे प्यारे! देखो, उसमें रमण करता है। मुनिवरो! देखो, जब व्याकरण का विद्वान, व्याकरण वेत्ता जब शब्दों को सजातीय बनाता है और विजातीय शब्दों को निष्कासित कर देता है तो व्याकरण का महान पाण्डितव को प्राप्त हो जाता है। तो बेटा! देखो, शब्द को अपने में सजातीय बनाया जाता है विजातीय को नष्ट किया जाता है। तो इस प्रकार वेद के ऋषि ने कहा क्या देखो, वह जब कुछ नहीं होता तब तुम शब्द के प्रकाश से

प्रकाशमान होते हैं। यह शब्द को बेटा! देखो, ऋषि मुनि रात्रि के काल में जो संघर्षहोता रहता है परमाणुओं का उसे अपने में ग्रहण करते रहते हैं औरजो संघर्ष हमारे यहाँ नाना प्रकार की ध्वनि लघु मस्तिष्क में होती रहतीहै उससे उसका मिलान करते हैं, अनुभव करते हैं तो बेटा! वह महान साधक कहलाते हैं। तो बेटा! देखो, इसप्रकार ऋषि ने संक्षिप्त से अपनापरिचय दिया और यह कहा कि हमारे यहाँ जो प्रकाश आ रहा है वहनेत्राम् भूतम् ब्रह्मा वर्णास्सुतम मानो देखो, वह शब्द का प्रकाश है और शब्द ही हमारा मानो देखो, नेत्रों का भी नेत्र है वह प्रकाश के देने वाला है।

आत्मा का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया तोराजा जनक ने अन्त में कहा कि प्रभु यदि शब्द भी न हो तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा हे राजन! यदि शब्द नहीं होता तो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ऋषि ने कहा आत्माम् भूतम् ब्रह्मा आत्माम् लोकाम् विष्णु। यह आत्मा तो शाश्वत विष्णु है मानो जब तक इस शरीर में विद्यमान रहता है मानव को चेतना बनी रहती है। वह चेतनित कहलाता है, प्रकाशक कहलाता है, विज्ञानवेत्ता कहलाता है, दार्शनिक कहलाता है और वही मानो देखो, मूर्धा कोटि में गणाना में रमण करता रहता है परन्तु वह अमृतम् देखो, यदि आत्मा नहीं होगा तो मानव शून्यवत को प्राप्त हो जाता है। आत्माम् भूतम् ब्रह्मा यह आत्मा ही मानो देखो, पञ्च महाभूतों के लोक में रमण करने वाला है। तो हे राजन! यह आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है। जब तक आत्मा इस शरीर में विद्यमान है जब तक मानव चेतनित बना रहता है, प्रकाश में रत्त होता रहा है। जब यह आत्माम् भूतप प्रव्हा आत्मा जब नहीं रहता तो यह मानव शून्य कोटि को प्राप्त हो जाता है। हे राजन्! तुम आत्मा को, आत्मा को ही शाश्वत मानो, चेतना का मूल स्वीकार करें।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे राजन! जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाता है अरे,! उस समय शब्द अन्तरिक्ष से आ रहा है ध्वनि हो रही है परन्तु आत्मा नहीं है तो देखो, वह ध्वनि से वंचित हो जाता है। अग्नि अपना प्रकाश दे रही है जो काष्ठों में रहने वाली है परन्तु आत्मा नहीं है तो मुनिवरो! देखो, वह अपने में प्रकाशमान नहीं हो रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, आत्मा नहीं है अरे,! यह तारा मण्डल अपना प्रकाशदे रहे हैं मानो पंक्तियाँ बनीं हुई है अरे! मानव क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते। ऋषि कहता है क्या देखो, यह अमृतम् मानो चन्द्रमा अमृत बिखेर रहा है। अरे,! अमृत को बिखेरने वाला अमृत बिखेर रहा है परन्तु आत्मा नहीं है, ग्रहण करने वाला शरीर में नहीं है तो देखो, अमृत को नहीं प्राप्त हो रहा है। मेरे प्यारे! सूर्य प्रकाश दे रहा है। अरे, प्रकाशक नहीं है, वह आत्मा नहीं है तो प्रकाश नहीं प्राप्त हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे राजन! तुम आत्मा के प्रकाश में प्रकाशित रहो। आत्मा का प्रकाश ही मानो देखो, महान प्रकाश है इस प्रकाश के लिए तुम सदैव याचनित रहो और सदैव इसको जानने का प्रयास करो।

मेरे प्यारे! देखो, आत्मा को जानने वाला मानव आत्मवेत्ता कहलाता है, आत्मा को जानने वाला ही विष्णु कहलाता है, आत्मा को जानने वाला ब्रह्म कोटि में माना गया है, आत्मा को जानने वाला ही दार्शनिक कहलाता है और वह विज्ञानवेत्ता बन जाता है। आओ मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे राजन! हमारे जो नेत्र हैंया पञ्च महायाग हो रहा है वह आत्मा के कारण हो रहा है तुम आत्माको जानने का प्रयास करो। आत्माम् भूताम् ब्रह्मणे आत्मा। हे आत्मा!तू महान प्रकाश के देने वाला है। इस प्रकार मुनिवरो! देखो, हमें प्रभुकी याचना करनी चाहिए और आत्मा को जानना चाहिए क्योंकि आत्मा विष्णु है अक्षयक्षीर सागर में रहने वाला है। यह आत्मा के कारण ही सब प्रकाश हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो राजा जनक और रम्भेश्वरी ऋषि के चरणों में ओत प्रोत हो गये और यह कहा कि प्रभु! आप को धन्य है। आप ने हमें अन्धकार से प्रकाश में पहुँचाया है

आपको धन्य है प्रभु! यह उच्चारण करके बेटा! अन्त में मौन हो गये। मेरे प्यारे! आज के इन वाक्यों का अभिप्राय क्या है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानने वाले बने और परमात्मा का जो रचाया हुआ अमूल्य जगत है, इसमें आकर के मानो देखो, हम अपने महान क्रियाकलापों को ऊँचा बनाए जिससे हमारा जीवन पवित्र बने और महान बन करके हम संसार सागर से पार हो जाएँ और हम प्रकाशक बन करके प्रकाश को प्राप्त हो जाएँ चाहे वह वेद से प्राप्त हो, चाहे वह आत्मा से प्राप्त हो परन्तु प्रकाशाम् भूतम् ब्रह्मा।

मेरे प्यारे! देखो, प्रकाश ज्ञानत्वा यह ज्ञान से ही हमें प्राप्त होता है। यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा ये क्या हम मुनिवरो! देखो, उस पालक जो हमारा देव है हम उसकी याचना करें और उसकी महिमा को जानते हुए अपने में ही अपने को समाहित करते चले जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्,अब मुझे समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज कावाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन।ओ३म् देवाऽम् आभ्याम् स्थामाऽम् प्राची मतम् रेवा आपाऽम्, ओ३म् तनुमा हिरण्य आप्याम् देवाः। ओ३म् यश्सचम ब्रह्मणाः वायांऽयाम्।

4. भगवान राम का राजेश्वरी याग-920707

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गयाहोगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ ये पाठ्यक्रम परम्परागतों से ही माना गया है और यह मानवीय मस्तिष्कों में सदैव निहित रहा है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञमयी स्वरूप है याग उसका आयतन है, उसका गृह है और उसका सदन है और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है।

तो हम उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है उसकी महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें। क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला है जो नित्यप्रति मानव के प्रकाश के द्वारा, कहीं शीतलता के द्वारा, नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा जो यह नाना रूपों में याग हमें दृष्टिपात आ रहा है। इस सर्वत्र याग का जो मूल है वह परमपिता परमात्मा कहा जाता है। क्योंकि एक दूसरा एक दूसरे में निहित रहने वाला यह जगत है। तो जब हम यह विचारते हैं कि एक दूसरे में परणित होने वाला यह जगत अपने में अनुपम कहलाता है। तो हम सदैव परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहें।

रथ का स्वरूप

आओ, मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा। केवल आज का हमारा वेदमन्त्रों हमें कुछ उपगीत गा रहा है वेदाम् भूतम चित्रों रथाः क्या मुनिवरो! देखो, एक अलंकारिक वार्ताएँ प्रगट होती रही हैं ऋषि मुनियों की क्या एक रथ है उस पर विद्यमान होने वाले नाना ऋषि मुनि हैं जिसमें एक यजमान है, होता, अध्वर्यु, उद्गाता और पुरोहित और ब्रह्मा मानो वह सर्वत्र उस रथ में विद्यमान हैं और रथ में विद्यमान हो करके वह मानो देखो, रथ को सुचारू रूप से गति दे

रहे हैं। इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है यह एक प्रकार का रथ है और मानो इस संसार को, रथ को गति देने वाले परमात्मा ब्रह्मा है, आत्मा यजमान है और इन पञ्च महाभूतों में मानो कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु है और कोई मानो पुरोहित बन करके याग कर रहा है। तो यह जो रथ चल रहा है यह उसको गति देने वाले हैं और वह उसमें से गति, जो उसमें से तरंगों का जन्म हो रहा है वह तरंगें मुनिवरो! देखो, तरंगित होने वाला वह सुगन्ध है जो प्रदूषण को समाप्त करने वाला है और जो सुगन्ध को मानो देखो, अपने में धारण करता उसको त्याग रहा है। तो यह संसार एक महानता में परणित हो रहा है। तो जहाँ विचारों का समन्वय होता रहा है और मन मस्तिष्क को एकाग्र करके जब साकल्य को हुत करता है तो मानो देखो, उसमें से विचित्र सुगन्धियों का जन्म होता है। जो अशुद्धियों को निगलता है और उसका शुद्धिकरण कर देता है।

नाना प्रकार के याज्ञिक

आओ मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत से ऋषि मुनियों की वार्ताएँ स्मरण आती रहती हैं। मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहा है जिस काल में मुनिवरो! देखो, भगवान राम ने याग किया था। मुझे वह काल भी स्मरण है परन्तु देखो, जिस यागाम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम् यहाँ नाना प्रकार के यागों का प्रायः वर्णन आता रहता है। वैदिक साहित्य में कहीं वृष्टि याग का वर्णन है तो कहीं धनुर्याग का वर्णन है, कहीं वाजपेयी याग का वर्णन है, तो कहीं अग्निष्टोम याग का वर्णन है और कहीं मुनिवरो! देखो, पुत्रोष्टि यागों में वृष्टि यागों का व्यवधान किया गया है। तो नाना प्रकार के याज्ञिक अपने में याग करते रहे हैं। मेरे प्यारे! कहीं राजेश्वरी याग होता है।

याग की भूमिका

मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है भगवान राम के यहाँ बेटा! एक राजेश्वरी याग हुआ था और उस याग में मानो देखो, नाना ऋषि मुनियों का समूह एकत्रित हुआ।

उसकी जो भूमिका बनी है वह ऋषि मुनि बेटा! उसमें एक समय महर्षि वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक, महर्षि श्वेताश्वेतर और भी नाना ऋषिवर बेटा! अपनी स्थलियों पर विद्यमान थे। तो महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज अपने आसन पर थे परन्तु देखो, नाना ऋषि मुनि अपने में विचार विनिमय करने लगे। तो मेरे पुत्रो! देखो, महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज जो वायु गोत्रीय कहलाते थे। तो बेटा! देखो, महर्षि वैशम्पायन अपने आसन पर विद्यमान थे और वह अपने में कुछ वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे और उद्गीत गाते हुए अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् अस्वतम् चित्रो। तो चित्रों की वार्ता का वर्णन आ रहा था। क्योंकि महाराजा अश्वपति के यहाँ वह याग करा करके अपने आश्रम में पधारे और आश्रम में बेटा! देखो, रात्रि के काल में न्यौदामयी मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे। और वेदमन्त्रों यह कहता है रथम् रथम् ब्रह्मा लोकाम् वाचस्सुता। मानो देखो, यजमान यज्ञशाला में विद्यमान है और उसका रथ बन करके बेटा! देखो, वह द्यौ लोक को प्रवेश करता रहता है, द्यौ लोक में गति करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, द्यौ लोक में गति करने वाला और वह द्युऽम ब्रह्मा लोकाम् वह रथी उस्तम। वह जो रथ बनता है वह द्यौ लोक में तरंगों पर अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके बेटा! गमन कर रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि मुनियों के हृदयों में जब यह वाक समाहित हुआ क्या इन चित्रों को दृष्टिपात करना चाहिए। तो बेटा! महर्षि वैशम्पायन अपने में विचार विनिमय करने लगे परन्तु देखो, उन्होंने रात्रि का काल समाप्त हो गया, प्रातःकाल हो गया। प्रातःकाल जब हुआ तो बेटा! अपने आसन को ऋषि नहीं त्याग रहा है।

उन्होंने महर्षि, मानो विभाण्डक मुनि महाराज का स्थान निकटतम था उन्होंने वृतिका ब्रह्मचारी से कहा हे ब्रह्मचारी! दृष्टिपात करो ऋषि अपने आसन को नहीं त्याग रहे हैं। जब वृतिका ब्रह्मचारी उनके द्वार पर पहुँचे तो वह शान्त मुद्रा में कुछ वेदमन्त्रों के ऊपर अन्वेषण कर रहे हैं। उन्होंने कहा प्रभु आप आसन को क्यों नहीं त्याग रहे हैं? उन्होंने कहा वेदमन्त्रों अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् चित्रो रथाः। यजमान के चित्रों को

मैं प्रायः भली भाँति विचार रहा हूँ परन्तु विचारने में नहीं आ रहा है। बेटा! उन्होंने वे ही वाक महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज से उद्गीत रूप में गाई। और महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उनके द्वार पर आये तो विभाण्डक मुनि भी इसी वाक पर विचार विनिमय करने लगे। मेरे प्यारे! देखो, यह विचारने लगे परन्तु अपने में निपटारा नहीं हुआ।

ऋषि मुनियों का याग के लिए निर्णय

जब निपटारा नहीं हुआ तो कहीं से बेटा! ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, महर्षि भारद्वाज, महर्षि श्वेतकेतु नाना ऋषि मुनियों का बेटा! एक समूह कहीं से भ्रमण करता हुआ ऋषि के आश्रम में आ पहुँचा। ऋषि से कहा तुम क्या विचार विनिमय कर रहे हो? उन्होंने कहा प्रभु मैं वेदमन्त्रों कहता है रथम् ब्रह्मा यजनम् ब्रह्मे वाचन्नमम् ब्रह्मा द्यौ लोकाम् व्रते वेदमन्त्रों कहता है कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है तो प्रभु मैं उस द्यौ लोक वाले मानो देखो, मैं रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय! तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्मणो वह भी विचार विनिमय करने लगे। तो इतने में बेटा! विभाण्डक जी ने कहा कि मेरे विचार में यह आता है ऋषिवर क्या भगवान राम के द्वारा चलो और अयोध्या में एक याग का निर्माण होना चाहिए और उसमें यह सब दृष्टिपात होगा।

अयोध्या के लिए गमन

मेरे प्यारे! देखो, सब ऋषि मुनियों ने मध्य दिवस का समय था अपने कर्म को बनाया। तो बेटा! वहाँ से सब ऋषि मुनियों का समूह भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, श्वेतम ऋषि महाराज के आश्रम में रात्रिकाल में विश्राम हुआ परन्तु प्रातःकाल होते ही मुनिवरो! उनका अयोध्या में गमन हुआ।

भगवान राम का उपदेश

मुनिवरो! देखो, अयोध्या में भगवान राम का यह नियम था क्या उनके यहाँ एक यज्ञशाला थी जिसमें देखो, भगवान राम याग करते थे। मेरे पुत्रो! देखो, यज्ञशाला में भिन्न भिन्न देखो, आसनों पर ऋषि मुनि अपनी अपनी कोटि के अनुसार आसनों पर विद्यमान हो गये। जब विद्यमान हो गये तो विचार विनिमय होने लगा। मेरे प्यारे! भगवान राम का उपदेश चल रहा था। उनका याग प्रातःकाल का सम्पन्न हो गया था और उनका विचार विनिमय चल रहा था और वह यह उच्चारण कर रहे थे कि यदि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो राजा के राष्ट्र में प्रजा के मुखारबिन्द से सुगन्धि आनी चाहिए और प्रत्येक गृह में सुगन्ध होनी चाहिए। प्रत्येक गृह में पति और पत्नी याज्ञिक बने और बाल्य बालिका देखो, विद्यालयों में ब्रह्मचारी याग करें। इस प्रकार बेटा! भगवान राम का उपदेश चल रहा था और यह उद्गीत गा रहे थे कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! आओ, हे राजवेत्ताओं! आओ, तुम अपने राष्ट्र में यह प्रसार करो कि हमारे यहाँ याग होना चाहिए। प्रत्येक गृह में याज्ञिक होना चाहिए क्योंकि देखो, याग से राष्ट्र और समाज ऊँचा बनता है महानता को प्राप्त होता रहता है। इस प्रकार राम ने बेटा! देखो, अपना उपदेश प्रारम्भ किया और उपदेश प्रारम्भ करके उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में मानो देखो, सब प्रकार का व्यवधान होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, इतने में ब्रह्मणा अव्रतम् उनके उपदेश मञ्जरी समाप्त हुई।

ऋषि मुनियों का भगवान राम द्वारा स्वागत

समाप्त होते ही मुनिवरो! देखो, अमृतम् ऋषि मुनियों को उन्होंने दृष्टिपात किया वह बेटा! देखो, बारी बारी भगवान राम ने ऋषि मुनियों के चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने कहा असुतम् ब्रह्मा कहो भगवन्! आज बिना सूचना के ऋषि मुनियों का आगमन कैसे हुआ? मुझे भगवन्! सूचित करते मैं अपने पुष्प विमानो में अथवा वाहनों में ले करके देखो, अपने गृह में उनका वास होता, यह हमारा बड़ा अहोभाग्य है। तो भगवान राम जब इस प्रकार उद्गीत गाने लगे तो ऋषि मुनियों ने कहा नहीं कोई वारा व्रते। हे राम! हम भ्रमण करने में बड़े प्रसन्न रहते हैं, अपने विचार

विनिमय करते चले आते हैं। मानो देखो, भगवान राम ने कहा तो भगवन्! कोई कार्य उद्गीत गाईये बिना कारण के तुम्हारे आगमन का कोई अस्तित्व मुझे दृष्टिपात नहीं आता।

महर्षि वैशम्पायन बोले कि प्रभु हम इसलिए मानो देखो, तुम्हारे गृह में प्रवेश हुआ है हमारी यह इच्छा है कि तुम्हारे यहाँ एक याग होना चाहिए। भगवान राम ने कहा प्रभु! यह तो हमारा बड़ा अहोभाग्य है, हम बड़े भाग्यशाली हैं हम आपकी आज्ञाओं का पालन करें। तो उन्होंने बेटा! शिल्पकारों को निमन्त्रित किया और शिल्पकारों से कहा तुम यज्ञशाला का निर्माण करो। उन्होंने लक्ष्मण इत्यादि से कहा भरत से क्या ऋषि मुनियों को, इनको अपने अपने कक्ष में पहुँचाओ। तो बेटा! देखो, ब्रह्मवेत्ताओं के कक्ष, ब्रह्मचारियों के कक्ष राजा के यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के अतिथि शाला में मानो कक्ष विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों को वहाँ उनका वास कराया गया और कराने के पश्चात मुनिवरो! देखो, राम ने शिल्पकारों को आज्ञा दी और उन्होंने भव्य यज्ञशाला का निर्माण किया और नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित हो गया।

याग का प्रारम्भ

मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम ने कहा हे ऋषिवर! आओ, तुम्हारी यज्ञशाला का निर्माण हो गया है और यज्ञ में सब साकल्य मानो उपस्थित है तुम याग प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो, सब ऋषि मुनियों ने अपने आसन को त्याग करके और वह यज्ञशाला में पहुँचे। यज्ञशाला में बेटा! देखो, उचित आसन पर विद्यमान हो गये। ब्रह्मा का स्थान महर्षि वैशम्पायन को ब्रह्मा का आसन नियुक्त किया गया। विभाण्डक मुनि महाराज उस मानो याग में उद्गाता बने और कोई ऋषि मुनि मानो उनमें से उद्गाता बन करके उद्गीत गाने लगा, कोई अध्वर्यु बन करके द्रव्य का स्वामी बन गया। मेरे प्यारे! राम यजमान बने। राम देखो, और सीता दोनों अपने में यजमान

बन गए और यजमान बन करके उनके कथनानुसार ऋषि मुनियों का आगमन होने लगा। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है जब याग का प्रारम्भ हुआ। याग प्रारम्भ होते ही बेटा! वेदमन्त्रों का उद्गीत गाने लगे और वेदमन्त्रों में यह आया चित्रम् रथम् ब्रह्मा देवत्वाम् ब्रह्मे द्यौ लोकाम् देवत्वाम् यजमानाः। यह वेदमन्त्रों कह रहा था राम ने कहा हे ऋषिवर! उद्गीत गाने वालो वेदमन्त्र यह कहता है कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है और मानो देखो, रथ में ब्रह्मा विद्यमान हैं, होताजन हैं आत्माम् भूतम् ब्रह्मा चेतनावत हो करके यह द्यौ लोक को यह रथ जा रहा है। तो प्रभु मैं इस रथ को मानो देखो, साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

महर्षि भारद्वाज का आगमन

मेरे प्यारे! देखो, याग अग्निहोत्र हो गया था और वह याग देखो, वही समाप्त हो गया। राम ने कहा कि मैं रथ को दृष्टिपात करूँगा। तो मेरे प्यारे! कोई ऋषि मुनि ऐसा नहीं था जो उसका साक्षात्कार क्योंकि दर्शनों से घटित होने वाला विचार मानो देखो, घटित हो रहा है परन्तु उसको साक्षात्कार कैसे दृष्टिपात कराया जाए। यह विचार विनिमय हो रहा था इतने में बेटा! देखो, महर्षि भारद्वाज भी वहीं आ पधारे अपने ब्रह्मचारी कवन्धि के द्वारा और ब्रह्मचारिणी शबरी के द्वारा। मेरे प्यारे! देखो, अपने वाहन में विद्यमान हो करके यज्ञशाला में आ पहुँचे। राम से कहा हे राम! तुम्हारा याग कैसे शान्त हो रहा है? उन्होंने कहा प्रभु यह वेदमन्त्रों कह रहा है यजनम् ब्रह्मा यजनम् ब्रहे देवन्तम् ब्रव्हा यजमानम् ब्रव्हे हे यजमान! ब्रहे देखो, यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है और यह द्यौ लोक वाले रथ को मानो मैं साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हे राम! तुम ब्रह्मवेत्ताओं की परीक्षा तो नहीं ले रहे हो? उन्होंने कहा नहीं भगवन्! मेरे में इतनी शक्ति कहाँ है जो मैं ब्रह्मवेत्ताओं की परीक्षा लूँ क्योंकि मैं तो उनके चरणों की धूलिका अवृत करता रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा तो भारद्वाज मुनि ने

ब्रह्मचारी महर्षि पणापेतु और ब्रह्मचारिणी शबरी से कहा जाओ, कजली वन चले जाओ अपने वाहन को और देखो, उसमें से यन्त्रों को लाया जाए। तो बेटा! देखो, वाहन में विद्यमान हो करके वह मुनिवरो! देखो, वह अमृतम् कजली वनों में पहुँचे। वहाँ से नाना यन्त्रों को उन्होंने अवृत किया और यन्त्र को ले करके यज्ञशाला में आ पधारे। शबरी ने कहा भगवन्! यह आपका यन्त्र आ गया है।

चित्रों का द्यौ में गमन करते हुए दर्शन

यन्त्र को उन्होंने बेटा! देखो, स्थिर कर दिया और स्थिर करके उन्होंने कहा राम तुम याग प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! जैसे उन्होंने याग प्रारम्भ किया और याग में उन्होंने कहा प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके जब हुत का प्रारम्भ किया तो मेरे प्यारे! देखो, स्वाहा के साथ में, वाणी के साथ में चित्र और चित्र के साथ में बेटा! देखो, शब्द वह मुनिवरो! देखो, यन्त्रों में विद्यमब्रहे वह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके और मुनिवरो! वह द्यौ लोक को देखो, यज्ञशाला का चित्र बन करके वह द्यौ में रमण करने लगा। और उन्होंने कहा राम यह दृष्टिपात करो चित्रों में इनके चित्र आ रहे हैं, यह दृष्टिपात करो तुम्हारा रथ द्यौ लोक को जा रहा है। एक एक शब्द में मानो देखो, सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है और यज्ञशाला मानो देखो, अग्नि का विज्ञान केवल देखो, शब्दों में निहित रहता है, तरंगों में निहित रहता है। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है याग प्रारम्भ होने लगा परन्तु यन्त्रों में वह चित्रों का चित्रण होता रहा।

भारद्वाज मुनि ने कहा राम मेरे यहाँ ऐसे ऐसे यन्त्र हैं क्या मानो चित्रवलियाँ यन्त्र हैं एक रक्त के बिन्दु में जिस मानव का रक्त का बिन्दु है उस मानव का एक एक रक्त के बिन्दु में उनके चित्र दृष्टिपात आ जाते हैं। उन्होंने कहा मेरी यज्ञशाला में प्रायः इस प्रकार का देखो, विज्ञान और देखो, चित्रवाली विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! ऋषि

बड़े प्रसन्न हुए और वैशम्पायन के हर्ष की कोई सीमा न रही। तो बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है वह याग लगभग मुनिवरो! देखो, छः माह तक याग प्रारम्भ रहा परन्तु छः माह तक वह चित्रों का दर्शन करते रहे नाना प्रकार के चित्र बेटा! चित्रों के रूप में प्रायः दृष्टिपात आ रहे हैं।

अहोभाग्य

मेरे पुत्रो! देखो, एक स्थान उद्गाता का होता है जो उद्गीत गाता है स्वरों से गान गाता है वेदमन्त्रों का। एक अध्वर्यु का स्थान होता है पर्यायवाची शब्दों में वास्तव में देखो, अध्वर्यु मन को कहा गया है, और अध्वर्यु नाम राजा का भी है और अध्वर्यु नाम याग में देखो, जो द्रव्य का स्वामी है जो साकल्य का स्वामी कहलाता है वह यजमान बन करके बेटा! अपनी धाराओं में रत्त हो रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, वह याग सम्पन्न ब्रहे छः माह के पश्चात वह याग सम्पन्न हुआ। परन्तु देखो, जब प्रारम्भ से ही सम्पन्नता को गमन करने लगा तो बेटा! ऋषि मुनि अपनी उपदेश मञ्जरियों में तत्पर उन्होंने कहा राम मानो देखो, तुम्हारा यह अहोभाग्य है जो तुम्हारे यहाँ ऋषि मुनियों का आगमन हो रहा है और ऋषि मुनि देखो, अपने याग को सम्पन्न कर रहे हैं। मुनिवरो! देखो, राम बड़े प्रसन्न हो रहे हैं। राम ने कहा प्रभु यह तो हमारा सौभाग्य है, इस अयोध्या नगरी का सौभाग्य है जहाँ ऋषि मुनि इस प्रकार देखो, यागों में सम्मिलित हो करके अपनी भावनाओं से याग को पवित्र बनाने वाले हैं। तो इस प्रकार बेटा! देखो, राम का याग सम्पन्न हो गया।

याग की दक्षिणा और आशीष

उन्होंने नाना ब्रह्मवेत्ताओं को, ब्राह्मण समाज को उन्होंने गऊ और मुद्राएँ उन्होंने प्रदान कीं और उन्होंने देखो, यजनम् ब्रहे वैशम्पायन ने कहा प्रभु मैं दक्षिणा चाहता हूँ और दक्षिणाम् ब्रह्मे बेटा! देखो, यजमान की जो त्रुटियाँ हैं उन्हें जो दक्षिणा में प्रदान किया जाता है वह प्रायः दक्षिणा कहलाती है। द्रव्य तो उदर की पूर्ति के लिए

दी जाती है परन्तु जहाँ दक्षिणा का प्रसंग आता है वहाँ देखो, उसकी जो त्रुटियाँ हैं वह प्रदान करे वैशाम अग्नम् ब्रह्मा मानो देखो, यजमान में कोई त्रुटि हो किसी से द्वेषारोपण करने वाला हो तृपण हो उन सबको त्याग देना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता है यह त्रुटियाँ कहलाती हैं। आचार्यों ने कहा है कि त्रुटियों का जो समूह है वह मेरे प्यारे! देखो, हृदय है। हृदय में श्रद्धा होनी चाहिए और श्रद्धा में दक्षिणा होनी चाहिए मानव त्यागपूर्वक रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, हृदय दक्षिणा हृदय श्रद्धा, श्रद्धा में दक्षिणा इस प्रकार मानव का मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके अपने जीवन को महान बनाए।

मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा इसलिए प्रगट नहीं करूँगा केवल विचार विनिमय यह कि हे यजमान! तेरी प्रतिभा महानता में यह उच्चारण करके राम को अपना आशीष देकर के सब ऋषि मुनि बेटा! देखो, याग में अप्रतम् वहाँ से गमन करते हैं। राम भी अपने आश्रम को अपनी राज्य सभा को गमन करते हैं।

याग पर ऋषि मुनियों का पूर्ण अध्ययन

विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! हमारे यहाँ यागों का बड़ा वर्णन है। वैदिक साहित्य में एक एक वाक को ले करके उन्होंने अपना अपना मन्तव्य दिया है और याग अपने में बड़ा विचित्रतव क्रियाकलाप है जिस क्रियाकलाप को ले करके मानव अपने में महानता का दर्शन करता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे संक्षिप्त सा ही परिचय देने आया हूँ। आज मैं व्याख्या देने नहीं आया हूँ केवल विचार विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें और यह परमात्मा देखो, यज्ञों में निहित रहने वाला है। यह संसार रूपी जो यज्ञशाला है इस यज्ञशाला में वह परमात्मा निहित रहता है क्योंकि याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास करने वाला है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महती को सदैव विचार विनिमय करते इस

संसार सागर से पार हो जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या हमारे ऋषि मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा बड़ा पूर्ण अध्ययन किया है, विशालता में अध्ययन किया उस अध्ययन की प्रतिक्रियाओं को हमारे यहाँ वेद के वाङ्मय में सदैव वह निहित रहने वाली प्रतिक्रियाएँ हैं, जिसके ऊपर ऋषि मुनि परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से विचार विनिमय करते चले आए हैं। तो मेरे प्यारे! आज का विचार विनिमय क्या क्या आज के विचारों का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते इस संसार सागर से पार हो जाएं और याग जैसे क्रियाकलापों को हम सदैव अपने में निहित करते रहें। हमारे आध्यात्मिक याग और भौतिक यागों का दोनों का प्रायः वर्णन आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, यह भौतिक याग है। आध्यात्मिक याग उसे कहते हैं जो मानो देखो, अपनी इन्द्रियों के विषयों का साकल्य बना करके और उसकी अन्तरात्मा में बेटा! जब वह हुत करता है आत्मा में आत्मा का दर्शन करता है चेतना का उसे भान होता है परमात्मा का दर्शन होता है तो बेटा! वह आध्यात्मिक याग कहलाता है।

याज्ञिक बनने के लिए प्रेरणा

आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए राम अपने में बड़े प्रसन्न हुए। राम का याग तो बेटा! प्रायः मुझे स्मरण आता रहता है। तो आज का वाक अब यह सम्पन्न होने जा रहा है कल समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज मैंने तुम्हें यह संक्षिप्त परिचय दिया, विशेष चर्चा नहीं देने आया केवल यह क्या यजनम् ब्रह्मा यज्ञ ब्रहे क्या प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। विचारों से याग करो, साकल्य के द्वारा याग करो या प्रातःकालीन यह उद्गीत गाओ कि प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा उदानाय स्वाहा इस प्रकार मुनिवरो! देखो, समानाय कह करके हुत प्रारम्भ करना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, यह आज का वाक समाप्त, अब वेदों

का पठन पाठन।

आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानते हुए सागर से पार हो जाएँ और नित्यप्रति अपने क्रियाकलाप में सदैव निहित रहें। तो यह आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् माऽम् प्राचीरथम् दिव्याः आपाऽम्। ओ३म् रथम्माऽम् प्राचीरथम् दिव्याः माः विष्णुरथम् आपाऽम्। ओ३म् मनुमुरेवम् आप्याम् मधु मम वाचन्नमाः। ओ३म् तनु गायनत्वा रथम् माऽम प्राची रथाः।

5. सत्यकाम का तप-920714

परमपिता परमात्मा अनन्तवान

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा विद्यमान हैं। जड़ और चेतना में दोनों में वह निहित रहने वाले हैं। तो वह परमपिता परमात्मा हमारा अनन्तवान है और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव हम विचार विनिमय करते रहें।

विष्णु

तो हमारा वेदमन्त्रों कहता है विष्णु भविग् ब्रह्मा हे विष्णु! तू हमारा कल्याणकारक है और उस विष्णु की हमें सदैव याचना करनी है जो हमारे जीवन का साथी है और मानव के अन्तर्हृदयों में जो प्रेरणा देने वाला है उस महान देव की हम सदैव उपासना करते रहें। आओ मेरे प्यारे। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में नाना प्रकार की चर्चाएँ की हैं। आज मैं उन चर्चाओं में तो तुम्हें नहीं ले जाऊँगा केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है और उसी प्रेरणा को प्राप्त करके अन्ततः प्रेरित होते रहते हैं और अपने जीवन को महान बनाने में सदैव तत्पर रहते हैं जिससे हमारे जीवन की प्रतिभा एक महानता में सदैव निहित होती रहे।

सत्यकाम को वेदमन्त्रों से प्रेरणा

आज का हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा है यमम् ब्रह्मा विश्वस्तम ब्रहे। मेरे प्यारे! देखो, एक समय जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा था हे माता! वेदमन्त्रों का जब मैं अध्ययन करता हूँ तो वेदमन्त्रों कहता है कि ब्रह्म वर्चस्सुतम ब्रह्मा क्या हे अमृतम् अध्याणाम् भूते क्योंकि अध्ययनशील प्राणी अपने में यह विचारता है क्या मैं ब्रह्मवेत्ता बनूँ और ब्रह्मवेत्ता बनने की मेरी बड़ी उत्कृष्ट इच्छा रहती है। तो हे माता! मुझे आज्ञा दो मैं ब्रह्मवेत्ता बनूँ, जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा। जाओ पुत्रो वर्णस्सुते, जाओ तुम ब्रह्मवेत्ता बनो, परन्तु आचार्य के कुल में पहुँचो और आचार्य से ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए सदैव तत्पर हो जाओ। माता ने जब यह आज्ञा दी तो वह जाबाला पुत्र सत्यकाम उपयनन के पश्चात वह अपने आचार्य कुल में जा पहुँचे।

जाबाला सत्यकाम गौतम के द्वार पर

महात्मा गौतम के द्वार पर पहुँचे। गौतम मम् ब्रव्हा देखो, वह अपनी साधना में परणित थे। महात्मा गौतम ने कहा हे जाबाला पुत्र सत्यकाम! तुम्हारा आगमन क्यों हुआ? उन्होंने कहा एक वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए यमम् ब्रह्मा आत्माम् भूतम् ब्रह्मा क्या मैं आत्मा को पवित्र और आत्मा को मानो ब्रह्म में तल्लीन करना चाहता हूँ। मैं स्वयं मानो देखो, ब्रह्मवत बनना चाहता हूँ। जब यह वाक उन्होंने कहा तो ब्रह्मणे व्रहा जब गौतम ने यह वाक श्रवण किया तो गौतम ने कहा आओ विराजो।

महात्मा गौतम का चिन्तन

वह विराजमान हो गये। परन्तु उन्होंने कहा ब्रह्मणा ब्रहे क्या हे ब्रह्मचारी! तुम्हारा गोत्र क्या है? तो जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा कि मम् ब्रहे यह माता जानती है, यह इस गोत्र को मैं नहीं जानता, मेरी माता जानती है। तो वह गौतम ने कहा तू तो ब्राह्मण है क्योंकि ब्राह्मण ही सत्यवादी वाक उच्चारण कर सकता है। तो ब्रह्मवेत्ता बनने की तेरी जिज्ञासा है। जब महात्मा गौतम ने ऐसा कहा तो मुनिवरो! देखो, वह रात्रि का समय था। सायँकाल को अपने अपने कक्ष में जा पहुँचे परन्तु रात्रि

समय जब निद्रा से जागरूक हुए तो महात्मा गौतम ने विचारा कि तुमने ब्रह्म उपाधि प्रदान की है, यह वास्तव में ब्राह्मण है अथवा नहीं। मेरे पुत्रो। जब उन्होंने यह विचार विनिमय करने लगे तो सत्ययाम भूयम् ब्रह्मे वेद का वाक कहता है कि जो सत्य उच्चारण करता है वह ब्रह्म को जानता है, वह ब्रह्म की जिज्ञासा वाला है तो इसीलिए यह अमृतम् ब्रह्मा यह अमृत को प्राप्त होगा। परन्तु तेरा कोई अधिकार नहीं कि अनायास तुमने एक उपाधि प्रदान की है ब्रह्मवेत्ता की। इसी चिन्तन में बेटा! प्रातःकाल हो गया और प्रातःकाल होते ही जाबाला पुत्र सत्यकाम उनके समीप आ गए।

सत्यकाम का गऊओं के साथ गमन

उन्होंने कहा हे पितर! हे आचार्य! मुझे आज्ञा दीजिये मैं आपके चरणों की वन्दना कर रहा हूँ, मैं देवतावत को जानना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हे ब्राह्मण! जाओ तुम, मैंने ब्राह्मण आपको कहा तो जाओ ये चार सौ गऊए हैं इन्हें यहाँ से ले जाओ और जब तक यह सहस्र नहीं हों मेरे आश्रम में नहीं आना। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम, चरणों की वन्दना करता हुआ ब्रह्मचारी सत्यकामम् ब्रह्मे गऊओं को लेकर के बेटा! वहाँ से गमन कर गये हैं और गऊएं जब वागम व्रते उसके पश्चात जब ब्रह्मचारी है वह उसी के दुग्ध का पान करना और उसी के दुग्ध में देखो, याग करते थे।

गऊओं का एक सहस्र हो जाना

जब वह प्रातः कालीन मानो सूर्य उदय हुआ और वह याग प्रारम्भ करते थे। परन्तु देखो, उन्हें इसी प्रकार भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रो! बहुत समय हो गया और गऊओं की सेवा करते चरणों की वन्दना करते। परन्तु जहाँ गो नाम के पशु की सेवा का प्रसंग आया वहाँ यह देखो, हमारी इन्द्रियों का प्रसंग भी आता है क्या इन्द्रियों को भी गो कहा जाता है। तो वह उनको संयम में लाना और पशु नाम के और मानो

देखो, अपने पशु को उज्ज्वलता देना है। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार उन्हें जब बहुत समय हो गया तो एक समय प्रातःकालीन जैसे ब्रह्मचारी ने याग किया तो उनमें से एक वृषभ कहता है। वृषभ ने कहा, बैल ने कहा, गऊ के बछड़े ने कहा हे ब्रह्मचारी! सत्यकाम अब गुरु के आश्रम को ले चलो क्योंकि हम एक सहस्र हो गये हैं। गुरु की आज्ञा थी कि जब तक एक सहस्र गऊ नहीं हो जाए जब तक तुम मेरे आश्रम में नहीं आना। अब हम एक सहस्रहो गये हैं चलो गुरु के आश्रम को।

वृषभ द्वारा चार कलाओं का ज्ञान

मेरे प्यारे! देखो, सत्यकाम बड़े प्रसन्न हुए और सत्यकाम ने जब यह अपने चलने के लिए अपना क्रियाकलाप बनाया तो वृषभ ने कहा कि हे सत्यकाम! मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान करा देता हूँ क्योंकि संसार में सोलह कलाएँ हैं उनमें से चार कलाओं का ज्ञान मैं कराता हूँ। सबसे प्रथम मानो प्राचीदिग और द्वितीय दक्षिणीदिग और तृतीय मानो प्रतीचीदिग् और उदीचीदिक यह चार कलाएँ हैं तुम इनका चिन्तन करना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने उनका निर्णय कराया क्या प्राचीदिग कहते हैं जो पूर्व में रहने वाली अग्नि का स्थान है और देखो, द्वितीय दक्षिणायाम् व्रतम दक्षिणायम् इन्द्र का स्थान है और देखो, प्रतीचीदिग् में देखो, वरुण का स्थान है और मुनिवरो! देखो, उत्तरायण में सोम का स्थान है। इस प्रकार मुनिवरो! देखो, ऋषि ने अपना, उस वृषभ ने ब्रह्मचारी को अपना यह निर्णय दिया क्या मानो यह चार कलाएँ है जो प्राची में रहता अग्नि का स्थान है। एक अग्नि कला है और द्वितीय कला दक्षिण है जहाँ मानो देखो, इन्द्र का स्थान रहता है, यहीं, वहाँ देखो, ब्रह्म का स्थान भी यहीं रहता है, यह पितरजनों का स्थान है। तो इसी प्रकार तुम देखो, अमृतम् और अव्रते वरूण कहते हैं जल को सोमम् ब्रह्मा व्रतम्। बेटा! वह वरूण है जिस वरूण को ले करके हम प्रायः अपने क्रियाकलापों में महान बनने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, वरुणाय ब्रह्मा और मुनिवरो! देखो, सोमाय व्रतम। सोम मुनिवरो! देखो, सोम कहते हैं, जो ज्ञान है, विज्ञान है। मेरे प्यारे!

उन्होंने कहा यह चार कलाओं का ज्ञान तुम्हें मानो देखो, मैंने कराया है और अगला जो ज्ञान तुम्हें कराएँगे वह अग्नि देवता कराएँगे, अग्नि तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान प्रदान करेगा।

मेरे प्यारे! देखो, जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा बहुत प्रिय। मेरे प्यारे! उनका अन्तरात्मा तृप्त होने लगा और ज्ञान और विज्ञान में क्योंकि उनकी बड़ी निष्ठा थी और वह कलाओं में प्रतिष्ठित होने वाले थे।

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया अमृताम् भूतम् ब्रह्मे लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो, पूर्व में अग्नि का स्थान है जो प्रकाश देता है सूर्य उसी से उदय होता है और मुनिवरो! देखो, दक्षिणाय में इन्द्र का स्थान है जहाँ से मुनिवरो! देखो, सोम का जन्म होता है। मुनिवरो! देखो, इन्द्र अपनी शचि को ले करके गमन करता है। इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो, अमृतम् प्रतीचीदिग् में यह अमृताम् भूतम् वरुण का स्थान जहाँ मुनिवरो! देखो, मानव अपने देखो, कृषक अपनी कृषि के लिए अपने में वरूण का स्थान लिए हुए होता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, सोमाम् ब्रह्मे जहाँ ऋषि मुनि अपने में सोम की याचना करते हैं। हमारे यहाँ सोम की विवेचना करने वालो ने कहा क्या सोम नाम ज्ञान का है, सोम नाम साधना का है और सोम नाम मेरे प्यारे! देखो, वह वायु मण्डल को पवित्र बनाने का नाम सोम कहा जाता है। तो इसीलिए मानव को सौम्यता को धारण करना चाहिए। तो इसीलिए सोम मेरे प्यारे! अग्नि है जो प्रकाश को देने वाली है वह सोम कहलाती है। तो हम सोमाम् भूतम् ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, उत्तराणाम् ब्रहे देखो, उत्तरायण ही मानव के जीवन को महान बनाता है।

उत्तरायण की विवेचेचना

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! त्रेता देखो, द्वापर का काल त्रेता का काल। जब मुनिवरो! देखो, भीष्म के जीवन की चर्चाएँ आती हैं क्या मैं अपने जीवन को

उत्तरायण में त्यागूँगा जहाँ जब मुझे प्राचीदिग का स्थान हो जाएगा मानो देखो, उदीची सोमाम् ब्रह्मा उदीची में सोम होता है और वह सोम का स्थान जब तक नहीं होगा जब तक उत्तरायण नहीं होगा। मानो देखो, मेरा जीवन उत्तरायण होना चाहिए। हमारे यहाँ उत्तरायण के सम्बन्ध में भिन्न प्रकार की विवेचना मानी जाती है परन्तु जो वैदिक साहित्य की विवेचना है वेदमन्त्रों के वाङ्मय में जब प्रवेश करते हैं वहाँ कुछ और ही प्राप्त होता है। वह एक अमृतम् देखो, सोम ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, सोम का हमें सोम प्राप्त होता है और वह उत्तरायण से प्राप्त होता है, उदीचीदिक से होता है। मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् भीष्म ने कहा था क्या मैं अपने जीवन को उत्तरायण बनाना चाहता हूँ उसके पश्चात मैं अपने शरीर का अन्त करूँगा। मेरे प्यारे! देखो, उत्तरायण का महारानी द्रोपदी ने एक समय ये कहा कि प्रभु उत्तरायण का क्या अभिप्राय है? उन्होंने कहा उत्तरायण कहते हैं ज्ञान को और जब तक मानव में ज्ञान नहीं हो जाए जब तक उसका जीवन उत्तरायण नहीं बनेगा। क्योंकि देखो, अज्ञान का नाम तो दक्षिणायन है और वह अन्धकार का स्थान है इसीलिए मैं अपने जीवन को सोम बनाना चाहता हूँ, मैं अपने जीवन को उत्तरायण में ले जाना चाहता हूँ। जैसे एक माह में दो पक्ष होते हैं एक मानो कृष्णा पक्ष है तो एक शुक्ल पक्ष। शुक्ल कहते हैं प्रकाश को और कृष्णाय कहते हैं अन्धकार को। मानो मेरा जीवन भी शुक्ल पक्ष की भाँति होना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने कहा कि ब्रह्मणे हे प्रभु! आप तो ब्रह्म की वार्ता कर रहे हैं। जब महारानी द्रोपदी ने यह कहा कि तुम तो ब्रह्म की वार्ता प्रगट कर रहो। उन्होंने कहा देवी मैं ब्रह्मवादी हूँ। उन्होंने कहा उस समय तुम्हारा ब्रह्मज्ञान कहाँ गया था जब मानो देखो, सभा में दुर्योधन मेरे वस्त्रों को मानो मेरे शरीर से दूरी करना चाहते थे और नग्न करना चाहते थे तो उस समय तुम्हारा ब्रह्मज्ञान कहाँ था? तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा देवी मैंने उस समय राष्ट्र के अन्न को ग्रहण किया था और राष्ट्र का जो अन्न होता है।

उसका ब्रह्मज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं होता क्योंकि राष्ट्र का अन्न रजोगुण तमोगुण

से सना हुआ अन्न होता है और वही सने अन्न को ग्रहण करके मेरी बुद्धि भी मोह ममता में भ्रमित हो रही थी।

मेरे प्यारे! देखो, द्रोपदी शान्त हो गई और महाराजा अमृतम् देखो, अपने उत्तरायण की याचना करने लगे और उन्होंने कहा कि हे देवी! संसार में उत्तरायण हो जाना चाहिए जो मानव परमात्मा के समीप जाना चाहता है। मुनिवरो! देखो, उत्तरायण का अभिप्राय यह है क्या हमारे यहाँ सूर्य भी छः माह तक उत्तरायण में होता है और छः माह तक दक्षिणायन में होता है परन्तु देखो, यह एक वर्ष का कृत कहलाया गया। परन्तु यहाँ वेदमन्त्रों कुछ और ही कह रहा है। वेदमन्त्रों कहता है अज्ञानाम् ब्रह्मा व्रतम् देवत्वाम् प्रकाशाम् भू अमृतम् देवाः वेद का वाक कहता है क्या यह जो मानो देखो, शुक्ल पक्ष है यह मानव का जीवन एक प्रकाश का जीवन है और कृष्णा पक्ष का जो जीवन है यह मानो अन्धकार का जीवन है तो मैं मानो देखो,अन्धकार को नहीं चाहता। मेरे प्यारे! देखो, यह दो पक्ष मानव के वेदमन्त्रों कहता है क्या इसमें मानव को अपने जीवन में प्रकाश में जीवन को लाना चाहिए। तो मेरे पुत्रो! विचार आता है क्या देखो, यह तो समय की एक अवृत्ति कही जाती है परन्तु जहाँ तक यह प्रसंग आता है कि उत्तरायण हमारे यहाँ प्रकाश है दक्षिणायण में अन्धकार है और ज्ञान का नाम ही देखो, उत्तरायण कहा जाता है। तो इसीलिए सोम को ग्रहण करने वाला अथवा वही तो मुनिवरो! देखो, सौम्य कहलाता है, वही उदीचीदिक कहलाता है। उदीची उत्तरायणम् ब्रह्मा ऋतम् उदेव्राहा यह उदय अमृतम् यह ज्ञान उदय होता है। ज्ञान मानो कहीं से उदय होता है और गृहण करने वाला मानो देखो, शरीर में आत्मा विद्यमान है, जो इसे गृहण करता है अपने में उग्रता को धारण करता हुआ अपने में अपनेपन को ही विचारता रहता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इसका नाम उत्तरायण कहा जाता है। उत्तरायण में जब मानव अपने शरीर को त्यागता है तो वह देव लोक में प्राप्त होता है। वह उत्तरायण कौन सा है जहाँ देवताओं का लोक है? मेरे प्यारे! उत्तरायण कहते हैं जो ज्ञान में जा

करके शरीर को त्यागता है। जब उसे विवेक हो जाता है और यह संसार उसके लिए निष्क्रिय बन जाता है तो वह उत्तरायण उसका जीवन बन करके वह महानता को प्राप्त होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अमृतम् यह उत्तरायण की विवेचना की और उदीचीदिक सोमो इसी में सोम की प्राप्ति होती है। सोम कहते हैं बेटा! देखो, जो ऋषि मुनि अपने में सोम का पान करते हैं और जो साधकजन हैं वह परमपिता परमात्मा के अनन्य स्वरूप को जान करके उसी के लिए सदैव प्रार्थना करते रहते हैं वह मुनिवरो! देखो, प्रकाश कहा जाता है। इसी प्रकाश को जो धारण करता है वह मानव इस संसार से पार हो जाता है। तो उत्तरायण और दक्षिणायन की चर्चाएँ मेरे प्यारे! देखो, यह चार कलाएँ हैं जहाँ प्राचीदिग अग्नि का प्रसंग आता है वहाँ प्रकाश है और मुनिवरो! देखो, दक्षिणीदिग वरूणो ब्रह्मे जहाँ वरूण का वर्णन है क्या यह वरूण ही हमारा जीवन है हम इसी में रत्त रहना चाहते हैं। तो यह वार्ता बेटा! देखो, अपने में उच्चारण करके अन्त में मौन हो गये और वह दोनों अपने में मौनता को धारण करने लगे।

मेरे प्यारे! देखो, वृषभ ने, उन्हें गऊँ के बछड़े ने चार कलाओं का ज्ञान कराया। उन्होंने कहा यह चार कलाएँ हैं सबसे प्रथम प्राचीदिग जो अग्नि का स्थान है और द्वितीय दक्षिण का स्थान है जहाँ इन्द्र रहता है इन्द्र का वास है और उदीची में रहने वाला मङ्गलम् ब्रह्मे सोमम् ब्राहा बेटा! देखो, वही तो अपने में अभ्यस्त हो रहा है। वही जानना चाहता है कि जिज्ञासाम् भूतम् यह परमात्मा का जो अमूल्य जगत है यह क्या है? तो इसके ऊपर बेटा! मानव अपने में प्रायः अनुसन्धान करता रहा है अथवा विचार विनिमय करता रहा है।

अग्नि देवता द्वारा चार कलाओं का ज्ञान

आओ, मेरे प्यारे! विचार मैं दूरी नहीं ले जा रहा हूँ। सत्यकाम ने, बेटा! देखो, वृषभ, गऊ के बछड़े से यह प्रेरणा ले करके वहाँ से अगले दिवस प्रातः कालीन

देखो, वह स्नान करने के पश्चात उन्होंने एक वाणी उद्गीत रूप में गाई गई वैखरी रूप में क्या मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान कराऊँगा । क्योंकि अग्निहोत्र के द्वारा ही उसे प्रेरणा प्राप्त होती थी। तो बेटा! जैसे अग्निहोत्र किया उन्होंने कहा हे देव! तुम ब्रह्मणे व्रताः मानो देखो, उसी आभा को मैं नहीं जान पा रहा हूँ जिस आभा से आपका समन्वय रहता है। तो मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहा है। क्या वह अमृतम् द्वितीय चार कला जो उन्होंने याग किया याग करने के पश्चात उन्होंने कहा मैं, अग्नि देवता ने हे सत्यकाम! मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान कराता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो उन्होंने मुनिवरो! देखो, चार कलाओं का ज्ञान देना प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा सबसे प्रथम चार कलाओं में देखो, अमृतम् सबसे प्रथम विष्णु कला ध्रुवम् ब्रह्मा व्रत्यम् देवत्वाम् लोकाः ध्रुवा और ऊर्ध्वा और पृथ्वी कला और अन्तरिक्ष कला यह चार कलाएँ हैं। जिन कलाओं को जान करके मानव अपनी आभा को प्राप्त करता है। जिन कलाओं को जान करके ही मानव इस संसार में अपने ज्ञान से नगण्य नहीं रहता, ज्ञान से कटिबद्ध रहने वाला यह मानवीयत्व कहलाता है। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो, ऋषि ने अपना अमृताम् भूतपप्रव्हा अपने लोक की चर्चाएँ कीं और लोकप्रियता की चर्चा करने के पश्चात उन्हें अपना उद्गीत गाया। ब्रह्मणे रासवतम् चार कलाओं का ज्ञान कराते देखो, उन्होंने कहा हे ब्रह्मणे! चार कलाओं में सबसे प्रथम कला का नाम ध्रुवा कला है।

ध्रुवा कला

ध्रुवा कहते हैं जो मुनिवरो! देखो, नम्र हो करके गमन करता है, जो निरभिमानी हो करके गमन करता है वह ध्रुवा में रहता है और ध्रुवाम् विष्णु ब्रह्मणे वही विष्णु है क्योंकि विष्णु ही तो पालन करने वाला है और वह ध्रुवा में रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, ध्रुवाम् विष्णु ब्रह्मणा ये ध्रुवा में विष्णु रहता है विष्णु की याचना करनी चाहिए। तो मेरे पुत्रो! जितना मानव नम्र होगा, जितना मानो निरभिमान होगा, अभिमान की मात्रा नहीं होगी उतना मानव अपने में महानता को प्राप्त करता रहेगा, उज्ज्वलता में

रक्त रहेगा। तो विष्णु ही तो मुनिवरो! पालन करने वाला ही तो नियंता है वही तो ध्रुवा में रहता है जैसे मानो देखो, वृक्ष पर फल आने के पश्चात वह मानो देखो, वह शान्त हो करके और अपने में शब्दावृत्ति हो जाता है। परन्तु इसी प्रकार यह सबसे प्रथम चार कलाओं में से एक कला का नाम मैंने उद्गीत रूप में गाया है और उन्होंने अमृतम् ब्रह्मा देवत्वाम् अभ्यम् ब्रह्मे विष्णु वह विष्णु जो कल्याण कारक है, जो विष्णु हमारे देवताजन भी मानो इसकी उपासना करते रहे हैं। तो मानो देखो, ध्रुवा में विष्णु रहता है क्योंकि ध्रुवा में पालन होता है। जब माता पिता मानो देखो, उनकी सन्तान रूपी फल उत्पन्न हो जाते हैं तो माता पिता दोनों मानो नम्र हो जाते हैं। तो जब नम्र हो जाते हैं तो वह ध्रुवा कहलाता है जैसे वृक्ष पर फल आने से मानो वृक्ष ध्रुवा में गमन करते हैं इसी प्रकार मानव भी ध्रुवा में गमन करता है। ध्रुवाम् भूतम् ध्रुवम् ब्रह्मे हे मानव! तु ध्रुवा के आङ्गन में चल क्योंकि ध्रुवा कहते हैं जो नम्र हो करके गमन करता है। जैसे परमात्मा नम्र है परमात्मा मानो ध्रुवा में, ध्रुवा में रहने वाला है तो इसीलिए गमनन्तम गमनम् ब्राहाः। तो मुनिवरो! देखो, वह अपने में गमनता को प्राप्त नहीं होता।

तो विचार आता है मुनिवरो! देखो, वही तो नियंता है जो निरभिमानी है, ज्ञानी है, जो परमात्मा के सन्निधान से अपने जीवन को व्यतीत कर रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ध्रुवाम् विष्णु, हे विष्णु! देखो, हमारे वैदिक साहित्य में विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। विष्णु नाम बेटा! देखो, राजा का नाम भी है। राजा जब प्रजा का पालन करता है तो राजा को विष्णु कहते हैं। माता का नाम विष्णु है क्योंकि माता ही तो विष्णु रूप में पालन कर रही है और वही तो मानो देखो, अनुशासन में लाने वाली है और वही त्याग प्रवृत्ति में उसे महान बना रही है।

तो माताम् भूतम् ब्रह्म लोकाम् वाचस्सुते। मेरे प्यारे! देखो, वह ध्रुवा में अमृतम् माता भी ध्रुवा में रहती है क्योंकि वह पालना में और विष्णु कहलाती है। विष्णु ध्रुवा में यह ना मानो निरावृत्ति कहलाता है। तो मुनिवरो! देखो, अनुशासन जब बाल्य पर

माता अपना करती है तो वह मुनिवरो! देखो, अनुशासन में अपने स्वाभिमान से ऊर्ध्वा बनाती है। तो विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, ध्रुवाम् ध्रुवम् ब्रह्मा लोकाः वह परमात्मा ध्रुव है वह अखण्ड रहने वाला है परन्तु आत्मा ध्रुवा है यह भी ध्रुव के लिए सदैव शान्त होना चाहिए परन्तु देखो, इस प्रकार ध्रुवाम् ध्रुवम् ब्रह्मा लोकाः। मेरे प्यारे! देखो, ध्रुवा में कौन गमन करता है। वह माता पिता करते हैं। प्रत्येक माता पिता यह चाहते हैं हमारा गृह स्वर्ग बन जाए, हमारे गृह में महानता का साम्राज्य हो जाए। तो बेटा! देखो, यह ध्रुवाम् देखो, ध्रुवा में राजा रहता है वह पालन करता है। ध्रुवा में मानो देखो, माता रहती है जो पालन करने वाली है तो इसी प्रकार ध्रुवाम् ध्रुवम् ब्रह्मा लोकाम्। हे मानव! तू ध्रुवा में गमन कर, तू नम्र हो करके गमन कर देखो, मानो जैसे वृक्ष पर मानो वृक्षाणी देखो, फल आने के पश्चात नीचे को नियन्ता जाता है इसी प्रकार माता पिता भी नम्र बन जाएँ। पितृ भी नम्र बन करके देखो, गमन कर जाएँ। तो मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा कि ध्रुवा में गमन किया जाए। तो जितना मानव ध्रुवा में रहेगा, नम्र रहेगा उतना जीवन उज्ज्वलता को प्राप्त होता रहेगा।

चन्द्र कला

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने द्वितीय कला का उन्होंने वर्णन करते हुए कहा चन्द्रम् ब्रह्मा ये चन्द्र कला है। बेटा! देखो, चन्द्रमा अपनी सोम्यता को ले करके गमन करता रहता है और वही चन्द्रमा मानो देखो, सोम की वृष्टि करने वाला है। माता के गर्भस्थल में वही सोम की वृष्टि करता है, कृषक की भूमि में वही सोम की वृष्टि करता है परन्तु सोमाम् भूतम् सोमाम् देवत्वाम् सोमम् ब्रह्मणा लोकाम् वाचस्सुतम देवत्वाम् लोकाः। मेरे प्यारे! देखो, सोम अपने में सौम्यता को प्राप्त करता रहता है वह चन्द्रमा से प्राप्त होता है। चन्द्रमा हमें अमृत के देने वाला है और वही हमारे जीवन को ऊर्ध्वा में गमन कराने वाला है। मेरे प्यारे! इसका समन्वय समुद्रों से रहता है उसी का समन्वय ध्रुवा से, पृथ्वी से रहता है। तो मेरे प्यारे! यही तो सोम

का कृत कहलाया जाता है तो इसीलिए हमारे यहाँ ऋषि ने कहा क्या यह ध्रुवा चन्द्र कला है जिसको जान करके मानव सोमता को प्राप्त होता है, जिसको जान करके लोक लोकान्तरों की माला को गिनना जानता है। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य कला चन्द्र कला चन्द्रमा ही तो है जो सोम की वृष्टि करता है। कृषक इस पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना करता है परन्तु चन्द्रमा उसे सोम दे करके उज्ज्वल बना देता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, यह चन्द्रम् ब्रह्मा यह चन्द्रमा है जिसका समन्वय समुद्रों से रहता है। जलों से उत्थान होता है जल का उत्थान बेटा! अपने में सिंचन करता है और वही वृष्टि के मूल में प्रारम्भ होता है। तो मेरे पुत्रो! विचार विनिमय क्या कि हम सोम को जानने का प्रयास करें। सोम ब्रह्मा व्रतम् देवाः हे मानव! तू सोम कहलाता है, सोम की याचना कर। तो मेरे पुत्रो! इस प्रकार ऋषि उन्होंने अपना वर्णन किया और वर्णन करते देखो, ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गये।

पृथ्वी कला

मुनिवरो! देखो, उन्होंने तृतीय कला में जब पहुँचे तो तृतीय कला का नाम ध्रुवा ऊर्ध्वा और मुनिवरो! देखो, पृथ्वी कला अपने में पृथ्वी कला कहलाती है जिसके गर्भ में नाना प्रकार के व्यञ्जनों का जन्म होता है जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ हमें प्रदान करती रहती है वह माता देखो, अमृतम् अमृत को प्राप्त कराती रहती है। तो विचार आता है अमृताम् देवत्वाम् देवो ब्राह्मणा वर्णास्सुते देवाम् भूतम् ब्रह्मा। तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ विष्णु की याचना करते हुए यह कहा कि ध्रुवा में चन्द्रमा की उपासना करने वाला चन्द्र अमृतम् अमृत में और मेरे प्यारे! देखो, यह जो पृथ्वी है यह नाना प्रकार के खनिज और खाद्य को प्रदान करने वाली है।

जब वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में जाते हैं तो मुनिवरो! देखो, इसके गर्भ में से नाना प्रकार का खाद्यान्न और खनिज उसको खनिज को जन्म देने वाली है वही तो पृथ्वी

है जो मानो गुरुत्व को लिए हुए सृष्टि का अवधान कर रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, ममत्वाम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम्। वेद का मन्त्रों कहता है क्या वह ध्रुवा में मानो पृथ्वी में गमन करने वाली अमृतता को प्राप्त अपना अस्तित्व नहीं रहता। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह ब्रह्मचारी ने अपना चिन्तन दिया अमृत को प्राप्त किया।

अन्तरिक्ष कला

मेरे प्यारे! देखो, चतुर्थ जो कला है वह अपने में बड़ी विचित्र है जैसे अन्तरिक्ष कला है जहाँ अन्तरिक्ष में बेटा! सब शब्दाय शब्द भी उसी में निहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! अन्तरिक्ष में नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की एक माला बनी हुई है और वह लोक अपने में लोकान्तरों को प्राप्त करा रहे हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! यह जो अन्तरिक्ष कला है इसमें नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की बेटा! माला है। एक समय जालवी ऋषि से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज यह क्या है? तो उन्होंने अन्तरिक्ष को कहा यह अन्तरिक्ष कला है। अन्तरिक्ष, इसमें जब तुम गणना करने लगोगे तो कहोगे यह पृथ्वी मण्डल है और यह सूर्य मण्डल है और यह ध्रुव मण्डल है यह आरूणी मण्डल है और यह नाना देखो, पुष्य नक्षत्रों की गणना होने लगी और गणना करते करते मुनिवरो! इतने सूक्ष्मतम रहस्य में पहुँच जाओगे क्या ये पृथ्वी अपने में प्रथाम् भूतम् बन करके मेरे प्यारे! मानव को प्रकाश में ला देती है। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरो! वह अमृतम् अन्तरिक्षाम् भूतम् कलामभूते व्रताः यह अन्तरिक्ष कला है जिस कला को ले करके मानव अपने में गमन करता रहा है जिस मानो देखो, सोम को ले करके सोम को अपने में धारणा करता रहा है।

विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा। देखो, इन कलाओं के ऊपर विचार विनिमय करें। यह मुनिवरो! देखो, यह ध्रुवा कला है जिस कला को लेकर इसको पृथ्वी

कहते हैं। जब वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में जाते हैं तो कहीं खाद्य तप रहा है कहीं खाद्यान्न कहीं मानो देखो, खनिज तप रहा है। तो वह खनिज कहीं सूर्य की किरणों के साथ तप रहा है कहीं चन्द्रमा की कान्ति के साथ तप रहा है, कहीं मानो देखो, इसी प्रकार वायु का व्यवधान हो रहा है, कहीं अग्नि उसे तपायमान कर रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार मानव सदैव अपनी अपनी आभा में सम्मिलित रहता है, विचारता रहता है, गति करता रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ मैं तुम्हें केवल देखो, इन कलाओं का ज्ञान पूर्ण रूपेण नहीं केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए आया हूँ। और परिचय क्या है क्या मुनिवरो! देखो, इन कलाओं को जानने का प्रयास करें क्या और जान करके ही अपने जीवन को उज्ज्वल बनाए जिससे हमारा जीवन एक महानता की ज्योति को प्राप्त हो जाए। तो बेटा! देखो, यह आज का वाक अब सम्पन्न होने जा रहा है और चार देखो, यह जो आगे की कलाएँ हैं इनका वर्णन मैं किसी द्वितीय काल में प्रगट करूँगा।

आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्र्ायः ये क्या मुनिवरो! देखो, हमारा जीवन उत्तरायण में रहना चाहिए। हमारे जीवन में एक महानता और ज्ञान का प्रकाश रहना चाहिए और परमात्मा की महती और उसके ज्ञान और विज्ञान को अपने में धारण करते रहें। तो यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम अपने में अपनेपेपन में ही समाहित होते रहें और जानते रहें कि हमारा जीवन क्या है। हम मानो देखो, अपने जीवन को उत्तरायण में ले जाएं और दक्षिणायन में न ले जाते हुए हम मानो देखो, अपने को उत्तरायण में, प्रकाश में ले जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल

प्रगट करूँगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यांमना रथम् वाचस्वर्णानम् ब्रह्मा आपाऽम्। ओ३म् दिव्याम् भूययश्चम् प्रथमाम् रीवा घ्राणानत्वाः।

6. जीवन और मृत्यु-920715

परमपिता परमात्मा विभु है

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान जाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आता रहता है। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी विज्ञान है और अनन्तमयी ज्ञान है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता चला आया है। कहीं उसके ज्ञान के ऊपर अन्वेषण हो रहा है और कहीं विज्ञान के ऊपर हो रहा है। कहीं अणु और परमाणु के ऊपर अन्वेषण हो रहा है और कहीं विभु के ऊपर विचारा जा रहा है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा विभु है और आत्मा को अणु के रूप में वर्णित किया गया है। परन्तु कहीं कहीं विचारवेत्ताओं ने यह कहा कि आत्मा अणु के रूप में तो है परन्तु विभु के रूप में भी मानो कहीं कहीं यह दृष्टिपात आती रही है। परन्तु वैदिक मन्त्रों यह कहता है वसम् ब्रह्मा विभु वर्णास्सुतम् वेद का मन्त्रों यह कहता है कि परमपिता परमात्मा एक विभु है और यह जो आत्मतत्त्व है अणु के रूप में वर्णित माना गया है परन्तु आचार्यों की भिन्न भिन्न प्रकार की धारणा रही हैं। परन्तु उन धारणा के मूल में तो नहीं जाऊँगा केवल विचार विनिमय यह कि मानव अपने ऊपर अन्वेषण करता रहा है और विभु और अणु के सम्बन्ध को उन्होंने अवर्चनीय विषय को उद्गीत गाते हुए अपने में मौन हो गये हैं।

अणु और विभु

एक समय महर्षि जालवी जी से गाड़ीवान रेवक ने यह कहा था कि महाराज यह आत्मा अणु है या विभु है? तो उन्होंने बेटा! विवेचना करते करते अन्त में मौन हो गये थे और जालवी ऋषि ने कहा कि यह अवर्चनीय विषय है और अवर्चनीय जिसका वर्णन नहीं किया जाता क्योंकि वाणी का विषय यह मानो देखो, अन्तिम विषय नहीं कहलाता। जो वाणी से मानो देखो, इसके ऊपर वाणी अपना नियमन कर रही है जो वाणी का भी वाणी है उसका नाम परमपिता परमात्मा है तो उसका वर्णन नहीं किया जाता। मेरे पुत्रो! देखो, यह उच्चारण करके महर्षि जालवी जी अपने में मौन हो गये। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा कि महाराज आप मौन हो गये हैं? उन्होंने कहा मैं मौन हो गया हूँ क्योंकि परमात्मा का जगत अनन्तमयी है। जब मानव विज्ञान के ऊपर अपनी उड़ानें उड़ने लगता है तो वह नाना देखो, सौर मण्डलों में चला जाता है और सौर मण्डलों को आकाश गंगा में ले जाता है और आकाश गंगाओं को निहारिका में ले जाता है और निहारिका को अवन्तिका में ले जा करके वह मौन हो जाता है। ब्रह्माण्ड की रचना का भी अवर्चनीय विषय बन जाता है। मेरे प्यारे! जब मानव देखो, इसकी गणना करता है कि रचनाकार रचना के ऊपर विचार विनिमय देता देता मानो श्रद्धा के ऊपर चला जाता है और श्रद्धा में जाने के पश्चात वह हृदय पे आ जाता है और जहाँ हृदय का समावेश होता है वहाँ शान्त हो जाता है परन्तु वहाँ ऋषि यह कहते हैं कि अति प्रश्न करने पर ही मानव की मृत्यु हो जाती है। तो यहाँ मुनिवरो! देखो, यहाँ भी आ करके ऋषि अपने में मौन हो जाता है।

महर्षि जमदग्नि आश्रम में मृत्यु पर चिन्तन

परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नहीं केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वेद का मन्त्रों यह क्या कह रहा है। वेद का मन्त्रों कहता है यमम् ब्रह्मा लोकाम्

वसुतम् ब्रह्मे प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही मृत्यु के सम्बन्ध में चिन्तन करता रहा है और यह विचारता रहा है कि यह मृत्यु क्या है जिसके ऊपर मानव व्याकुल हो रहा है। प्रत्येक मानव देखो, व्याकुलता में निहित हो रहा है कोई कहता है मृत्युञ्जयम् ब्रह्मा वणास्सुतम् देवत्वाम् परन्तु जब यही विचार दार्शनिकों में जाता है तो दार्शनिक अपना प्रसंग ले करके कहता है कि यह मृत्यु क्या है जिसके ऊपर माता व्याकुल हो रही है। मानो देखो, पितृ भी व्याकुल हो रहे हैं, जितना भी सम्बन्धी कुटम्ब है वह सब व्याकुल हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, इस प्रकार का विचार विनिमय होता हुआ परन्तु अन्त में मृत्युम् ब्रह्मा लोकाम्। आओ बेटा! देखो, मैंने यह वाक कई कालों में प्रगट किया है। इन वाक्यों की मैं पुनरुक्तियाँ करता रहता हूँ कि मृत्यु क्या है। बेटा! मुझे वह सभा और ऋषि मुनियों का विचार स्मरण आ रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण है जब महात्मा जगदग्नि ने अपने यहाँ एक सभा का आयोजन किया था और उस सभा में नाना ऋषि, ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्म जिज्ञासु और ब्रह्मवर्चोसी मानो यह सर्वत्र विद्यमान थे। जिसमें मेरे प्यारे! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक और महर्षि दालभ्य और गाड़ीवान रेवक और महर्षि वैशम्पायन और मुनिवरो! देखो, देवम् ब्रीही और जालवी और महर्षि पिप्पलाद यह सब ब्रह्म कोटि के महापुरुष थे। परन्तु देखो, इसमें महर्षि देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता और महर्षि पणपेतु ऋषि महाराज, चाक्राणी गार्गी, सोमवृतिका यह सब मानो देखो, ब्रह्म की जिज्ञासा वाले थे और ब्रह्मवर्चोसी में मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी ब्रहे ब्रह्मचारी लिलित और भी नाना ऋषि और इसमें देखो, पारेत्वर ऋषि सम्भूति अमृताः और देवी कृतकेतु मेरे प्यारे! यह सब मानो देखो, वह ब्रह्म को तो जान गये थे कि ब्रह्म है परन्तु इसी दृष्टि को उनसे वह सभा में पहुँचे कि हम ब्रह्म का निर्णय और चाहते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, यह तीन कोटि के ऋषि मुनि महर्षि जमदग्नि आश्रम में एकत्रित हुए। जब एकत्रित हुए तो मुनिवरो! देखो, महर्षि जमदग्नि ने एक वाक उच्चारण किया और ऋषि ने एक वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए कहा अमृताम् मृत्यु

भविताम् ब्रव्हे वर्णास्सुतम् ब्रह्मा। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने यह कहा क्या हे ऋषि मुनियों! मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित किया है क्या तुम्हें भयँकर वनों में तुम तप कर रहे हो तुम्हारा बड़ा अनुभव है और तुमने तपस्या आत्मा और परमात्मा को निकटतम से दृष्टिपात किया। तुम चार प्रकार की बुद्धियों वाले हो जैसे बुद्धि, मेघा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा क्योंकि देखो, बुद्धि से तुम जानते रहते हो और मेघा से उसका अनुभव करते हो और ऋतम्भरा में मौन हो जाते हो अनुभव करके और प्रज्ञा में तुम देखो, परमात्मा का साक्षात्कार दर्शन करते हो।

मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा सुनीता बुद्धि को कहा जाता है जब तुम्हें सुमति हो जाती है तो यह ब्रह्माण्ड तुम्हारे लिए खिलवाड़ हो जाता है। परन्तु हम यह जानना चाहते है वेदमन्त्रों यह कहता है यमम् मृतम् ब्रह्मा लोकाम्।

हमारा जो प्रसंग है वेदमन्त्रों में जहाँ प्रसंग आता है वहीं प्रश्न और उत्तर दोनों हैं। प्रश्न कर रहा है वेदमन्त्रों की मृत्यु क्या है? मैं मृत्यु को जानने के लिए उपस्थित हूँ क्योंकि यह संसार व्याकुल है। जब मानव का अपने द्वार से विच्छेद होता है तो उसे कहते हैं यह शरीर मृतक हो गया है माता व्याकुल होने लगती है, पत्नी व्याकुल हो जाती है जितना ऋणबन्धी संसार है यह मानो देखो, व्याकुलता में अपने प्राणों की अवृत्ति कर लेता है। तो मैं जानना चाहता हूँ कि मृत्यु क्या है? मृत्यु के सम्बन्ध में मानो देखो, तपस्वी अपना निर्णय दे सकते हैं और मैं यह जानना चाहता हूँ कि मृत्यु क्या है? मेरे पुत्रो! देखो, इस वाक को ले करके महात्मा जगदग्नि यह प्रश्न करके अपने में मौन हो गये। मौन हो जाने के पश्चात ऋषि मुनि बेटा! एक दूसरे में मानो मौनता को प्राप्त हो गये।

विचारवेत्ताओं ने अपना वाक प्रगट किया सम्भूति ब्रह्मणा वृत्यम् देवाः यह वेदमन्त्रों बेटा! देवर्षि नारद मुनि ने उच्चारण किया परन्तु देखो, उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुम इसका उत्तर दो।

चाक्राणी गार्गी का विचार

चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और गार्गी ने कहा क्या कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं ऋषि के प्रश्नों का कोई उत्तर दे सकूँ? उन्होंने कहा अवश्य दीजिए। उन्होंने कहा हे ऋषि! अमृतम् मेरे विचार में तो यह आता है कि शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु है। शरीर का त्यागना, आत्मा और शरीर का दोनों का पृथक पृथक हो जाना ही मृत्यु है।

ब्रह्मचारी कवन्धि की जिज्ञासा

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा क्या हे प्रभु! एक समय कात्यायन के गृह में मैं और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब रात्रि समय हमने विश्राम किया तो कात्यायन की गृहणी ने यह प्रश्न किया कि मृत्यु क्या है? तो उन्होंने शरीर का और आत्मा का पृथक होना मानो यह उत्तर दिया। कात्यायन की देवी ने यह कहा कि देखो, यदि शरीर और आत्मा का दोनों का पृथक पृथक हो जाना है तो यह जो पृथक हो गये हैं मृत्यु नहीं बनती इससे। उन्होंने कहा जब मृत्यु नहीं बनती तो हम मौन हो गये। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव भी मौन हो गये थे। परन्तु अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् तो विचार आता है कि शरीर को त्यागना मृत्यु नहीं है।

विचारने से प्रतीत हुआ कि आत्मा का विनाश नहीं होता जब आत्मा का विनाश नहीं होता, अव्ययों का भी विनाश नहीं होता तो यह मृत्यु शब्द नहीं बनेगा। तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी तो अपनी स्थली पर मौन हो गई।

महर्षि पिप्पलाद का मृत्यु पर निर्णय

इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए और पिप्पलाद जी ने कहा कि वेदमन्त्रों कहता है अमृताम् भूतम् ब्रह्मणो जानाम् भवो सम्भवप्रव्हे असुतम् देवाः अमृतम् ब्रह्मे कृतो। हे अमृतो! हे ब्रह्मवेत्ताओं! मेरे विचार में यह आता है कि मृत्यु

का अभाव है संसार में अभावाम् अभावाम् भूतम् ब्रह्मा इसका अभाव है। ब्रह्म के ज्ञान में इसका अभाव हो जाता है मृत्यु का। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह कहा कि मृत्यु का अभाव, ब्रह्म के अभाव में मृत्यु का अपना कोई अस्तित्व नहीं रहता तो इससे यह प्रतीत हुआ कि ब्रह्मज्ञान का नाम जीवन है और ब्रह्मज्ञान न होना ही मानो देखो, अन्धकार और रात्रि कहा जाता है। ऋषि ने अपना निर्णय दे दिया परन्तु नाना प्रकार के प्रश्न आने लगे। उन्होंने कहा यह व्याकुलता क्यों है? उन्होंने कहा ज्ञानाम् भूतम् ब्रह्मा स्वारताम् इदं सुतम् देवाः उन्होंने कहा यह जो व्याकुलता है यह देह से विच्छेद होने का नाम ही मानो देखो, अपार कष्टों में मानव चला जाता है। कोई वस्तु का मिलन होता है और मिलन होने के पश्चात उसका विच्छेद हो गया, उसका रूपान्तर हो गया है उस रूपान्तर का देखो, रूपान्तर के साथ में, स्थूल के साथ में ही मानो देखो, नाना प्रकार का संसार का क्रियाकलाप लगा हुआ है, ममता का एक क्रियाकलाप लगा हुआ है तो देखो, काम क्रोध, लोभ, मोह की एक मानो कृतियाँ लगी हुई हैं। यह मुनिवरो! देखो, ऋषि पिप्पलाद ने यह उत्तर दिया। उत्तर दे करके ऋषि अपने में मौन हो गये और सन्ध्या का काल हो गया। सन्ध्या का काल होते ही मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है क्या सभा मुनिवरो! देखो, अपने अपने कक्ष में जा पहुँची सन्ध्या का काल हो गया। महर्षि पिप्पलाद शकुन्तका संवाद पिप्पलाद मुनि का आश्रम बहुत ही निकटतम था और वह पिप्पलाद मुनि बेटा! देखो, आश्रम में प्रवेश किया उन्होंने क्योंकि उन्होंने इस आसन को त्याग करके निकटतम आश्रम में पहुँचे उनकी पत्नी का नाम शकुन्तका का था और शकुन्तका दृष्टिपात करके ऋषि को बड़ी व्याकुल हो गई क्योंकि बहुत समय के पश्चात गृह में उनका पदार्पण हुआ। ऋषि ने देवी से कहा देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा कि हे प्रभु! मेरा सात वर्षीय पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। पिप्पलाद मुनि ने कहा देवी! तुम्हें यह प्रतीत है क्या मैं तो मृत्यु का खण्डन करता रहता हूँ, मृत्यु तो अभाव में है मानो उसका कोई भाव नहीं है अभावाम् भूतम् ब्रह्मे देखो, मृत्यु को अभाव है जिसका अभाव हो जाता है उसका अपना कोई

अस्तित्व नहीं रहता।

शरीर क्या है उन्होंने कहा प्रभु यह मैंने स्वीकार किया परन्तु आप ब्रह्म की दृष्टि से निर्णय देते हैं परन्तु यह जो मेरा शरीर है यह क्या है? तो पिप्पलाद जी कहते हैं कि देवी यह परमाणुओं का संघात है। माता के गर्भस्थल में मानो एक बिन्दु है और बिन्दु में शिशु है और शिशु मानो देखो, जब माता के गर्भ में जब प्रवेश हो जाता है तो वही शिशु और देखो, परमाणु उसे वह अङ्ग संग हो करके मानो वह परमाणुओं का संघात बना और आगे मुनिवरो! देखो, देवत्व आ गया। चन्द्रमा प्रकाश देखो, चन्द्रमा अमृत देने लगा, सूर्य प्रकाश के परमाणु देने लगा और मुनिवरो! देखो, वायु ने प्राण दे दिया। अग्नि ने तेजोमयी बना दिया उष्णा बनाती रही परन्तु देखो, जल ने तरलत्व पदार्श दिया और गुरुत्व पृथ्वी का गुण आ गया। सब देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो गये। जब वह रक्षार्थी बन गये तो परमाणुओं का संघात हो करके माता के गर्भस्थल में वह परमाणुओं से बलवती हो गया है, वही जगत में आया। मेरे पुत्रों! जगत में वायु देवता ने उसकी संरक्षण की रक्षा करके माता ने लोरियों का पान कराया और चन्द्रमा ने वही अमृत दिया और सूर्य ने वही ऊर्ज्वा वाला प्रकाश दे दिया। मेरे पुत्रो! देखो, यह संसार मानो देखो, वायु प्राण का संघात करने लगी। मेरे प्यारे! देखो, वह तरलत्व अपने में पदार्थ और गुरुत्व अपने में वृत्तियाँ देने लगा। तो मेरे प्यारे! देखो, वह बलवती होने लगा, युवा हो गया और युवा हो करके बेटा! अपने में अपनेपन में समाहित हो गया। परन्तु देखो, यह परमाणुओं का संघात, यह परमाणुओं की प्रतिष्ठा कहलाती है, यह परमाणुओं की प्रतिभा कहलाती है। मेरे प्यारे! ऋषि पत्नी मौन हो गई और ऋषि पत्नी ने कहा प्रभु चलो यह भी मैंने स्वीकार कर लिया। परमाणु कहाँ रहता है परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ कि जब यह परमाणुवाद इस रूप में नहीं था तो यह परमाणु कहाँ रहता था? उन्होंने कहा यही परमाणु माता के गर्भस्थल में विद्यमान था। माता के गर्भस्थल में मानो देखो, निर्माणवेत्ता निर्माण करता है और निर्माण करने वाला

देखो, उसी अमृतो से निर्माण कर रहा है मेरी भोली माता उस निर्माणवेत्ता से प्रायः वंचित हो जाती है परन्तु वह वंचित है निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। निर्माणवेत्ता ने जब बाल्य का निर्माण किया हम जैसे शिशुओं का निर्माण किया तो बेटा! इसमें बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो, निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है परन्तु मेरी भोली माता को प्रतीत नहीं होता कौन निर्माणवेत्ता है। कहीं बेटा! बुद्धि का निर्माण किया बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा मानो देखो, कहीं सुनीता रूप में और कहीं कहीं मानो देखो, रजनी के रूप में विद्यमान रहता है। कहीं मानो देखो, वह रजनप्रहा नाना प्रकार के बेटा! बुद्धि के प्रकार माने गये हैं। विचार आता रहता है जो दृष्टिपात करने वाली वह बुद्धि है और जो बुद्धि से मानो दृष्टिपात कर दे जो क्रिया में लाने वाली उसका नाम मेधा है और मुनिवरो! देखो, जो जान करके और उसका अनुभव करता है जैसे लोक लोकान्तरों को दृष्टिपात करने वाला। मेरे प्यारे! लोक लोकान्तरों को दृष्टिपात करता रहता है ऋतम्भरावी बन करके मुनिवरो! देखो, उन्हें अन्त में अनुभव करता है और प्रज्ञा में जब प्रवेश हो जाता है तो बेटा! ब्रह्माण्ड का दृष्टा बन जाता है, यह ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगता है।

मेरे पुत्रो! देखो, वही मानो देखो, प्रभु रचनाकार रचना कर रहा है। बुद्धियों का निर्माण किया और मेधा सुनीता में उसको परणित कर दिया। मेरे पुत्रो! देखो, माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है दो प्रकार के हृदयों का उन्होंने निर्माण किया एक मानो देखो, लोवृणी के मध्य में रहता है और एक लघु मस्तिष्क में होता है। हमारे जब प्रभु ने रचना की तो बेटा! देखो, रेणकेतु मस्तिष्क का निर्माण किया और उन्होंने लघु मस्तिष्क का निर्माण किया, व्रेतकेतु मस्तिष्क का निर्माण किया और मुनिवरो! देखो, उसमें मेधाम् भूतम् मस्तिष्क का निर्माण करके जिसमें भू का दर्शन होता रहता है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने चार प्रकार के मस्तिष्कों का निर्माण किया है और वही देखो, जब वह मस्तिष्कों का ज्ञान होता है तो वह ऋषि बन करके बेटा!

अपने अन्तः प्राणों को आत्मा के सहित जब ब्रह्मरन्ध में पहुँच जाता है तो बेटा! वह संसार के लोक लोकान्तरों का स्वामित्व बन जाता है। प्रकृति के ऊपर अपने को निहारता रहता है उसके ऊपर मानो उसका अधिपथ्य हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या मुनिवरो! ब्रह्मणां ब्रह्मा लोकाम् वर्चस्सुतम् देवत्वाम् भू वर्णाः वेदमन्त्रों कहता है क्या मानो देखो, प्रभु निर्माणवेत्ता है। माता के गर्भस्थल में शरीर का निर्माण किया है परन्तु मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणा जब इस प्रकार ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया तो देवी ने कहा हे प्रभु! मैं जब पूज्यपाद गुरुदेव के आश्रम में अध्ययन करती थी तो अध्ययन करने वाले मेरे पिता ने, मेरे आचार्य ने मुझे इन सबका ज्ञान कराया परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ। भगवन्! जब यह माता का गर्भाश्य नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा यही परमाणुवाद मानो कुछ वीरांगना के रूप में था और कुछ वीरत्व के रूप में विद्यमान था। वीरांगना जब इन परमाणुओं की रक्षा करती है तो मानो वह वीरांगना बन करके बेटा! अपने को निर्द्वन्द्व बना लेती है और जब ब्रह्मवर्चोसी ब्रह्म अपने में देखो, ब्रह्मचारी पालन करता है तो बेटा! वह ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है, ब्रह्म में मानो ब्रह्म को बरतने लगता है। इसी प्रकार देखो, मेरी पुत्र जब इस ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हुई मानो देखो, वीरांगना बनती है तो बेटा! देखो, सर्पराज भी चरणों की वन्दना करते हैं और मृगराज भी और सिंहराज मुनिवरो! देखो, चरणों में ओत प्रोत हो जाते हैं।

वीरांगना के दर्शन

विचार आता है, मुझे स्मरण आता रहा है जब बेटा! हम विद्यालय में अध्ययन करते थे, साधना करते थे तो पूज्यपाद गुरुदेव उस समय बोले क्या चलो आज तुम्हें मैं भ्रमण कराएँ। तो जब भ्रमण करने के लिए पहुँचे तो देखो, चाक्रार्णी गार्गी

सामगान का अध्ययन कर रही थी जब सामगान का अध्ययन कर रही थी तो निर्जन वन में देखो, भयँकर वनों में कोई प्राणी नहीं है, कोई मानव नहीं था, कोई ऋषि नहीं था परन्तु वह गान गा रही है अनुदात्त, उदात्त से और मालापाठ में गान गा रही है परन्तु देखो, वह वीरांगना बन रही है। मेरे प्यारे! सर्पराज चरणों की वन्दना कर रहे हैं, सर्पराज उन शब्दों को वैखरी वाणी को अपने में ग्रहण कर रहे हैं, सिंहराज विद्यमान हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ शान्त हो करके पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें निर्णय कराया क्या हे पुत्रवत! यह देखो, वीरांगना के लक्षण हैं। यह वीरांगना है जब प्राणी देखो, इन परमाणुओं की रक्षा करता है तो वह मानो देखो, अपने से मुक्त हो जाता है। वह अपने संसार के अव्ययों से मुक्त हो जाता है परमात्मा के राष्ट्र में चला जाता है और परमात्मा के राष्ट्र में किसी का भय नहीं होता, परमात्मा के राष्ट्र में निर्द्वन्द्व हो जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, इसी प्रकार यह वीरांगना अपने में निर्द्वन्द्व हो गई है, इसे किसी का अवृत नहीं है यह परमात्मा के आश्रित हो गई है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह वैखरी वाणी में गान गा रही है, स्वर ध्वनियाँ हो रही हैं परन्तु सिंह और मृगराज उन ध्वनियों को श्रवण कर रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब श्रवण कर रहे हैं तो आनन्दवत छा रहा था, विश्वम् ब्रह्मा लोकाम् बेटा! विश्व में लोक की चर्चाएँ होती रहती हैं।

मेरे प्यारे! देखो, जब सभा विसर्जन हुई, वेद पाठ समाप्त हुआ तो देखो, सर्पराज भी अपने आश्रम को चला गया और सिंहराज भी अपने आश्रम का चला गया। परन्तु जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा हे देवी! यह क्या कारण है जो सिंहराज अहिंसक प्राणी हैं और तुम्हारे चरणों की वन्दना कर रहे थे? उन्होंने कहा हाँ प्रभु! यह क्या कारण है? उन्होंने कहा अमृतम् ब्रह्मा देवत्वाम् क्या जब वाणी में अमृत हो जाता है और वाणी में अमृत जब होता है जब अहिंसा परमोधरम का पालन करता है, मानो देखो, वह उसकी वाणी में अमृत हो जाता है। जब हिंसा उसके हृदय में ही नहीं रहती तो वाणी का जब नृत होने लगता है वेदमन्त्रों का स्वर आ

जाता है। जब वह जटा पाठ में, धन पाठ में गाता है। तो सिंहराज भी चरणों की वन्दना करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने जब हमें यह दृष्टिपात कराया तो हमारा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हुआ।

ब्रह्मचारी कौन है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा देवी यह परमाणु मानो वीरांगना इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली वीरांगना अपने में देखो, अहिंसा में परणित हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी जब इन परमाणुओं की रक्षा करता है तो वह देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है और देवता बन जाता है और देवता बन करके मुनिवरो! देखो, वह गान गाता है। ब्रह्मा ब्रह्मे व्रतम् मानो देखो, जब ब्रह्मचारी बन करके वह ब्रह्मवर्चस्व बन जाता है, ब्रह्मवर्चोसी उसे कहते हैं जो ब्रह्म का चिन्तन करता है। मेरे प्यारे! जब ऋषि से यह प्रश्न किया क्या यह ब्रह्मचारी कौन है, देवी ने कहा यह ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह है जो ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करता है। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी ही चिंतन करता है। यह ब्रह्मचारी कौन है? जब पुनः प्रश्न किया उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह जो रक्षार्थी है जो अपने शरीर की रक्षा करता है, मन, कर्म, वचन की रक्षा करता है वह ब्रह्मचारी है। पुनः प्रश्न किया कि महाराज यह ब्राह्मण कौन है? उन्होंने कहा जो ब्रह्म को जानने वाला है वही ब्राह्मण है, वही ब्रह्मचारी है। उन्होंने कहा हे प्रभु! यह ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा जो एक एक श्वांस को ब्रह्म सूत्र में पिरोना जानता है, जो मानव माला के मनकों की भाँति इसको माला बना लेता है वही मुनिवरो! ब्रह्मचारी है। ब्रह्मवर्चस्सुतम् ब्रह्मा ब्रह्मवर्चो समब्रहे देवाः वही तो देखो, ब्रह्मचारी वही ब्रह्म की चरी को चरता है और वही मुनिवरो! ब्रह्म की आभा को चर करके देखो, वही अपने में मानो देखो, वह विज्ञानवेत्ता बन जाता है। नाना अणु और परमाणु में प्रवेश हो जाता है और ब्रह्म और चरी को दोनों को जानने लगता है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को यह दोनों को जानता हुआ मुनिवरो! देखो,

ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। तो वही ब्रह्मचारी है और वही ब्रह्मचारी देवताओं की सभा में बेटा! सुशोभनीय होता है। वह जब ब्रह्म का बखान करता है ब्रह्म को ही मानो देखो, एक स्थली में दृष्टा बन जाता है वह ब्रह्मचारी है। मेरे प्यारे! वह ब्राह्मण है जो एक एक कण कण में ब्रह्म की चर्चा करता है वह ब्राह्मण कहलाता है।

सात प्रकार का अन्न

मेरे प्यारे! देखो, वेद के ऋषि ने जब इस प्रकार अपनी देवी से यह वर्णन किया तो देवी बड़ी मौन हो गई और मौन हो करके बोली प्रभु आप को धन्य है आप ने मेरे अज्ञान को दूरी कर दिया है। जब देवी ने यह कहा तो पिप्पलाद मुनि से यह कहा पुनः प्रश्न किया कि महाराज यह मैंने जान लिया कि ब्रह्मचारी और ब्रह्म मनम् व्रते मैं भगवन्! यह और जानना चाहती हूँ क्या भगवन्! देखो, यह अमृतम् जब यह देखो, वीरांगना और ब्रह्मचारी भी नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहा रहता है? जब मुनिवरो! देखो, देवी ने यह प्रश्न किया तो उन्होंने कहा हे देवी! जब मानो देखो, यह भी नहीं होता जब यह परमाणुवाद कहाँ रहता है तुम्हारा यह प्रश्न है। जब वीरांगना नहीं होती, ब्रह्मवर्चोसी ब्रह्मचारी भी नहीं होता ब्रह्म देखो, वह वीरत्व नहीं होता तो यही परमाणु मानो देखो, सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। बेटा! जब सृष्टि का सृजन हुआ इस जगत की रचना की तो प्रभु ने सात प्रकार के अन्न को रचा।

दो प्रकार का अन्न

सबसे प्रथम बेटा! देखो, अन्नादन भूतम् मेरे पुत्रो! देखो, एक ही पौधा है उस पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान है। एक अन्न को मुनिवरो! देखो, मानव पान कर रहा है, एक को पशु पान कर रहा है। पशु पय दे रहा है, मानव ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, एक ही पौधा है और सृष्टि के पिता ने एक ही पौधे पर दो प्रकार के अन्न की रचना की है और वह दो प्रकार का अन्न है एक

अन्न को बेटा! पशु पान करके पय दे रहा है और द्वितीय अपने ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार अपने में प्रभु की महिमा का गुणगान गाता हुआ कहता है ऋषि क्या हे देवी! एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है और एक अन्न को पशु पान करके पय और दुग्ध दे रहा है मानो देखो, यह प्रभु की महानता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा यह दो प्रकार का अन्न तो यह है।

तीसरा अन्न हुत

और एक अन्न हुत है जो यजमान अपनी यज्ञशाला में अपनी देवी से कहता है हे देवी! आओ हम हुत करेंगे, हम देवताओं को भोज्य देंगे क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है। तो मानो देखो, वह स्वाहा स्वाहा कह करके अपनी मानो देखो, अपनी भावनाओं, अपने देखो, साकल्य को अग्नि के मुख में प्रदान करते हैं। वह अग्नि देवताओं का मुख है देवताजन उस पान करते हैं तो नाना प्रकार की वृष्टि प्रारम्भ करते हैं, उससे नाना प्रकार का अन्न उत्पन्न होता है। यह पृथ्वी नाना प्रकार के मानो व्यञ्जनों वाली बन जाती है तो इसीलिए देखो, वह जो हुत है वह भी तीसरा अन्न कहलाया गया है जो अग्नि के मुखारबिन्द में परणित किया गया है। अग्नि उसे अपने में धारण कर लेती है परन्तु वह सर्व देवताओं को प्रसारण कर देती है वह देवाम् भूतम् अग्नम् ब्रह्मा देवानाम् देवत्वाम् लोकम् वाचस्सुतेः। मेरे प्यारे! देखो, यजमान अपनी देवी से कहता है देवी आओ हम देवताओं को हवि देना चाहते हैं जिससे वह हवि हमें ही प्राप्त हो जाए। तो मानो देखो, हवि दे करके वह तीसरा अन्न कहलाता है जिससे देवता प्रसन्न हो वायुमण्डल में मानो देखो, सात्विक वातावरण हो जाए और देखो, वायुमण्डल में देखो, प्रदूषण का विनाश हो जाए और वह वायुमण्डल का शुद्धिकरण हो जाए। इस प्रकार मुनिवरो! देखो, ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया।

चौथा अन्न प्रहूत

मेरे प्यारे! चौथा जो अन्न है वह प्रहुत कहलाता है। जो पुरोहितजन होते हैं और पुरोहितजन ही मुनिवरो! देखो, गृह को ऊँचा बनाते हैं। वह कहते हैं हे गृह स्वामी!हे गृहस्वामिनी! आओ तुम्हारा गृह पवित्र होना चाहिए मानो देखो, अपना उपदेश देता है। देखो, वह जो पुरोहित है वह अपना उपदेश देता है उससे राष्ट्र और समाज दोनों ऊँचे बनते हैं। मानो देखो, जो बुद्धिमान हैं राजा के राष्ट्र में जितने बुद्धिमान पुरुष होंगे, विवेकी पुरुष होंगे उतना राष्ट्र ऊँचा बनेगा। जितने राजा के राष्ट्र में विवेकी पुरुषों का व्यवधान होगा, क्रियाशील प्राणी होंगे, ब्राह्मणत्व वेद के जानने वाले जितने भी महापुरुष उतना राष्ट्र ऊँचा बनेगा, गृह ऊँचा बनेगा। माता का गर्भाश्य जब ऊँचा बनता है जब माता के गर्भ से वेद महर्षियों के जन्म होते हैं जो वेद के मर्म को जानने वाले हैं। माता उस समय प्रसन्न होती है जब पुत्र वेदों का उद्गीत गाता हो, विवेक में विचरण करने वाला हो, ब्रह्मज्ञान में ब्रह्म से वार्ता प्रगट करने वाला हो माता का गर्भाश्य उस समय उज्ज्वल होता है। तो बेटा! देखो, वह पुरोहित कहलाते हैं जितने बुद्धिमान पुरुष होते हैं उतना राष्ट्र और समाज में एक आनन्दत्व आने लगता है।

पुरोहित

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा विश्वामित्र का तुमने नामोकरण श्रवण किया होगा और मुझे बेटा! वह दृष्टिपात आता रहता है उनका जीवन जब उन्होंने बेटा! देखो, यहाँ एक अमृतम् देखो, यजम् ब्रह्मा लोकाम्। उन्होंने बेटा! एक समय यहाँ धनुर्याग किया था और धनुर्याग में देखो, दो सौ पच्चासी ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। जब मुनिवरो! देखो, अध्ययन की क्रियाएँ प्रारम्भ हुई तो उन्होंने राजकुमारों की आवश्यकता जानी। वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचे और वशिष्ठ से कहा कि महाराज मैंने धनुर्याग का आयोजन किया है आपके कथनानुसार परन्तु राजपुरुष नहीं आ रहे हैं। उन्होंने

कहा जाओ दशरथ से पुकार करो। उन्होंने, बेटा! राजा दशरथ के यहाँ पहुँचे। राजा दशरथ ने ऋषि का स्वागत किया और यह कहा कि प्रभु बिना सूचना के आपका आगमन हो गया है इस कारण को मैं नहीं जान सका हूँ? उन्होंने कहा कि मैं एक धनुर्याग कर रहा हूँ और मुझे तुम्हारे राजकुमार चाहिए धनुर्याग को पूर्ण कराने के लिए। राजा ने कहा प्रभु यह बाल्य तो किशोर हैं परन्तु मैं आप के याग को पूर्ण कराऊँगा। उन्होंने कहा नहीं, मुझे राजकुमार चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक दोनों का प्रारम्भ ही हो रहा था इतने में राज लक्ष्मियों को प्रतीत हुआ क्या आज ऋषि का आगमन हो रहा है तो बेटा! कौशल्या इत्यादि सर्वत्र देवियाँ मानो देखो, ऋषि के चरणों की वन्दना के लिए आ गई थीं और वहाँ देखो, कौशल्या ने कहा भगवन्! कहिए ब्रह्मणा व्रतम् देवत्वाम् किस प्रकार आपका आगमन हुआ है?

उन्होंने कहा देवी! मैं अपना एक याग कर रहा हूँ धनुर्याग और उसको पूर्ण कराने के लिए मुझे ये राजकुमार चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। उन्होंने कहा राजा राजकुमारों को प्रदान कीजिए। उन्होंने कहा हे देवी! मैं इनके याग को पूर्ण कराऊँगा परन्तु यह बाल्य किशोर हैं। माता कौशल्या का यह शब्द था क्या हे राजन्! यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुत्र या मानो देखो, बाल्य यदि ऋषि की रक्षा नहीं कर सकता, यागों की रक्षा नहीं कर सकता तो हमारा यह गर्भाश्य दूषित हो जाएगा। मेरे पुत्रो! देखो, जब कौशल्या ने ऐसा कहा उन्होंने चारों राजकुमारों को ऋषि को प्रदान कर दिया, जाओ याग को पूर्ण करो। मेरे प्यारे! देखो, उन्हें धनुर्विद्या दी, देखो, दो सौ पचासी ब्रह्मचारी ऋषि के आश्रम में ज्ञान विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करते थे। वह धनुर्याग कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, मैं उच्चारण कर रहा था उनका नाम प्रहुत कहलाता है। वह पुरोहित हैं, वह भी अन्न हैं जिससे राष्ट्र और राष्ट्र का मस्तिष्क ऊँचा बन जाए, जिससे राष्ट्र में वीरत्व आ जाए और गृह ऊँचे बन जाए। बेटा! यह उद्गीत गाता हुआ ऋषि मानो राजकुमारों को लेकर के पुरोहिताम् भूतम् ब्रह्मा। वेदमन्त्रों कहता है राजा तेरे राष्ट्र

में पुरोहित होने चाहिए जिससे देखो, यह अन्न है जो सृष्टि के पिता ने दिया। तो मुनिवरो! देखो, यह चार प्रकार का अन्न प्रभु ने सबका साझा अन्न निर्मित किया है। यह सबका साझा अन्न है देखो, प्रत्येक प्राणी के लिए मानो देखो, अन्नाद कहलाता है।

आत्मा का अन्न

तीन प्रकार का अन्न मेरे पिता ने आत्मा के लिए दिया है। बेटा! मन देखो, मन, कर्म और विचार कर्माणां भूतम् कर्माणां धवर्णम् ब्रहे ऋतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो, यह जो कर्म है, क्रिया है और मुनिवरो! देखो, मन मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए तुम मानो देखो, क्रियाशील बनोगे तो तुम्हारा विचार ऊँचा बनेगा और विचार का देखो, मन, कर्म, वचन का तुम साकल्य बना करके, इन्द्रियों के विषयों का साकल्य बना करके जब तुम विचार से याग करोगे तो मेरे प्यारे! देखो, वह आत्मा में ही आत्मा का याग होगा। आत्मा में, प्रकाश में प्रकाश का अवधान होगा। मेरे प्यारे! वह आत्मा का कल्याण हुआ जब ज्ञानरूपी यज्ञशाला में आहुति देना प्रारम्भ करोगे वह यौगिक माना गया है। हमारे ऋषि मुनियों की यह बड़ी विचित्र एक देन रही है क्या उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिकवाद को दोनों को एक दूसरे में रत्त कर दिया है। एक दूसरे में कटिबद्ध करते हुए उन्होंने आध्यात्मिक और भौतिकवाद को एक दूसरे में परणित करते अपने में ओजस किया है। तो मेरे पुत्रो! देखो, इस प्रकार ऋषि ने अपना वर्णन किया कि मन, कर्म और देखो, विचार मन देखो, मनम् ब्रह्मा मन से विचार करो मुनिवरो! देखो, प्राणों से क्रिया करो और उसके पश्चात विचारों का व्यवधान होगा तो आत्मा का कल्याण हो जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार सात प्रकार का अन्न मन कर्म वचन यह देखो, आत्मा का अन्न है जिससे आत्मा बलवान होता है। मन से विचार और देखो, क्रिया से क्रिया अमृतम् और देखो, उसके पश्चात जो विचार आयेगा वह महान से महान उत्पन्न होगा।

मन, कर्म और विचार अपने में पवित्रता को देखो, देने वाला है। तो विचार आता है बेटा! यह सात प्रकार का अन्न सृष्टि के पिता ने मानव के कल्याण के लिए उसको उत्पन्न किया है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना निर्णय दिया तो देवी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा प्रभु आपको धन्य है परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन्! जब यह अन्न भी नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? भगवन्!तो उन्होंने कहा कि जब यह अन्नम् ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे देवाम् भूतम् भविते ब्रह्मनम् ब्रव्हा ऋतम् देवाः हे देव! अमृतम् ब्रह्मा, हे देवी! जब मानो देखो, यह अन्न भी नहीं होता तो यह परमाणुवाद मानो देखो, कुछ अग्नि के होते हैं। जब यह आत्मा इस शरीर को त्याग देता है उस समय मानो देखो, अग्नि के परमाणु अग्नि में चले जाते हैं, जल जल में प्रवेश कर जाता है, गुरुत्व पृथ्वी में चला जाता है और यह प्राण मानो वायु में प्रवेश कर जाता है, अवकाश अन्तरिक्ष में चला जाता है और आत्मा अपने चित्त के मण्डल को ले करके अपने किए हुए क्रियाकलापों को यह मानो वायु में प्रवेश कर जाता है, यह अपने चित्त के मण्डल में चला जाता है। तो देवी न तो आत्मा का विनाश होता है और न परमाणुवाद का विनाश हुआ है तो मैं यह जानना चाहता हूँ मृत्यु है क्या संसार में। मानो न तो अग्नि का विनाश हुआ है, न जल का हुआ है, न मानो देखो, यह गुरुत्व पृथ्वी का हुआ और प्राण प्राण में वायु में प्रवेश कर गया है तो देवी मैं जानना चाहता हूँ मृत्यु है क्या? तो देवी नतमस्तिष्क हो गई और देवी ने कहा प्रभु आपको धन्य है आप ने मुझे प्रकाश में पहुँचा दिया है। अन्धकार में मैं सदैव रमण कर रही थी मेरा जीवन प्रकाश में चला गया। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है क्या ऋषि अमृतम् बेटा! देखो, देवी मौन हो गई। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु आपने मानो देखो, मेरे जीवन को वृत्ति बना दिया।

मृत्यु की मृत्यु

जब देवी मौन होने लगी तो ऋषि कहता है देवी मृत्यु भी है।अब ऋषि कहता है क्या मृत्यु है। तो देवी ने कहा प्रभु आगे अमृतम्। उन्होंने कहा कि जैसे राजा जनक की सभा में अर्द्धभाग ने याज्ञवल्क्यमुनि महाराज से कहा था हे याज्ञवल्क्य! मृत्यु की मृत्यु क्या है? याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा था क्या मत कहो ऋषि कि मृत्यु की मृत्युनहीं होती, अरे,! मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है ब्रह्म को जानने वाली की मृत्यु नहीं हुआ करती। तो मेरे प्यारे! ऋषि इतना उद्गीत गा करके अपनेमें मौन हो गया। उसने कहा धन्य है भगवन्! तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने आसन पर विद्यमान थे और इतना उच्चारण करके, इतनी विवेचनादेने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी मौन हो गई।विचार आता रहता है बेटा! यही व्यक्तव्य जब महर्षि जमदग्निआश्रम में ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया तो ऋषि भी अपने में मौनहो गया। ऋषियों ने आपस में देखो, उनका जो विचार विनिमय होताउसमें वह स्वयं संतुष्ट हो गये क्योंकि ऋषि तो अपने में संतुष्ट होतेहैं। तो मेरे प्यारे! वह संतुष्ट हो गये सन्तुष्ट हो करके अपने को यहकहा प्रभु हमारा वरणीय हैं हम उसको अपना वरूण बना करके इससागर से पार होने का प्रयास करें। यमदम ब्रह्मा हम यमराज को देखो, यम को विजय करें। यम कहते हैं मृत्यु को, अन्धकार को। अन्धकारको न आने दे। यमराज अमब्रव्हे यमराज मानम् ब्रहे देखो, उसको नआने दे। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने तो इतना उद्गीत गा करके मौनहो गये। ऋषि देवी ने उनके चरणों की वन्दना की और ऋषि मुनियों ने भी पिप्पलाद मुनि महाराज के इन विचारों का मानो देखो, अपने में संतुष्ट हो करके अपने अपने आश्रम को चले गये।

विचार आता रहता है बेटा! आज मैं कोई व्याख्यता नहीं हूँ मैंतु म्हें परिचय देने के लिए चला आया हूँ और वह परिचय क्या है क्यावेदेद के ऋषियों ने कहा कि मृत्यु का अभाव है संसंसार में। मृत्यु मानो देखो, अज्ञान का नाम ऋषि ने कहा है और ज्ञान का नाम जीवन है। जितना ज्ञान हो जाता है उतना प्रकाश हो जाता और जितना प्रकाश हो गया उतना प्रभु के राष्ट्र में चले गये। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि

पिप्पलाद ने कहा क्या मृत्यु का अभाव है मानो देखो, मैं इसकी शेष चर्चाएँ कल प्रगट कर सकूँगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा।

7. आत्मा का प्रकाश-920723

सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में परमपिता परमात्मा

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ यह पाठ्यक्रम परम्परागतों से ही विचित्रत्व में परणित रहा है क्योंकि यह अमृत है और जब मानव इस स्वर संगम में उतर के अपने प्रभु का गुणगान गाता है और वेदमन्त्रों की जब जटा पाठ, घनपाठ में स्वर संगम हो जाता है तो मानव अपने में रत्त हो जाता है और वह प्रकाश को दृष्टिपात करता रहता है। क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि मुनियों की एक विचित्र देन रही है क्या उन्होंने ब्रह्माण्ड को पिण्ड से और पिण्ड को ब्रह्माण्ड से और ब्राह्मण्ड और पिण्ड दोनों को चेतना में कटिबद्ध किया है और परमपिता परमात्मा से उसका समन्वय किया है जिससे मानव गम्भीरता से उसके ऊपर विचार विनिमय कर सके। हमारे यहाँ यह कहा गया वेदाम् भवि वर्णनं प्रकाशं ब्रव्हे ये जो वेद है यह प्रकाश का पुञ्ज है और यह प्रकाश के देने वाला है। हम जब बाल्य काल में अपने आचार्यों के समीप वेद का अध्ययन करते थे तो जब वह वेद की विवेचना करते हुए कहा करते कि यह प्रकाश है। तो हम अपने पूज्यपाद गुरुओं से यह प्रश्न करते कि आप तो प्रकाश सूर्य को कहते हो यह वेद कैसा प्रकाश है? तो पूज्यपाद इसका उत्तर दिया करते कि जैसे बाह्य जगत में यह सूर्य नेत्रों का प्रकाश है इसी प्रकार यह जो वेद रूपी प्रकाश है यह मानव के अन्तःकरण को प्रकाशित करता है, इससे मानव का अन्तः जो जगत है, अन्तःकरण प्रकाशित हो जाता है। तो इसीलिए हमारे यहाँ वेदाम् प्रकाशाम् भवे वर्णास्सुतम् देवाः यह प्रकाश का पुञ्ज है और प्रत्येक मानव प्रकाश चाहता है, अन्धकार नहीं चाहता। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा लगी रहती है कि मैं प्रकाश को प्राप्त हो जाऊँ, मेरे जीवन में अन्धकार न आए, मैं प्रकाश के पुञ्ज में चला जाऊँ। तो मेरे प्यारे!

देखो, प्रत्येक मानव को प्रकाश के लिए सदैव रत्त रहना चाहिए। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा जितना भी जड़ जगत और चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्राह्मण्ड के मूल से वह विद्यमान रहते हैं मानो उसकी प्रतिभा एक महानता में परणित रही है।

परमपिता परमात्मा सीमा से रहित

आओ मुनिवरो! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चाएँ नहीं कर पाऊँगा केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वेदमन्त्रों क्या कहता है। वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महान हैं और वह प्रकाशित हैं, वह प्रकाश के देने वाले हैं और वह मानो देखो, पूर्वा में पूर्वा द्वियम् ब्रह्मा अग्नम् ब्व्हे वह अग्नि के स्वरूप में रहते हैं। तो उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव हम गुणगान गाते रहें क्योंकि यह ब्रह्माण्ड को रचना में लाने वाले वह परमपिता परमात्मा को ही स्वीकार किया गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके क्योंकि वह सीमा से रहित हैं और सीमा में आने वाले नहीं हैं। इसीलिए उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव हम गुणगान गाते रहते हैं और प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मैं परमात्मा को प्राप्त हो जाऊँ। नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है, द्रव्य को एकत्रित करता रहता है।

मानव सुखद चाहता है

परन्तु उसमें एक आत्म पिपासा रहती है कि मुझे सुखद प्राप्त हो जाए। नाना प्रकार की ख्याति में प्रसिद्ध हो जाता है और वह सदैव यह चाहता है कि मुझे आनन्द की प्राप्त हो, मैं प्रकाश में चला जाऊँ अन्धकार मेरे समीप न आ पाये। प्रत्येक मानव मानो परम्परागतों से अपने में अन्वेषण करता रहा है। महात्माजन बेटा!

तपस्या में परिणित हो जाते हैं।

अंगिरस ऋषि

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब अंगिरस ऋषि अपने में बेटा! वायु का सेवन कर करके वह अपने में मौन रह करके और अपने अन्तःकरण में नाना जन्मों के संस्कारों को जागरूक करते रहे। उनका तारतम्य यही था, यही चाहते थे कि मेरे अन्तःकरण में जो जन्म जन्मान्तरों के संस्कार हैं मैं उनको उद्बुद्ध करता रहूँ और यह उद्बुद्ध करके मैं जानू और देखो, मैं सुखद हो जाऊँ, मेरा अङ्गत्व में मैं परिणित हो जाऊँ।

महात्मा अर्द्धभाग का अध्ययन

आओ मेरे प्यारे! तो प्रत्येक मानव की ये परम्परागतों से आकांक्षा रहती है क्या मैं अपने में प्रकाश में चला जाऊँ। इस सम्बन्ध में तुम्हें एक कथानक वार्ता में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो, राजा जनक के यहाँ नाना ब्रह्मवेत्ता विद्यमान हो करके ब्रह्म का बखान करते रहे हैं और देखो, वह स्वतः अपने क्रियाकलापों में बड़े विचित्रत्व में रत्त रहे हैं। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहा है एक समय महात्मा अर्द्धभाग अपने आसन पर विद्यमान थे। तो महात्मा अर्द्धभाग एक वेदमन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे और वेदमन्त्रों था प्रकाशाम् भविताणाम् ब्रव्हे व्रतम् सूर्य असुचतम् ब्रव्हा व्रतम् चन्द्रमाम् ब्रव्हे ऋतम् देवत्वाम् प्रकाशाः तो एक वेदमन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे और यह अपने में विचार रहे थे कि मैं प्रकाश में जाना चाहता हूँ परन्तु प्रकाश क्या है। कहीं तो प्रकाश सूर्य का वाची और कहीं मानो वही चन्द्रमा का वाची बन रहा है वही कहीं बेटा! तारा मण्डलों का वाची है। परन्तु देखो, अपने में यह चिन्तन करते हुए उन्होंने विचारा अमृतम् देखो, न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन करने लगे और वेदमन्त्रों में आ रहा था यम तम ब्रह्मा वर्णम् त्वा कृतम् देवाः अभ्यम् देवत्वम् अग्नि ब्रह्मणा लोकाम्

वाचस्सुतम् देवत्वाम् लोकाः ऐसा वेद का ऋषि अपने में अध्ययन कर रहा था। परन्तु सायँकाल का समय था वह वहाँ से अपने आसन से प्रस्थान करते हुए और वह राजा जनक के गृह में उनका वास हुआ। मेरे प्यारे! उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने उनका बड़ा स्वागत किया और उनको आसन दिया। वह आसन पर विराजमान हो गये। मेरे प्यारे! देखो, उनका आगनम व्रते विश्राम कक्ष था जहाँ वह विचार विनिमय करते रहे। मेरे प्यारे! वह कुछ वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहे न्यौदा में वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते यम सम ब्रह्मा कृतम् देवत्वाम् अभ्यम् ब्रह्मा यसुतम् देवत्वाम् सूर्यम् गम ब्रव्हा वाचम् लोकाम् भुर्स्तत्वम् ब्रहे ऐसे वेदमन्त्रों का वह उद्गीत गाते रहे परन्तु गाने के पश्चात रम्भेश्वरी निद्रा में तल्लीन हो गई। महात्मा अर्द्धभाग ने उस आसन को त्याग करके अपने आश्रम को प्रस्थान किया। मेरे प्यारे! देखो, अपने आश्रम में जा पहुँचे।

रम्भेश्वरी देवी का चिन्तन

परन्तु देवी रम्भेश्वरी और जब मध्यरात्रि में निद्रा से जागरूक हो गई। वही वेदमन्त्रों उन्हें स्मरण आने लगे और वेदमन्त्रों में गान गाने लगीं प्रकाशाम् मम् व्रते देवत्वाम् सूर्या यम ब्रह्मा विष्णु ब्रहे व्रतम् प्रकाशाम् भविते असुतनम् ऐसा वेदमन्त्रों का जब उद्गीत गाने लगी तो अपने में अन्वेषण करने लगी कि यह क्या है और यह प्रसंग आया कि हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह वेदमन्त्रों में जब इस प्रकार का प्रसंग आया क्या हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं तो बेटा। देखो, विचार विनिमय करके अपने में निपटारा नहीं कर सकीं। देखो, रात्रि का अन्तिम चरण रह गया। अन्तिम चरण रहने के पश्चात देवी ने विचारा मैं अपने देव राजा जनक के कक्ष में पहुँचूं और विचार विनिमय करेंगे कि वेदमन्त्रों मिथ्या तो हो नहीं सकता और वेदमन्त्रों कहता है प्रकाशाम् भविते ब्रह्मणं ब्रव्हा कृतो प्रकाशाः हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं ऐसा मानो वेदमन्त्रों बेटा! प्रश्न भी कर रहा है और उत्तर भी दे रहा है। राजा जनक और रम्भेश्वरी देवी का विचार विमर्श रम्भेश्वरी

ने अपने कक्ष को त्याग करके वे राजा जनक के द्वार पर पहुँची। राजा जनक अपनी निन्द्रा में तल्लीन थे। वह जागरूक हो गये और उन्होंने कहा रम्भेश्वरी यह क्या कारण है तुम रात्रि के अन्तिम चरण में मेरे समीप, मेरे कक्ष में तुम्हारे आने का अभिप्राय क्या है? रम्भेश्वरी ने कहा यम ब्रव्हे कृतम् अप्रतम् मम्भावृति देवत्वाऽम् हे प्रभु! वेदमन्त्रों कहता है प्रश्न कर रहा है कि हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। मेरे प्यारे! देखो, राजा जनक ने कहा देवी विराजो। दोनों का विचार विनिमय होने लगा। राजा ने कहा देवी यहाँ तो सूर्यवाची बन रहा है। जब उन्होंने कहा कि सूर्य तो भौतिक है परन्तु यह तो विज्ञान का दूत कहलाता है। प्रकाशाम् भविते प्रकाशाम् नेत्राः यह नेत्रों, कौन प्रकाश देता है नेत्रों को? मेरे प्यारे! इसी विचार विनिमय में मानो उनका देखो, दिवस, सूर्य उदय होने लगा। सूर्य उदय हो गया, अपने कक्ष को त्याग दिया अपनी क्रियाओं से निर्वृत हो करके।

राजा जनक की यज्ञशाला

मेरे प्यारे! देखो, उनकी यज्ञशाला थी और उस पर अपने अपने स्थान पर ब्रह्मवेत्ता विद्यमान हो जाते प्रातः कालीन और वहाँ वह प्रातःकालीन याग करते, अग्नि देवता को अग्नम् ब्रह्मे देखो, उसका अपना चरू प्रदान करके मुखारबिन्द में उसके पश्चात वह ब्रह्मवेत्ताओं से कुछ वार्ता प्रगट करते थे। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है राजा जनक और रम्भेश्वरी अपनी क्रियाओं से निवृत हो करके यज्ञशाला में पहुँचे।

तो यज्ञशाला में देखो, महात्मा अर्द्धभाग विद्यमान हैं कहीं महात्मा दिग्ध हैं, कहीं महात्मा अश्वल हैं उनके पुरोहितजन और कहीं मुनिवरो! देखो, अमृतम् देवः देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु, महर्षि शिलक, महर्षि दालम्य और महर्षि श्वेतकेतु और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे। परन्तु सबसे ऊर्ध्वा आसन पर विराजमान होने वाले महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज थे। मेरे प्यारे! देखो, दोनों ने अपनी यज्ञशाला में अग्नि को प्रदीप्त किया। वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते

हुए अग्नि प्रचण्ड हो गई। तो बेटा! देखो, अग्न्याधान करने के पश्चात राजा जनक ने यह अपने में निश्चय कर लिया कि आज मैं आचार्य से कोई प्रश्न नहीं करूँगा।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि और राजा जनक रम्भेश्वरी देवी का संवाद

मेरे प्यारे! जैसे ही उनका याग सम्पन्न हुआ तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बोले क्या मेरे से यजमान कोई प्रश्न कर सकता है। बेटा! दोनों बड़े प्रश्न हुए और महर्षि अर्द्धभाग ने खन्तम् ब्रह्मे उनसे कहा कहो राजन प्रश्न करो। मेरे प्यारे! देखो, वहाँ अमृते माता रम्भेश्वरी राजा जनक ने, दोनों ने नत मस्तिष्क हो करके कहा प्रभु यह वेदमन्त्रों हमें देखो, रात्रि तक, रात्रि समाप्त हो गई इस वेदमन्त्रों के आश्रय को नहीं जान सके हैं। वेदमन्त्रों कहता है प्रकाशाम् भविवर्णन प्रकाशाम् भविते सूर्य अस्वतम् ब्रव्हा कृतम् चन्द्राः हे प्रभु! वेदमन्त्र कहता है कि हम किस के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं परन्तु वेदमन्त्र यह उत्तर भी दे रहा है कि सूर्य हमारा प्रकाशक है। तो हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं कि हमें प्रकाश के देने वाला कौन है, कौन प्रकाश को देता है?

सूर्य का प्रकाश

मुनिवरो! राजा जनक के इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा हे राजन्! इसको प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक बाल्य जानता है कि हमारे जो नेत्र हैं वो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह सूर्य का प्रकाश आता है और रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है चन्द्रमा मानो देखो, अपने में द्विज बन जाता है। अमृतम् ब्रह्मा देखो, यह सूर्य का प्रकाश है यह नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देता है, प्रकाश देता है और ऊर्ध्वा में देखो, हम संसार के क्रियाकलापों में तत्पर हो जाते हैं। मानो देखो, मेरी प्यारी माताएँ अपने पुत्रों को जागरूक कर लेती हैं हे बाल्य! आओ, भानु उदय हो गया है, प्रकाश आ गया है इस प्रकाश में तुम अपने क्रियाकलापों से रत्त हो जाओ। मेरे पुत्रों! देखो, माताएँ, आचार्यजन विद्यालयों

में ब्रह्मचारियों को कहते हैं हे ब्रह्मवर्चोसी! जागरूक हो जाओ, यह सूर्य उदय हो गया है, प्रकाश आ गया है। मानो देखो, यह प्रकाश से वनस्पतियाँ भी जागरूक हो जाती हैं नाना वनस्पतियाँ मानो देखो, उसी के प्रकाश में परिपक्व हो जाते हैं। वह उसी को पान करते हुए स्थावर, समस्त सृष्टि मानो उसी में रत्त हो करके और अग्नि में प्रकाशमान हो जाते हैं। जंगम, स्थावर बेटा! प्रत्येक सृष्टि का जो व्यवधान हो रहा है चाहे वह समुद्रों में गमन करने वाली सृष्टि हो, चाहे वह वायु मण्डल में हो, चाहे वह मानो उसके अन्तर्गत दे करके लोक लोकान्तरों में हो सूर्य उनका प्रकाशक बना रहता है।

मानो देखो, यह सूर्य ही गो नाम का पशु है और गो नाम के रीढ़ के विभाग में एक सूर्यकेतु नाम की नाड़ी होती है और जैसे ही सूर्य उदय होता है मानो उस नाड़ी का ऊर्ध्वा मुख हो जाता है और वह उन परमाणुओं को अपने में ग्रहण करने लगती है जिन परमाणुओं में ब्रह्मे देखो, जो स्वर्ण के परमाणु हैं वह जिन किरणों में स्वर्ण के परमाणु होते हैं, उनको वह अपने में ग्रहण कर लेती है। इसीलिए गो नाम का जो पशु है उसके मानो दुग्ध में पीत वर्ण होता है, उसके घृत में पीत वर्ण होता है क्योंकि उसमें स्वर्ण की मात्रा विशेष पाई जाती है, प्राप्त होती रहती है। आयुर्वेद आचार्यों ने बेटा! इसके ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। आयुर्वेदा आचार्यों ने बेटा! बहुत सी अग्नियों का वर्णन किया है परन्तु देखो, वह तरंगें अप्रतम् देखो, सूर्य की किरणों के साथ गमन करती रहती हैं। यह सूर्य हमारा प्रकाशक है और प्रकाश के देने वाला है। नाना प्रकार की वनस्पतियाँ परिपक्व होती हैं और पृथ्वी को जब तक जब पृथ्वी सूर्य की ऊर्ज्वा में तपायमान होती है तो यही नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म दे करके बेटा! देखो, मानव अपने में प्रसन्न युक्त हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, तो ऋषि अपने में मौन होने लगे और उन्होंने कहा कि मैंने तो ऐसा ही पाया है कि प्रकाश का जो पुञ्ज है वह सूर्य कहलाता है।

मेरे प्यारे! जैसे वह शान्त होने लगे तो रम्भेश्वरी ने और राजाने पुनः यह प्रश्न किया प्रभु वेदमन्त्रों कहता है यजसुतम ब्रव्हे वर्णानं ब्रहेहे भगवन्! देखो, जब यह सूर्य नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक है? उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या जब यहसूर्य नहीं होता तो हम चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह चन्द्रमा प्रकाश का द्युतक है, प्रकाश को देने वाला है, धीमा धीमा यह प्रकाश देता है जिसके प्रकाश में मानव अपनी क्रियाओं से युक्त हो करके क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है। मानो यह चन्द्रमा है जो मानव को जीवन देता है, अमृत देता है। जब माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो माता के गर्भ में जैसे ही शिशुओं का प्रवेश होता है उसी समय बेटा! चन्द्रमा अमृत देना प्रारम्भ करता है, सूर्य प्रकाश देता है, वायु देखो, अग्नि उसे अमृतम् देखो, ऊष्णा बना देती है और तरलत्व मानो देखो, जल उसका आसन और ओढ़न बना रहता है मानो देखो, अमृतम् यह अम्ब्रे ब्रहा वायु प्राण देता है। मेरे पुत्रो! देखो, सब देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। हे मेरी भोली माँ! तुझे ज्ञान नहीं होता कौन तेरे गर्भस्थल में रक्षार्थी बना हुआ है, कौन देवता है जो देवत्व को धारण करा रहा है। निर्माण करने वाला वह परमपिता परमात्मा है। जो माता के गर्भस्थल में जब निर्माण होता है तो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता है।

वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है कहीं मानो देखो, बुद्धि का निर्माण होता है। बुद्धि के कई प्रकार जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, इसी के आङ्गन में मुनिवरो! देखो, मनस्तत्त्व है, प्राणत्व है और एक लघुमस्तिष्क में मानो देखो, हृदय रहता है, एक हृदय मुनिवरो! देखो, शरीर के मध्य भाग में रहता है। वह परमपिता परमात्मा रचनाकार है और रचना कर रहा है परन्तु मेरी भोली माँ को कोई प्रतीत नहीं कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता

है वह प्रभु कितना निकटतम रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार यह चन्द्रमा अमृत के देने वाला है, यह देवत्व कहलाता है। यह ही मुनिवरो! देखो, चन्द्रमा देखो, अमृते व्रताहा यह सूर्य से ऊर्ज्वा ले करके समुद्र के समीप जाता है, समुद्रों से जलों का उत्थान करता है और उत्थान करके उसी को बेटा! अमृत बना करके मेघ मण्डलों के सहयोग से यह वृष्टि प्रारम्भ कर देता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब वृष्टि हो जाती है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है, प्रत्येक मानव अपने में हर्ष ध्वनि करने लगता है।

विचार आता है कि यह चन्द्रमा हमें अमृत देता है। माता की रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है जब माता की चाह को करते उसमें चन्द्रमा की कान्ति को मानो देखो, रसों के द्वारा चला जाता है उसी का समन्वय पुरातत्व नाम की नाड़ी से होता है अमृत का और उसी से मानो पुरातत्व नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है वहाँ से पञ्चम नाड़ी चलती है और पञ्चमनाड़ी से ही मुनिवरो! देखो, नाभि का नाभि से समन्वय होता है। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं। तो नाभि से नाभि का समन्वय हो करके अमृत को पाया जा रहा है, नाना नाड़ियों के द्वारा चन्द्रमा का अमृत प्राप्त हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार चन्द्रमा की विवेचना की और यह कहा कि यह चन्द्रमा ही तो मानो अमृत को बिखरे देता है, नाना वनस्पति अमृता को प्राप्त करते हैं।

देखो, पूर्णिमा का जब दिवस आता है तो वैद्यराज जानते हैं आयुर्वेदाचार्य की बहुत सी औषधि इस प्रकार की हैं जो मानो देखो, पूर्णिमा के दिवस उनका प्रादुर्भाव होता है, अमावस के दिवस वह पूर्ण हो जाती हैं परन्तु देखो, शुक्ल पक्ष में उनका व्यवधान होता है। मेरे पुत्रो! मैं आयुर्वेद के ऊपर तुम्हें विचार देने नहीं आया हूँ केवल यह क्या नाना प्रकार का वनस्पति विज्ञान इसी से उत्पन्न होता है वह आयुर्वेदाचार्य जानते हैं।

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार अपनी विवेचना प्रगट की तो उस समय जब वह मौन होने लगे, तो माता रम्भेश्वरी और राजा जनक ने कहा हे ऋषिवर! वाक तो तुम्हारा यथार्थ है। परन्तु जानना चाहते हैं कि जब यह चन्द्रमा भी नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक बना हुआ है? उन्होंने कहा राजन जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो धीमा धीमा प्रकाश इन तारा मण्डलों का आ रहा है। यह तारा मण्डलों का प्रकाश है मानो देखो, अन्धकार छाया हुआ है वह जाना चाहता है परन्तु वह तारा मण्डलों के प्रकाश में अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है और पगडण्डी का वह पथ प्रदर्शक बन जाता है अपने मार्ग को प्राप्त कर लेता है यह मानो तारा मण्डलों का प्रकाश है।

मेरे प्यारे! देखो, विज्ञानवेत्ताओं ने जब विज्ञान के ऊपर अन्वेषण किया यहाँ बेटा! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक गोत्र के ऋषियों ने और महर्षि भारद्वाज इत्यादियों ने इसके ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। महर्षि विश्वामित्र के यहाँ जब धनुर्याग होता था वहाँ भी प्रायः इस प्रकार का अनुसन्धान होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि की यज्ञशाला में, विज्ञानशाला में जब वह प्रवेश हुए तो जब वह गणाना करने लगे, वह पृथ्वियों की गणाना करने लगे तब उनकी विज्ञानशाला में बेटा! देखो, तीस लाख पृथ्वियों की गणाना की गई। मेरे प्यारे! वह तीस लाख पृथ्वियाँ जब एक समूह बन करके बेटा! इतना विशाल यह सूर्य मण्डल है जिसमें मुनिवरो! देखो, ऐसी ऐसी तीस लाख पृथ्वियाँ उसमें समाहित हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णान किया, उन्होंने कहा हे राजन्! देखो, इतना विशाल यह सूर्य मण्डल है परन्तु जब सूर्य की हम गणाना में लगते हैं सूर्यम् ब्रह्मे एक सहस्र सूर्य मानो इतना विशाल एक बृहस्पति मण्डल जिसमें एक सहस्रसूर्य इसमें समाहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह इतना विशाल मण्डल है और एक सहस्र बृहस्पति मण्डलों का मुनिवरो! देखो, ब्रह्मणे व्रतम् ब्रव्हा

कृतम् देवाः मेरे प्यारे! वेद का वाक कहता है एक सहस्र बृहस्पति मेरे प्यारे! देखो, आरूणी मण्डल में समाहित हो जाते हैं और आरूणी मण्डल इतना विशाल मण्डल है परन्तु एक सहस्र आरूणी मण्डल ध्रुव मण्डल में समाहित हो जाते हैं। एक सहस्र ध्रुव मण्डल मेरे प्यारे! देखो, स्वाति नक्षत्र में ओत प्रोत हो जाते हैं, एक सहस्र स्वाति नक्षत्र पुष्प नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्र पुष्प नक्षत्राः मूलकेतु नक्षत्र में ओत प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र मूलकेतु नक्षत्र मेरे प्यारे! मौन केतु मण्डल में ओत प्रोत हो जाते हैं एक सहस्र मौनकेतु मण्डल मेरे प्यारे! देखो, वृहीत लोक में प्रवेश हो जाते हैं, एक सहस्रवृहीत मण्डल मेरे पुत्रो! देखो, अमृतम् ब्रह्मा गन्धर्वा मम ब्रहे वह गन्धर्वः में प्रवेश कर जाते हैं। तो गन्धर्व बेटा! देखो, इस माला के मनको का अन्तिम मानो मनका कहलाता है बेटा। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार वेद का ऋषि वर्णन करने लगा तो मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा हे राजन्! इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बन जाता है। इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल है और एक अरब पचानवे करोड़ नवासी लाख उनचासवीं हजार और पाँच सौ बावन के लगभग मेरे प्यारे! इतने सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बनती है। इतनी विशाल एक आकाश गंगा है। आकाशम भूतम् ब्रह्मा वर्णास्सुतम् देवत्वाऽम्। मेरे प्यारे! देखो, वेद का उद्गीत गाने वाला कहता है क्या इतने सौर मण्डलों की ऐसी ऐसी आकाश गंगाएँ मेरे प्यारे! देखो, प्रभु के राष्ट्र में अनन्त हैं। एक अरब नवासी करोड़ उनचास लाख और पाँच सौ बावन के लगभग इतनी आकाश गंगाओं की बेटा! एक निहारिका बन जाती है और पौने दो अरब निहारिकाओं की एक अवन्तिका बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषिवर यहाँ आ करके मौन हो जाते हैं वह कहते हैं यम ब्रह्मा वर्णाम् देवत्वाऽम् अमृतम् ब्रहे यह परमात्मा का अनन्त ब्रह्माण्ड है, इस ब्रह्माण्ड के ऊपर हम विशेष चर्चा ने देते हुए। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या हे राजन्! तुम जान गये होगे तारामण्डलों का धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है उसी प्रकाश से हम अपनी पगडण्डियों को ग्रहण कर लेते हैं वह हमें पथ दर्शक करा देते हैं।

मुनिवरो! जब ऋषि मौन होने लगे तो राजा जनक ने कहा हेराजन्! अमृतम् ब्रह्मे देखो, राजा नाम ब्रव्हा कृतम् हे प्रभु! आप तो राजाओं के भी धिराज हैं क्योंकि ऋषि हैं और ऋषि राजाओं के भी राजा होते हैं। हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं जब यह मानो तारामण्डल नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक है? उन्होंने कहा जब यह तारा मण्डल नहीं होता तो हे राजन्! हम मानो अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं जो अग्नि काष्ठ में रमण करने वाली। हमारे वैदिक आचार्यों ने बेटा! चार प्रकार की अग्नि का व्यवधान किया है। सबसे प्रथम अग्नि का नाम गार्हपथ्य है और देखो, गार्हपथ्य नाम की अग्नि है और गृहपथ्य है, वैश्वानर और मुनिवरो! देखो, आह्वनीय चार प्रकार की अग्नियों का व्यवधान किया है। जिस गार्हपथ्य नाम की अग्नि में ब्रह्मचारी तपता है, गृहपथ्य नाम की अग्नि में माता पिता, पति पत्नी तपा करते हैं और मुनिवरो! देखो, वानप्रस्थ देखो, आह्वनीय देखो, वैश्वानर नाम की अग्नि में तपते हैं। आह्वनीय नाम की अग्नि में बेटा! ब्रह्मवेत्ता, महापुरुरुष तपा करते हैं। विचार आता है यह अग्नि जब इसके ऊपर विचार विनिमय होता है तो आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! पच्चासी प्रकार की अग्नि का व्यवधान किया है। जब पच्चासी प्रकार की अग्नियों को स्वीकार किया गया तो यही अग्नि जब वैज्ञानिकों के कुल में पहुँची तो वैज्ञानिकों ने बेटा! अरबों खरबों प्रकार की अग्नि का चयन किया है। यही अग्नि है बेटा! जो शब्द को द्यौ में प्रवेश करा देती है। यही अग्नि है मेरे प्यारे! देखो, जो अणु और परमाणुओं को भ्रमण करा देती है, यही अग्नि है जब परमाणु का विभाजन होता है तो उसमें एक एक सृष्टि दृष्टिपात होने लगती है। आज मैं बेटा! दूरी न चला जाऊँ यह प्रभु का विज्ञान बड़ा अनन्तमयी माना गया है। आज मैं इस विज्ञान के युग ने नहीं ले जा रहा हूँ। विचार विनिमय केवल यह वेद का ऋषि, वेद का मन्त्रों कहता है क्या हम अग्नि को जानने वाले बने। यह अग्नि जब आयुर्वेदाचार्य इसके ऊपर विचार विनिमय करते हैं तो पच्चासी प्रकार की है

श्रौर जब वैज्ञानिकजन इसके ऊपर श्रनुसन्धान करते हैं तो मानो यह श्ररबों खरबों प्रकार की है।

यही है जो शब्द को दूरी पहुँचा देती है। बेटा! एक क्षण समय में मानो यही श्रग्नि की धाराश्रों पर विद्यमान हो करके शब्द बेटा! देखो, मानो देखो, एक हजार नौ सौ श्रमृती वृत्तियों में बेटा! यह पृथ्वी का भ्रमण कर लेता है, यह ब्रह्माण्ड का व्यापक स्वरूप धारण कर लेता है। तो विचार श्राता रहता है मुनिवरो! देखो, इस समय वह शान्त हो गये। श्रमृताम् भूतम् ब्रह्मा वर्णो हे प्रभु! यही श्रग्नि ब्रह्मा श्रग्नि बन करके रहती है जिसमें मानो देखो, ब्रह्म का ब्रह्मवेत्ता श्रपने में बखान करते रहे हैं।

शब्द का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो राजा ने कहा हे प्रभु! श्राप तो श्रनन्तमयी हैं। भगवन्! मैं जानना चाहता हूँ कि जब यह श्रग्नि नहीं होती तो कौन प्रकाश का द्युतक है? उन्होंने कहा हे राजन्! जब मानो श्रग्नि नहीं होती तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। एक मानव देखो, मार्ग में चला जा रहा है श्रन्धकार छाया हुश्रा है परन्तु श्रन्धकार नष्ट हो रहा है श्रौर वह श्रन्धकारम् ब्रह्मे ब्र्व्हे श्रौर वह भयँकर वन में चला जाता है। वह कहता है कि श्ररे, है कोई मार्ग चेताने वाला उस समय द्वितीय जो मार्ग में जो स्थिर है प्राणी वह कहता है श्रा जाश्रो मैं मार्ग में स्थिर हूँ। तो बेटा! उसके शब्द के प्रकाश से श्रपने पथ को वह ग्रहण कर लेता है वह पथ प्रदर्शक बन जाता है शब्द के प्रकाश से। यही शब्द है बेटा! देखो, जब ऋषि मुनि शान्त मुद्रा में रात्रि के काल में जब प्रभु का ध्यानावस्थित करते हैं तो बेटा! परमाणुश्रों का संघर्ष होता रहता है। वह रात्रि के काल में परमाणुश्रों के संघर्ष को वह श्रपने में ग्रहण करते रहते हैं। वही साधक जब श्रग्रणीय बनते हैं तो वह लघु मस्तिष्क में श्रपने शून्य को ले जाते हैं वहाँ एक श्रनहद नाम की ध्वनि होती रहती है। जो श्रनहद नाम की ध्वनि में बेटा! जो

साधक रत्त हो जाता है बेटा! वह परमात्मा के सूक्ष्म जगत में प्रवेश हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् ब्रह्मा वर्णास्सुतेः इसी प्रकार देखो, साधक अपनी साधना कर रहा है। पाण्डित्य इन्हीं शब्दों के कारण वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता रहता है, वेदमन्त्रों के ऊपर देखो, उसकी ही मीमांसा करता रहता है और विचार विनिमय करता हुआ मानो देखो, वह पाण्डित्य बन जाता है, उन्हीं शब्दों के कारण पाण्डित्य कहलाता है। वही शब्द ध्वनि है जो अन्तरिक्ष में बेटा! देखो, भ्रमण कर रही है। वही ध्वनि है जो बेटा! देखो, अग्नि अमृतम् धारम ब्रव्हे कृतम् वह बेटा! देखो, अग्नि को अब अपने में धारण करती रहती है। उसी देखो, जब ध्वनि आती रहती है एक परमाणु के मध्य से जब ध्वनि आती है तो ऋषिजन वैज्ञानिक हो करके उसका विभाजन करते हैं तो बेटा! एक एक परमाणु में से एक एक सृष्टि का जन्म हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने बेटा! देखो, इसके ऊपर बहुत अन्वेषण किया है। वह, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे राजन्! जब यह मानो देखो, प्रकाशाम् भवतप्रहे हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ध्वनि पर ध्वनि आ रही है, ध्वनियों को श्रवण कर रहे हैं उन ध्वनि में अपनी ध्वनि को प्रवेश कर जाते हैं वही ध्वनि मानो देखो, मानव अपने में धारयामि बन जाता है। ध्वनि से ही बेटा! देखो, मानव के आकार को जानने लगता है, ध्वनि के कारण ही शब्द से ही बेटा! देखो, अपनी प्रियता को अपने प्रिय में रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे राजन्! यह शब्द ही हमारे प्रकाश का द्युतक है, इस प्रकाश के कारण ही मानो देखो, हम प्रकाशमान होते रहते हैं। अरे,! वेदमन्त्रों को ध्वनि से गान गाते हैं कि जटापाठ में गाते हैं, कहीं धन पाठ में गाते हैं, कहीं उदात्त, अनुदात्त में गान गाते हैं परन्तु वह ध्वनि पर ध्वनि आ रही है मानव उसमें मानो पाण्डित्य को अपने में ग्रहण कर रहा है।

जब ऋषि ने बेटा! इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा प्रभु! यह शब्द नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक है? मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन

समब्रहे देखो, व्रतम् जब राजा ने यह प्रश्न किया तो ऋषि ने कहा राजन तुम प्रश्न करते चले जा रहे हो परन्तु यह प्रिय नहीं है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का निर्णय मैं तुम्हें अन्तिम निर्णय देता हूँ कि जब मानो यह प्रकाश नहीं होता, शब्द का प्रकाश नहीं होता तो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाते हैं। यह आत्मा इस प्रकाश का द्युतक है, आत्मा के प्रकाश से हम प्रकाशमान होते हैं। आत्मा ही हमारे जीवन का अवृत कहलाया जाता है। जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाता है अरे,! इस समय सूर्य भी अपना प्रकाश दे रहा है, मानव के नेत्रों के भी गोलक ज्यों के त्यों बने हुए हैं परन्तु शरीर में एक आत्मा नहीं है अरे, मानव क्यों नहीं जागरूक हो जाते, क्योंकि आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है। चन्द्रमा अमृत दे रहा है मानो कान्तियाँ दे रहा है एक आत्मा इस शरीर में नहीं है, चन्द्रमा मानो देखो, कान्ति से मानव शून्य हो गया है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि लोक लोकान्तरों की माला बनी हुई है, आकाश गंगाओं की माला बनी हुई है और अवन्तिकाओं की माला बनी हुई है, निहारिकाओं की माला बनी हुई है परन्तु देखो, इस शरीर में आत्मा नहीं है अब ये मानव क्यों नहीं प्रकाशमान हो रहा है? मेरे प्यारे! देखो, आत्मा इस प्रकाश का दूत है, प्रकाश का दूतक है, अमृत है। तो मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा हे राजन्! देखो, वह अग्नि अपना प्रकाश दे रही है, माता अग्नि से, तारतम्य देने वाली अग्नि से प्रकाश कर देती है परन्तु देखो, आत्मा शरीर में नहीं है अरे, क्यों नहीं प्रकाश से प्रकाशित हो जाते? मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में शब्द ज्यों का त्यों निहित रहता है परन्तु देखो, शब्द से शब्द आ रहा है, ध्वनि बन करके आ रहा है अरे, पुकार रहा है परन्तु आत्मा नहीं है क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते, क्यों नहीं मानो देखो, शब्द ध्वनि आती? विचारवेत्ता कहते हैं कि आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है।

आत्मा को जानने की प्रेरणा

अरे, मानव संसार में आने का तेरा अभिप्राय यह है कि इस गृह में रहने वाला

आत्मा है, मानव तू उसको जानने का प्रयास कर। मेरे प्यारे! यह मानव का जो पञ्च लोक वाला शरीर तुझे प्राप्त हुआ है यह पञ्च महाभूत वाला मण्डल है। जब महर्षि जालवी से यह प्रश्न किया कि आत्मा का लोक क्या है तो महर्षि जालवी ने कहा कि आत्माम् भूतम् पञ्च लोकाम् व्रते देवाः यह पञ्च महाभूतों का जो मानव का शरीर है यह आत्मा का लोक है, आत्मा इसी में वास करता है। आत्मा मानो चित्त के मण्डल को ले करके चला जाता है परन्तु शव रह जाता है, शरीर तो यह प्रकाश से शून्य हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद के ऋषि ने कहा हे माम्ब्रहे राजन मानो देखो, हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। आत्मा को जानने का प्रयास करो, तुम महा प्रकाशमान हो जाओगे। तो मेरे प्यारे! देखो, आत्मा को जानना चाहिए। तो विचार, वैज्ञानिकों ने, दार्शनिकों ने बेटा! जब इसके ऊपर नाना प्रकार की टिप्पणियाँ प्रारम्भ की, विचार विनिमय करने लगे तो आत्मा पर आ करके शान्त हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, यह शरीर पञ्च महाभूतों का लोक है, इसमें अग्नि है, आपो है और देखो, वायु अमृते गतम् ब्रव्हा मुनिवरो! तीन प्रकार के परमाणु हैं और मुनिवरो! देखो, वायु अमृतम् देखो, गुरुत्व, तरलत्व, तेजोमयी तीन प्रकार के परमाणु हैं जिसके ऊपर सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है और मुनिवरो! देखो, वायु परमाणुओं को गमन कराती है, अन्तरिक्ष में गमन करते रहते हैं। तो यह पञ्चमहाभूतों वाला यह मेरे प्यारे! यह लोक है जिसमें आत्मा अपना वास करता है। हे मानव! ब्रह्मणे याज्ञवल्क्य ने कहा राजन तुम पञ्च महालोकों वाले भूतम् ब्रह्मा पञ्चभूत वाले लोक को जानो, इसमें आत्मा अपना वास करता है। तुम आत्मा को जानने का प्रयास करो देखो, तुम्हें सुखद प्राप्त हो जायेगा।

आत्मा को जानने का मार्ग

मेरे प्यारे! देखो, आत्मा को जाना कैसे जाए? तो बेटा! मन्त्रों प्राणं ब्रह्मे लोकाम् पञ्चमहाभूतों को जानना होगा और उसके पश्चात आत्मा का व्यवधान होगा। मेरे प्यारे! देखो, आत्मा में अमृतम् प्रकाशाम् वह अमृतमयी प्रकाश में तुम चले जाओगे।

विचार विनिमय क्या आज मैं तुम्हें बेटा! विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और परिचय यह है कि तुम अपनी आत्मा को जानने का प्रयास करो। आत्मा ही मानो देखो, प्रकाश का द्युतक है, यही प्रकाश है। जब यह आत्मा चला जाता है तो नेत्र भी शान्त हो जाते हैं यह वह अग्नि का व्यवधान है। तो यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, एक दूसरी कड़ी को जानते हुए, अन्त में देखो, तुम ब्रह्म के समीप चले जाओगे, आत्मा के प्रकाश में रत्त हो जाओगे। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन। ऋषि राजा जनक और उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने ऋषि के चरणों को स्पर्श करते हुए कहा कि प्रभु आप को धन्य है आप ने हमें अन्धकार से प्रकाश में पहुँचा दिया है, आपको धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! यह उच्चारण करके वह मौन हो गये, सान्तवना को प्राप्त हो गये। तो यह है बेटा! आज का वाक्, अब वेदमन्त्रों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् गतम् मनम् गता ...।

8. नैतिक शिक्षा-920724

जड़ व चेतन के मूल में परमपिता परमात्मा

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि यह संसार दो विभागों में विभक्त होता रहा है एक चेतना में और द्वितीय जड़वत में माना गया है जो चेतना से शून्य है और जो चेतनामयी है परन्तु दोनों के मूल में वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आ रहे हैं। मेरे प्यारे! एक एक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार प्रत्येक वेद का शब्द और मन्त्रों उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है।

वसुन्धरा

हमारे वैदिक साहित्य में उस परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। हमारे यहाँ वसुन्धरा का अभिप्राय यह है क्या जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत हो रहे हैं उसका नाम वसुन्धरा है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु पनपते रहते हैं और माता अपने गर्भ में धारण किए रहती है उसके अङ्ग प्रत्यंगों का निर्माण होता रहता है। परन्तु उसके मूल में भी इससे पूर्व काल में हमने प्रगट कराया था उसके मूल में भी वह परमपिता परमात्मा विद्यमान रहते

हैं। परन्तु हे मनम्! ब्रह्मा वर्णास्सुतम् हे माता! तुझे वेद वसुन्धरा कहता है। वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि जिसके गर्भ में बेटा! हम वशीभूत रहते हैं, नाना प्रकार की बुद्धियों का निर्माण जहाँ होता है, जहाँ बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी का निर्माण होता रहता है। मेरे प्यारे! माता के गर्भ में सबसे प्रथम बुद्धि का निर्माण होता है। बुद्धि उसे कहते हैं जो दृष्टिपात कर लेती है परन्तु मेधा उसे कहते हैं जो उसको दृष्टिपात करके उसको निर्माण में ला देती है उसको मानो अपने में धारयामि बन जाती है और संसार को जानने के पश्चात परन्तु ऋतम्भरा अपने में मौन हो जाती है। और मुनिवरो! जहाँ वह मौन हो करके परमपिता परमात्मा का जो शून्यमयी बिन्दु है मानो उसके समीप और उस बिन्दु को विवेचना में लाना उसको जानने का नाम प्रज्ञावी कहलाता है। तो बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा मेरे प्यारे! देखो, वसम् ब्रह्मा लोकम् ब्रव्हा नाना प्रकार के मानो देखो, उसके रूपान्तर माने गये हैं।

आज मैं तुम्हें आन्तरिक जगत में नहीं ले जा रहा हूँ केवल विचार विनिमय यह कि हम अपने में अपनेपन को जानते चले जाएँ जिससे हमारा जीवन अपने में ही मानो समाहित होता हुआ दृष्टिपात होने लगे।

आओ मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ वसुन्धरा नाम माता को कहा गया है जिस माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण करता रहता है कहीं मनस्तत्त्व का निर्माण है, कहीं मानो चित्त की वृत्तियों का निर्माण हो रहा है तो मेरे पुत्रो! देखो, यह मानव शरीर की प्रतिभा कहलाती है। इसके पश्चात वसुन्धरा नाम पृथ्वी माता को कहा गया है। इस पृथ्वी के गर्भ में कहीं बेटा! देखो, खाद्यान्न पनप रहा है तो कहीं खनिज पनप रहा है नाना प्रकार के इस माता के गर्भ में नाना प्रकार के व्यंजनों का जन्म होता रहता है। जब वैज्ञानिकजन इस मानो पृथ्वी वसुन्धरा के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करते हैं तो इसके गर्भस्थल में नाना प्रकार का खनिज मानो देखो, ओत प्रोत हो रहा है। कहीं जल जैसी धातु को मानो सूर्य की आभा में

इसको तपायमान किया जा रहा है।

जिससे वाहन अपने में गतिवान होता है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। कहीं अग्नि मानो सूर्य की नाना प्रकार की कान्ति के द्वारा मुनिवरो! कहीं खनिजों को तपाया जा रहा है, कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो स्वर्ण जैसी धातु का निर्माण हो रहा है परमाणुवाद देखो, आदान प्रदान हो रहे हैं। तो मेरे प्यारे! यह माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! क्या नहीं है? नाना प्रकार का खाद्यान्न इसके गर्भ में विद्यमान रहता है। नाना प्रकार का अन्नाद इसी से उत्पन्न होता है वह खाद्यान्न कहलाता है। जितना भी प्रत्येक प्राणी को प्राप्त होने वाला खाद्यान्न है वह माता वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान रहता है, मानव उसी में पनपता रहता है। विचार क्या मुनिवरो! जब यह मानव माता के गर्भस्थल में विद्यमान होता है तो माता की नाना नस नाड़ियों के द्वारा यह ओज और तेजोमयी मानो रसों को अपने में प्रदान करता रहता है और जब यह बाह्य जगत में आता है तो माता वसुन्धरा की गोद में आ जाता है यह पृथ्वी माता नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को ले करके मानव को उज्ज्वल बना देती है। परन्तु देखो, जब माता वसुन्धरा के गर्भ से भी यह उपराम होता है तो वह जो चैतन्य देव है परमपिता परमात्मा मानो देखो, उसका वह गान गाने लगता है और यह उसके संरक्षण में परिणित हो जाता है जहाँ बेटा! देखो, वह वेदाम् ज्ञानाम्! भूतप्रव्हा वर्णास्सुते देवत्वाम् मानो जो देवत्व को प्राप्त करा देता है।

मेरे प्यारे! मुझे एक बड़ा आश्चर्यजनक ऋषि मुनियों की वार्ताएँ जब स्मरण आने लगती हैं तो मैं प्रायः देखो, गद्गद हो जाता हूँ क्योंकि ऋषि मुनियों का जो अपने में विचार विनिमय होता रहा है वह बड़ा गम्भीर क्योंकि वह तपोमय माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस माता वसुन्धरा के गर्भ में हमें जाना है और वसुन्धरा नाम उस चैतन्य प्रारम्भ को कहा जाता है जो मानो देखो वेदज्ञ है, प्रकाशक है, अग्निमयी है, आपोमेमयी कहलाता है जो ब्रह्ममयी मानो देखो, श्रोत्रों में विद्यमान रहता है।

जिसे हमारे यहाँ विष्णु के रूप में परणित किया गया है क्योंकि वह पालन करने वाला है। वह विष्णु है और विष्णु ही बेटा! देखो, पालन करता है। जैसे वृक्ष पर मानो देखो, नाना प्रकार के फल आ जाने के पश्चात मुनिवरो! देखो, वह नम्र हो जाता है इसी प्रकार माता के गर्भस्थल से जब हम जैसे पुत्रों का जन्म होता है तो माता भी नम्र हो जाती है, माता में ममतामयी आ जाती है। इसी प्रकार परमात्मा मानो नाना प्रकार से हमारा पालन करता है।

वह नमः है। परमात्मा के राष्ट्र में बेटा! देखो, सदैव प्रकाश रहता है, अन्धकार नहीं रहता इसीलिए वह प्रकाशक है। परमपिता परमात्मा मानो जैसे प्रकाशक कहलाता है अमृमब्रव्हा व्रतम् देवाः बेटा! वह परमपिता परमात्मा ब्रह्म है वह मानो देखो, ब्रह्ममयी कहलाता है। परमपिता परमात्मा की प्रतिभा क्योंकि वह नम्र है इसीलिए मानव को नम्र हो जाना चाहिए।

परमात्मा देखो, अकाय है वह काया से रहित है इसीलिए जब चिन्तन में विराजमान हो तो यह उस वस्तु का चिन्तन करें देखो, जिसमें काया का कोइेई समन्वय नहीं होतेता। मेरे प्यारे! परमपिता परमात्मा निरभिमानी है इसीलिए मानव को अभिमान नहीं करना चाहिए। तो वह परमपिता परमात्मा एक रस रहने वाला है इसीलिए मानव को एक रस रह करके परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में भ्रमण करना चाहिए, भ्रमण करना चाहिए।

आज बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ, आज मैं बेटा! तुम्हें देखो, वहीं राजा जनक के यहाँ ले जाने के लिए सदैव तत्पर रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, राजा जनक के यहाँ क्या और भी नाना प्रकार की वार्ताएँ आती रहती हैं। मुनिवरो! देखो, मुझे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जीवन जब स्मरण आता है तो अन्तर्हृदय गद् गद् हो जाता है। प्रायः देखो, ऋषि मुनियों का जीवन तो सदैव ही विचारणीय रहा है, उनका अनुसन्धान बड़ा गम्भीर रहा है। मेरे प्यारे! वह निश्वृत्तियों

में मानो प्रकाश से वह ओत प्रोत रहने वाला उनका विचार है। तो आओ बेटा! देखो, आज मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मैंने बहुत सी वार्ताएँ बेटा! तुम्हें प्रगट की हैं। मेरे प्यारे! देखो, मानो हुत भूतम् ब्रह्मा लोकाम् वसुतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं परन्तु देखो, चाक्राणी गार्गी अमृतम् विश्वम् ब्रह्मा लोकाम् मेरे प्यारे! न्योदा में वेदमन्त्रों का वह प्रायः अध्ययन करती रहती थी।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की नैतिक शिक्षा

नैतिक शिक्षालयों में जब बेटा! विद्यालयों में जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः कालीन ब्रह्मचारियों को नैतिकता में ले जाते तो नैतिकता में एक समय वह ब्रह्मचारियों को उद्गीत गाने लगे हे ब्रह्मचारियों! तुम याग करो क्योंकि याग करने से ही तुम्हारा मानवीयत्व पवित्रता में परणित होता रहेगा। क्योंकि तुम्हारा मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके तुम वेदज्ञ बन करके ही प्रकाश में रत्त हो जाओगे। तो मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् ब्रहे तो जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज एक समय प्रातः कालीन न्योदामय वेदमन्त्रों का अध्ययन करते हुए उन्होंने कहा कि वेदमन्त्रों कहता है तपम् ब्रहे वर्णास्सुतम् देवत्वाम् हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा जीवन तपोमय होना चाहिए। क्योंकि हमारे यहाँ प्रातःकालीन जब ब्रह्मचारीजन विद्यालयों में ओत प्रोत हो करके बेटा! याज्ञवल्क्य और वह आचार्यजनों ने नैतिक शिक्षा प्रथम दिया करते। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! वह मृत्यु से पार होने का उपदेश देते और यह कहा करते हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारे नेत्रों में अग्नि का वास है इसीलिए तुम नेत्रों को अग्निमयी बना लो और तुम्हारी वाणी में अन्तरिक्ष का, तुम्हारी वाणी में रसों का व्यवधान होता रहता है तुम अपनी वाणी को रसों में मधुर बना लो और रसोमय बनाओ। घ्राण में मानो इसका पृथ्वी से समन्वय रहता है इसलिए पृथ्वी के तुल्य मानो देखो, गुरुत्व सुगन्ध को ले करके इसको अग्रणीय बनाने का प्रयास करो। हे ब्रह्मचारियों! देखो, तुम्हारे जो श्रोत्र इन्द्रियाँ हैं।

इनका सम्बन्ध अन्तरिक्ष से रहता है अपने जीवन को अन्तरिक्षमय बना लो क्या मैं परमात्मा के अन्तरिक्ष में, राष्ट्र में विद्यमान हूँ। जहाँ बेटा! देखो, शब्दों का, एक दूसरे का समन्वय होता रहता है।

मेरे प्यारे! आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी! तुम्हारा प्राणम् में शुन्धामि, चक्षु में शुन्धामि तुम्हारा प्राण अपने में प्रणत्व रहना चाहिए। मेरे प्यारे! जब देखो, ब्रह्मचारी को आचार्य मृत्यु से पार कर देता है और मृत्यु देखो, उसे कहते हैं जहाँ अज्ञान होता है। तो अज्ञान को जब आचार्य नष्ट कर देता है तो ब्रह्मचारी ज्ञान में प्रवेश हो जाता है और ज्ञान क्या है मानो देखो, इन्द्रियों में जो पञ्च महाभूतों का वास रहता है। आत्मा मानो देखो, यह अमृतमयी कहलाता है। तो इसीलिए देखो, नेत्रों में अग्नि है और श्रोत्रों में अन्तरिक्ष, दिशाएँ विद्यमान रहती हैं और मुनिवरों! देखो, प्राणम् ब्रह्मा व्रतम् देवत्वाम् यह अपने अपने स्वरूप में रहते हैं। जब भी विज्ञानवेत्ता बेटा! अपने में अनुसन्धान करने लगा है या साधक अपने में साधना करने लगा है तो इन इन्द्रियों के सम्बन्ध में बेटा! जानता हुआ इनसे वह मृत्यु से पार हो जाता है। इन्द्रियों के विषयों को जानना और जान करके इसके ऊपर अपने जीवन को बनाना ही बेटा! देखो, मृत्यु से पार होना है। हमारे यहाँ मृत्यु का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता, मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं हुआ करती है क्योंकि अज्ञान का नाम मृत्यु है और प्रकाश और ज्ञान का नाम ही मुनिवरो! देखो, अमृतृतमयी जीवन कहा गया है। तो विचार आता रहता है मृत्युञ्जम् ब्रह्मा लोकाम् वर्णास्सुतम् यह संसार सब परिवर्तनशील रहता है, मेरे प्यारे! अपने अपने अव्ययों में परणित हो जाते हैं।

मृत्यु क्या है

आओ आज मैं तुम्हें बेटा! एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जो मैंने बहुत पुरातन काल से ही अपने विचार देने के लिए मैं सदैव तत्पर रहा हूँ। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है एक समय महात्मा जमदग्नि के यहाँ एक सभा का आयोजन

हुआ। मैं विस्तार से नहीं केवल तुम्हें परिचय ही दूँगा जहाँ मुनिवरो! देखो, महाराजा जमदग्नि के यहाँ नाना ऋषि मुनियों का समूह एकत्रित हो गया जिसमें बेटा! देखो, महर्षि प्रव्हाण, महर्षि शिलक, महर्षि दालम्य, देवर्षि नारद और रेवक मुनि महाराज, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता और भी मुनिवरो! देखो, जैसे पिप्पलाद इत्यादि विद्यमान थे और वह महर्षि वैश्मपायन। तो मेरे प्यारे! देखो, उस सभा में महात्मा जमदग्नि के यहाँ वह सभा हुई। तो महात्मा जमदग्नि ने एक प्रश्न किया अमृतम् मृत्यम् ब्रव्हे व्रतम् वृति देवाः तो ऋषि ने बेटा! यह प्रश्न किया हे ऋषिवर! मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित किया कि तुम में कुछ ब्रह्मवेत्ता हैं, कुछ ब्रह्मनिष्ठ हैं और कुछ ब्रह्म जिज्ञासु हो तुम तो मैंने इसलिए एकत्रित किया है क्या मैं जानना चाहता हूँ कि मृत्यु क्या है संसार में जिसके ऊपर मानव सदैव परम्परागतों से व्याकुल रहा है और मृत्युञ्जय बनने के लिए मानव की पिपासा जागरुक होती रहती है। तो यह मृत्यु क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह प्रसंग आया तो ऋषि मुनि सब शान्त हो गए। पारेत्वर ऋषि महाराज ने कहा क्या महात्मा जमदग्नि के प्रश्नों का उत्तर दिया जाए। वेदमन्त्रों कहता है। क्या यह मृत्यु क्या है यह प्रश्न करता है परन्तु वेदमन्त्रों में उत्तर भी प्रायः प्राप्त होता रहता है परन्तु तुमसे जानना चाहते हैं। तो बेटा! देखो, ऋषि मुनियों में एक सांत्वना आ गई। चाक्राणी गार्गी

परन्तु इतने में चाक्राणी गार्गी भी उस सभा में विद्यमान थी। वह बड़ी विदुषी, जब वह वेद का गान गाती थी तो सिंह और सर्पराज उनके चरणों का चुम्बन किया करते थे क्योंकि देखो, अहिंसावादी जो प्राणी होते हैं वह मुनिवरो! देखो, हिंसा को त्याग देते हैं और वह अहिंसक बन करके मेरे प्यारे! अपने प्रभु का गान श्रवण करने के लिए सदैव तत्पर हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई उन्होंने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि मानो देखो, तुम चाहते हो तो मैं इनके प्रश्नों का उत्तर दे सकूँ? ऋषि मुनियों ने कहा अवश्य उद्गीत गाईए। तो चाक्राणी गार्गी ने कहा हे प्रभु! इस शरीर का और आत्मा का दोनों का पृथक पृथक हो जाना ही

मृत्यु कहा जाता है। परन्तु इतने में गार्ग्यपत्य ऋषि महाराज उपस्थित हुए और गार्ग्यपत्य ने कहा हे देवी! इसे तो मृत्यु नहीं कहते क्योंकि मानो देखो, ब्रव्हे व्रतम् आत्मा पृथक है और शरीर का अव्यय पृथक है तो इसको मृत्यु नहीं कहते क्योंकि उनके अस्तित्व ज्यों के त्यों बने रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी बोली प्रभु मैंने तो यही तप साधना की है क्योंकि ऋषि मुनियों का जो जीवन रहा है वह सदैव निरभिमानी रहा है वह निरभिमानता से बोली प्रभु मैंने तो इतना ही जाना है आगे अन्वेषण करती रहूँगी तो इसके ऊपर विचार विनिमय होगा। महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज का निर्णय मेरे प्यारे! इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए और पिप्पलाद मुनि ने यह कहा अमृतम् ब्रह्मा वृत्यम् ब्रव्हे व्रत्याम् अभावाम् भूतप्रव्हाः वेद के ऋषि ने कहा क्या हे ऋषियों! मेरे विचार में तो आता है कि मृत्यु का अभाव है, मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती, यह मृत्यु का अभाव है। मेरे प्यारे! देखो, इसमें नाना प्रकार के प्रसंग उत्पन्न हुए परन्तु देवर्षि नारद मुनि ने इसका समर्थन किया और मुनिवरो! महर्षि प्रव्हाण जी ने भी यह कहा कि वास्तव में मृत्यु का अभाव है, मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती। मेरे प्यारे! देखो, जब यह प्रसंग आया तो बोले कि माता अपने पुत्र के वियोग से मानो वह विवेकनी क्यों हो जाती है? उन्होंने कहा कि उसमें सङ्कल्पाम् भूतम् ब्रह्मा यह केवल सङ्कल्प मात्र है। सङ्कल्प का जब विच्छेद होता है तब भी अपार कष्ट होता है, जब उसका मिलन होता है तो अपार हर्ष होता है। मानो देखो, इसका नाम कृतमयी मृत्यु नहीं बनता। मेरे प्यारे! देखो, सायँकाल का समय था, सन्ध्या का काल हो गया ऋषि मुनियों ने मुनिवरो! देखो, अपने अपने आसन को त्याग करके अपने अपने कक्ष में जा पहुँचे, सन्ध्या में।

महर्षि पिप्पलाद मुनि का अपने आश्रम में प्रवेश

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज बहुत समय के पश्चात गृहस्थ आश्रम में आए। परन्तु उनका आश्रम भी निकटतम था वह वहाँ से भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, अपने

आश्रम में पहुँचे। उनकी देवी ब्रह्मे व्रतम् जब आश्रम में पहुँचे तो उनकी पत्नी शुकुन्तका ने उनके चरणों को स्पर्श किया और चरणों को स्पर्श करके वह व्याकुल हो गई। उन्होंने कहा देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा देव आप इतने समय के पश्चात आश्रम में तुम्हारा पदार्पण हुआ है परन्तु देखो, मेरा एक सात वर्षीय पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। उन्होंने कहा देवी तुम मृत्यु का शब्द उद्गीत रूप में गा रही हो मैं तो इसमें से शास्त्रार्थ और देखो, विचार विनिमय करके आ रहा हूँ। मैंने ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में यह निर्णय दिया है क्या यह मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती, मृत्यु का अभाव है।

महर्षि पिप्पलाद मुनि और शकुन्तका संवाद

उन्होंने कहा तो प्रभु चलो मैं आपके वाक्यों को स्वीकार कर लेती हूँ परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन्! जब यह मृत्यु कोई वस्तु नहीं है तो यह मेरेरा शरीर क्या है? उन्होंने कहा देवी यह परमाणुओं का संघात है। माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु जाता है, बिन्दु में शिशु है, देवताजन मानो इसकी रक्षा करते रहते हैं और वह परमाणुओं का एक बलवती होता रहता है मानो देखो, अमृतम् ब्रह्मा व्रतम् उसमें वायु देखो, उसमें जल परमाणु, तेजोमयी अग्नि के परमाणु और गुरुत्व पृथ्वी के परमाणु मानो देखो, वायु उसमें प्राण देता है इसी प्रकार देखो, अन्तरिक्ष अवकाश देता है और यह हमारे मानव के शरीर का निर्माण होता है। परन्तु बाल्यकाल में देखो, माता के गर्भ से शिशु का जन्म होता है तो वह सूक्ष्म है परन्तु वह परमाणुओं का संघात होता रहता है, वह बलवती होता रहता है बलम् व्रते देखो, युवा अवस्था को प्राप्त हो जाता है। फिर वह जीर्ण हो जाता है जीर्ण हो करके समय पर देखो, पञ्चमहाभूतों का यह जो लोक है यह आत्मा से इसका विच्छेद हो जाता है। परन्तु इसको मृत्यु नहीं कहते यह तो परिवर्तन कहा जाता है।

परमाणुवुवाद कहाँ रहता है।

देखो, जब यह देवी ने श्रवण किया उन्होंने कहा चलो भगवन्! यह वाक भी मैं स्वीकार कर लेती हूँ परन्तु जब यह माता का अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् जब यह शरीर मेरा इस रूप में नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा देवी यही परमाणुवाद मानो कुछ माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा था अमृताम् भूतम् ब्रह्मा वेदज्ञ प्रव्हा लोकाम् वर्णास्सुतम् मानो उसी से यह भाग्य उदय हो रहा था। मेरे प्यारे! देखो, शकुन्तका ने कहा प्रभु यह भी मैंने स्वीकार कर लिया परन्तु जब देखो, माता का गर्भाशय नहीं था तो यह परमाणुवाद कहा रहता था? उन्होंने कहा हे देवी! यही परमाणुवाद मानो कुछ वीरत्व में विद्यमान था और कुछ मानो वीरांगना के रूप में विद्यमान था। देखो, वीरांगना इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्र वीरांगना बन जाती है, विवेक को प्राप्त हो जाती है और देखो, इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला ब्रह्मचारी ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है, वह ब्रह्म की चरी को चरने लगता है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रति को। जो यह दृष्टिपात होने वाला जगत है यह दोनों को ब्रह्म और चरी को एकाग्र करता हुआ अपने में चरिष्यामि बन जाता है।

ब्राह्मण

हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है कि ब्राह्मण किसे कहते हैं? ब्राह्मण कहते हैं जो ब्रह्मणं ब्रह्मे देवत्वाम् जो अपने में ब्रह्म को और ब्रह्म को अपने में स्वीकार करता है मानो वह ब्राह्मण कहलाता है। ब्रह्मवर्चसुतम् ब्रह्मे लोकाम् वाचस्सुतम देवाः याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से जब यह प्रश्न किया गया क्या यह मानो ब्रह्मवर्च क्या है? उन्होंने कहा ब्राह्मण है। जो ब्राह्मण मानो अपने को ब्रह्म में स्वीकार करता है और ब्रह्म को अपने में, अपने को ब्रह्म में जो अपने को स्वीकार कर लेता है वह ब्राह्मण कहलाता है।

अमृत

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब उन्होंने अपनी वार्ता प्रगट की तो अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् तो बेटा! वह ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है और वह ब्रह्मचारी ही देवताओं की सभा में सुशोभनीय होता है जो ब्रह्म और चरी को अङ्गों और उपांगों से जानने वाला है वही मुनिवरो! देखो, देवताओं की सभा में अमृत कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा इनकी रक्षा करने वाला ही मानो देखो, विष्णु कहलाता है, इनकी रक्षा करने वाला ही देखो, आत्मतत्व को प्राप्त होता है। हे विष्णु! आत्माम् भूतम् ब्रह्मा। मेरे प्यारे! वही अमृतम् शकुन्तका ने कहा हे प्रभु! मेरा जो अन्तरात्मा है वह यह पुकार रहा है अमृताम् भूतम् ब्रव्हे देवत्वाम् क्या मैं अमृत को प्राप्त हो जाऊँ। तो देवी ने जब ऐसा कहा तो ऋषि ने कहा देवी अमृत को तो प्राप्त होना ही है।

ब्रह्मवर्चस

मुनिवरो! देखो, आगे अमृतम् ब्रव्हे ऋतम् आचार्यों ने इस प्रकार जब वर्णन किया तो आचार्य की वार्ता को पान करने वाली मेरी देवी ने, उस माता ने कहा हे प्रभु! में जानना चाहती यह भी मैंने स्वीकार कर लिया है परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ क्या ब्रह्मवर्चस् किसे कहते हैं? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी को कहते हैं। क्या ब्रह्मचारी कौन होता है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह है जो ब्रह्म को जानता है। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी कौन है? जो एक एक श्वांस का मनका बना करके बेटा! जो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

विष्णु

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने इस प्रकार वार्ता प्रगट की तो उस समय देवी ने कहा प्रभु यह मैंने स्वीकार कर लिया परन्तु देखो, विष्णु किसे कहते हैं? उन्होंने कहा विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। विष्णु के मानो परमात्मा को विष्णु कहते हैं जो परमात्मा पालन करने वाला है। पालन करने वाला जहाँ भी पालक का प्रसंग

आएगा उसी का नाम विष्णु है। हमारे यहाँ पालना करने वाला परमात्मा उसका नाम विष्णु है। माता पालन करती है उसका नाम विष्णु है। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य पालन करता है उसका नाम भी विष्णु है। यज्ञोमयी विष्णु जो यज्ञ हमारा पालन करता है। यज्ञ कहते हैं जितनी भी सुभावना हैं, सुकामना हैं। मेरे प्यारे! उससे सुपालना का अमृतम् पालना का एक वर्चस्त्व ब्रव्हा वह साधना के मूल में विद्यमान रहता है तो उसका नाम विष्णु है। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना होती रहती है। मैं एक एक शब्द की यदि विवेचना करने लगूँगा तो बहुत समय की आवश्यकता है। मैंने पूर्व कहा है तुम्हें मैं परिचय कराने के लिए आया हूँ।

अन्न

मेरे प्यारे! जब उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया तो पिप्पलाद महाराजा की देवी ने कहा, शकुन्तका ने हे प्रभु! जब मैं आचार्य कुल में अध्ययन करती थी तो मेरे आचार्य ने मुझे सब कुछ वर्णन कराया। मैं यह जानना और चाहती हूँ भगवन्! जब यह वीरत्व और वीरांगनात्व नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? उन्होंने कहा देवी मेरे पिता ने जब सृष्टि का सृजन किया, सृष्टि की संसार की रचना की तो उस समय मेरे पिता ने सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया।

दो प्रकार का अन्न

सबसे प्रथम अन्नादम् भूतप्रव्हा एक ही पौधा है दो प्रकार का वह अन्न कहलाता है। दो प्रकार का अन्न है एक ही पौधे पर एक को मानव पान करता है और एक को पशु पान कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, पशुपान करके दुग्धाहार कराता है, पय दे रहा है और मानव पान करके बेटा! ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। वाह रे मेरे प्रभु तू कितना रचनाकार है एक ही पौधे पर दो प्रकार का अन्न कहलाता है। हे माँ! वसुन्धरा तेरे गर्भस्थल में मानो देखो, कैसे कैसे खाद्यान्न का जन्म हो रहा

है और उसको एक मानव पान करता है ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। एक मेरी प्यारी माता अन्न को भोजनालय में तपा रही है एक को पशुपान करके मुनिवरो! देखो, पय दे रहा है, दुग्ध दे रहा है अपने में अपनेपन को समाहित कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यह एक ही पौधा है और दो प्रकार का अन्न है एक प्राणी का अन्न, मानव का अन्न है यह सबका साझा अन्न कहलाता है।

तीसरा अन्नहुत

तीसरा जो अन्न है उसको प्रहुत कहते हैं जहाँ यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होकर के अग्नि को चरू प्रदान करता है और यह कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके समानाय स्वाहा कह करके बेटा! हुत कर रहा है जिससे बेटा! देखो, अग्नि देवताओं का मुख है और अग्नि के मुखारबिन्द में वह आहुति दे रहा है और वह जब साकल्य प्रदान करता है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है।

बलि

बेटा! मुझे अब एक आख्यिका अब स्मरण आ रही है। एक समय कहते हैं ऋषि मुनियों का समाज एकत्रित हो करके याग के ऊपर विचार करने लगे। उन्होंने विचारा कि यह जो याग है इसको काला हिरण ले गया। जब काला हिरण ले गया तो उस हिरण ने, काले हिरण ने याग को वृत्रासुर को प्रदान कर दिया। जब वृत्रासुर ने मेरे प्यारे! अपने में उसे धारण कर लिया, जब शचि को यह प्रतीत हुआ क्या वृत्रासुर याग को ले करके आ गये हैं वह दैत्य देवताओं की धरोहर को ले आए। यजमान से मानो देखो, वह याग को ले करके अपने अपने में समाहित हो गया है तो मुनिवरो! देखो, शचि इन्द्र के द्वारा पहुँची और इन्द्र से कहा हे इन्द्र! देखो, यह वृत्रासुर विनाश करो अपने वज्र को ले करके वह बेटा! देखो, प्राण रूपी वज्र को लेकर के उस इन्द्र ने मुनिवरो! देखो, वृत्रासुर का हनन किया और वृत्रासुर

जब हनन हो गए तो उससे धीमी धीमी वृष्टि हो गई। वहाँ बेटा! देखो, गऊँ के बछड़े की बलि का वर्णन आया। वैदिक साहित्य में बेटा! देखो, बलि का जो वर्णन आता है तो बलि नाम बेटा! पुरुषार्थ का है, बलि नाम किसी को हनन करने का नहीं है, मानो किसी के प्राणों को नष्ट करना नहीं है। बलि का अर्थ है मेरे प्यारे! देखो, पुरुषार्थ करना। जब पुरुषार्थ से मुनिवरो! जब यह पृथ्वी में वृष्टि हो जाती है। वृत्रासुर कहते हैं मेघ मण्डलों को और शचि नाम विद्युत का है। और इन्द्र नाम वायु का है मुनिवरो! देखो, जब उससे वृष्टि होती है तो गऊ के बछड़ों को ले करके कृषक अपने पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके इसके मांस में बीज की स्थापना कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, यह बलि का अभिप्राय है, इसी से वाजपेयी याग का देखो, व्यवधान का जन्म होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह गऊ के बछड़ों की बलि का अभिप्राय नष्ट करना नहीं है। बलि का अभिप्राय यह है क्या पुरुषार्थ करना। पुरुषार्थ से बेटा! अन्न को और द्रव्य को उत्पत्ति में लाना ही अपने में उत्पन्न करने का नाम मेरे प्यारे! देखो, उसे पुरुषार्थ और बलि के नामों से वर्णन किया गया है। हनन करने का नाम बलि नहीं है, वो तो धूर्तता कहलाती है वह पामर व्यक्ति किया करते हैं इस अकारण कार्य को परन्तु देवत्व का जो बलि का अभिप्राय है वह पुरुषार्थ है। जैसे प्रातःकाल से सायँकाल तक सूर्य अपनी ऊर्ज्वा देता रहता है तो वह ऊर्ज्वा कहते हैं बलम् ब्रव्हे व्रतम् वेद का शब्द आता है कि सूर्य अपनी किरणों की बलि देता रहता है, प्रकाश देता रहता है। चन्द्रमा रात्रि को अपने गर्भ में धारण करके इसको वृष्टिक रूप में अमृत देता रहता है।

तो अमृतृत को भी बलि कहा गया है जो देता है, पुरुषार्थ करता है, जो अपने में यह देखो, निश्चयात्मक रहता है उसका नाम वृत्ति वृतम् बलि अवृताम् वह देने वाले का नाम बलि है। तो मेरे प्यारे! देखो, अपने में धारयामि बनना है तो इसीलिए वेद के आचार्यों ने कहा है क्या हिरण नाम बेटा! धुन्ध का है, उनकी यज्ञ की तरंगों का है और तरंगों से देखो, प्रदूषण समाप्त होता है और प्रदूषण जब नष्ट हो जाता है

तो अमृतमयी बना देता है जगत को। तो मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार उन्होंने परमपिता परमात्मा ने, सृष्टि के पिता ने यह हुत मानो हुत तीसरा अन्न कहलाता है जो अग्नि के मुखारबिन्द में प्रदान किया जाता है।

चौथा अन्न प्रहुत

चौथा जो अन्न है वह प्रहुत कहलाता है जहाँ बेटा! देखो, पुरोहितजन होते हैं। राजा के राष्ट्र में, समाज में पुरोहित होने चाहिए। पुरोहित उसे कहते हैं जो पराविद्या को देने वाला है। जो बेटा! आत्मा परमात्मा की विद्या को देतेता है वह पुरुरोेहित कहलाता है। आओ पुरोहितजनों तुम राष्ट्र और देखो, समाज का कल्याण करो।

पुरोहित

बेटा! मैं जब त्रेता के काल में जाता हूँ और अपने उस काल की वार्ताएँ स्मरण आती हैं तो हृदय गद्गद हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज विद्यमान थे तो वशिष्ठ जी ने कहा हे विश्वामित्र! मेरे विचार में यह आता है कि तुम दण्डक वनों में एक धनुर्याग करो। उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन्!। तो उन्होंने बेटा! उनकी आज्ञा पा करके, ब्रह्मचारियों को ले करके उन्होंने एक धनुर्याग का आयोजन किया। जहाँ मुनिवरो! देखो, धनुर्याग उनका रच गया देखो, ब्रह्मचारी अध्ययन करने लगे। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तुम्हारा याग सम्पन्न नहीं हुआ है? वशिष्ठ ने कहा जाओ तुम राजकुमारों से ही तुम्हारा याग सम्पन्न होगा। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते मुनिवरो! देखो, वह अयोध्या में आ गए। जब अयोध्या में उनका आगमन हुआ, पदार्पण हुआ तो मुनिवरो! देखो, विचारधारा एक बड़ी विचित्र बन गई समाज की। उन्होंने कहा बिना समय के आज एक ब्रह्मवेत्ता का आगमन हुआ इसमें कोई कारण है। मेरे पुत्रो! वह भ्रमण करते मुझे ऐसा स्मरण है क्या वह राजा दशरथ के द्वार पर पहुँचे। राजा दशरथ ने आसन त्याग दिया और आश्चर्य से बोले हे प्रभु!

आज बिना सूचना के तुम्हारे आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा राजन तुम्हें प्रतीत है मैं दण्डक वनों में एक धनुर्याग कर रहा हूँ और मुझे राजकुमारों को प्रदान कीजिए। उन्होंने कहा प्रभु मैं राजा हूँ, मेरा कर्तव्य है तुम्हारे याग को सम्पन्न करने का, यह बाल्य तो किशोर हैं। उन्होंने कहा नहीं मुझे राजकुमार चाहिए। मेरे प्यारे! इतने में यह वार्ताएँ ही हो रही थी इतने में राजलक्ष्मियों का भी तांता बन गया कि ऋषि का आगमन हो रहा है। माता कौशल्या, कैकेई इत्यादियों ने उनके चरणों की वन्दना की और चरणों को स्पर्श करते हुए बोले कहो भगवन्! आज बिना सूचना के आज राजस्थली पे आपका आगमन हुआ है हम कैसे दुर्भागी हैं। मेरे पुत्रो! देखो, जब कौशल्या जी इत्यादियों ने यह कहा तो वह मौन हो गये। उन्होंने कहा कहो राजन क्या चाहते हैं।

ऋषिवर? उन्होंने कहा कि यह राजकुमारों को चाहते हैं एक याग कर रहे हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय तो राजकुमारां को प्रदान कर दो। राजा ने कहा देवियों मेरी इच्छा यह है क्या मैं इनके याग को पूर्ण कराऊँगा, मैं राजा हूँ, मेरा कर्तव्य है। माता कौशल्या ने कहा हे राजन्! यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाले पुत्र यदि एक ऋषि का धनुर्याग पूर्ण नहीं करा सकते तो हमारा गर्भाश्य दूषित हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक कहा तो राजा मौन हो गया और राजा ने चारों राजकुमार ऋषि को अर्पित कर दिये, जाओ तुम याग को सम्पन्न करो। मेरे प्यारे! देखो, ऋषिवर बड़े प्रसन्न हुए। ऋषि ने कुछ अन्न इत्यादि का पान किया और पान करने के पश्चात राजकुमारों को ले करके वहाँ से गमन करते हैं।

बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है मैं कई समय मानो देखो, उनके दीक्षान्त उपदेश में जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा। तो बेटा! उनके यहाँ धनुर्याग होता था। धनुर्याग का अभिप्राय है कि अस्त्रों शास्त्रों की विद्या महर्षि विश्वामित्र मानो देखो, राजकुमारों को दिया करते थे। एक सौ इक्यासी ब्रह्मचारी बेटा! उस विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे। मेरे प्यारे! देखो, वह धनुर्विद्या समय समय कहीं मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज

आ करके उनको उपदेश देते, कहीं धनुर्विद्या में नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण भी होता रहा। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है कि बारह साल, बारह वर्षों में वह धर्नुयाग पूर्ण हुआ। तो बेटा! देखो, वह ऋषि पुरोहित होते हैं और पुरोहित उसे कहते हैं जो राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिए विचारता रहता है। राष्ट्र और समाज का कल्याण करने वालों का नाम पुरोहित कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे देवी! तुम्हें प्रतीत हो गया है कि देखो, एक पुरुहू देखो, यह प्रहुत भी अन्न कहलाता है। अन्न का अभिप्राय यह है जिससे समाज की तृप्ति होती हो उसका नाम अन्न कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, जो अन्न इत्यादि है उससे उदर की पूर्ति होती है और देखो, जो हुतुत करने वाले हैं उससे देवेवताजन प्रस्न्रसन्न होते हैं और पृथ्वी यह नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बनती है और पुरुरोहितजन अपना देखो, ज्ञान का अन्न देते हैं समाज में पवित्रता आ जाती है, समाज में मानो देखो, एक महान विचारों की क्रान्तियाँ आ जाती हैं।

आत्मा का अन्न

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा यह चार प्रकार का अन्न है जो सबका साझा अन्न कहलाता है और तीन प्रकार का अन्न है जो मानो देखो, अपने में आत्मा को जानने में लग जाता है। बेटा! मन, देखो, मन, मन आत्माम् ब्रह्मे कृतम् देवत्वाम् लोकाम् बेटा! देखो, मन, कर्म और विचार यह मन, कर्म और विचार जिससे आत्मा पवित्र होतेता है यह भी बेटा! तीन प्रकार का अन्न है जिससे देखो, आध्यात्मिकवेत्ता अपनी आत्मा को तृप्त करते हैं, आत्मा को बलिष्ठ बनाते हैं जिससे मुनिवरो! देखो, आत्मा मोक्ष का अधिकारी बनता है। तो मेरेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम मन को पवित्र बनाना मन से विचार और देखो, कर्म देखो, यह तीनों ही एक सूत्र के अङ्ग कहलाते हैं यह तीनों का साकल्य बनता है। मन कर्म और विचार का साकल्य बन करके जब बेटा! देखो, ज्ञान रूपी यज्ञशाला में स्वाहा कह करके जब आध्यात्मिकवेत्ता

याग करता है तो बेटा! देखो, वह परम पवित्रता को प्राप्त हो करके और आत्मवत को प्राप्त हो जाता है।

यह है बेटा! देखो, ऋषि ने कहा हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा कि सृष्टि के पिता ने परमपिता परमात्मा ने यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया है जिस अन्न के द्वारा हमारा जीवन पवित्र होता है, समाज महानता में परणित होता है।

परमाणुवुवाद अपने में अपनेपेपन को मेरे प्यारे! देखो, देवी मौन हो गई और देवी ने मौन हो करके कहा हे प्रभु! में जानना चाहती हूँ जब यह सात प्रकार का अन्न नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने कहा हे देवी! यही परमाणुवाद मानो देखो, यह अपने में अपनेपन को ही प्राप्त हो रहा है। हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है इससे हमारे शरीर का निर्माण हुआ अमृतम् ब्रह्मा देखो, जब यह आत्मा इस शरीर को त्याग देता है तो हे देवी! आत्मा जब त्याग देता है तो अपने चित्त के मण्डलों का जो संस्कार होता है उसको ले करके यह सूक्ष्म शरीर इस शरीर से पृथक हो जाता है। हे देवी! देखो, अमृतम् जब यह शव रह जाता है तो अग्नि अग्नि में प्रवेश हो जाता है जल जल में चला जाता है और देखो, यह गुरुत्व पृथ्वी का भाग पृथ्वी में परणित हो जाता है और प्राण वायु में चला जाता है और अवकाश अन्तरिक्ष में चला जाता है और आत्मा अपने किए गए पाप पुण्य कर्मों का जो इसके द्वारा संस्कार होता है उसके अनुसार यह शरीरों को प्राप्त होता रहता है। तो हे देवी! मैं जानना चाहता हूँ जब परमाणुवाद, जब यह मानो देखो, पञ्च महाभूत भी समाप्त नहीं होता, आत्मा भी नष्ट नहीं होता तो मैं मृत्यु को जानना चाहता हूँ यह मृत्यु है क्या संसार में।

मेरे प्यारे! शकुन्तका मौन हो गई और शकुन्तका ने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और यह कहा कि धन्य है प्रभु आपने मुझे अज्ञान से प्रकाश में पहुँचाया, आपको धन्य है। तो मेरे पुत्रो! देखो, उन्हें धन्य कह करके वह मौन हो गई।

परन्तु देखो, ऋषि मौन हो करके बोले देवी मृत्यु भी होती है। उन्होंने कहा कि प्रभु वह क्या? कि एक समय राजा जनक की सभा में महात्मा अर्द्धभाग ने याज्ञवल्क्य मुनि से यह प्रश्न किया था क्या हे ऋषिवर! मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उन्होंने कहा था हे अर्द्धभाग! मत कहो कि मृत्यु की मृत्यु नहीं होती। अरे,! मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है, परमात्मा है क्योंकि उस ब्रह्म को जो जानता है उसकी मृत्यु नहीं हुआ करती। ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नहीं होती। परन्तु देखो, इससे यह सिद्ध हुआ क्या जो परमात्मा को जानता है वह मृत्यु से रहित है, वह ज्ञानी है, वह अव्यय है मानो देखो, जो परमात्मा को नहीं जानता वह मृत्यु को प्राप्त होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने अपनी देवी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए मैंने बेटा! यह संक्षिप्त तुम्हें यह परिचय दिया है मैं इसकी विवेचना किसी काल में करूँगा आज तो केवल मैंने तुम्हें इसकी विचारधारा प्रगट की है।

विचार केवल हमारा यह क्या मृत्यु बेटा! कोई मृत्यु नहीं होती क्योंकि अज्ञान का नाम मृत्यु है और ज्ञान और विवेकेक का नाम ही बेटा! देखो, जीवन माना गया है। जहाँ मानो देखो, इससे अव्यय बन जाता है, रहित हो जाता है वह बेटा! मृत्यु से पार हो जाता है। यमब्रह्म ब्रहे देवत्वाम् वह यमाचार्य की भाँति बन जाता है। जैसे यमाचार्य, मृत्यु को विजय करने वाले को यमाचार्य कहते हैं। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा को जानने वाला ही मृत्यु को और मृत्यु से पार हो जाता है।

जब मानव यह स्वीकार कर लेता है मैं प्रभु के राष्ट्र में विद्यमान हूँ, मेरे अङ्ग संग प्रभु ही रहता है और मैं प्रभु के राष्ट्र में हूँ तो प्रभु के राष्ट्र में बेटा! रात्रि नहीं होती और जहाँ रात्रि नहीं होती वहाँ अन्धकार नहीं होता और जहाँ....... शेष अनुपलब्ध।

9. महर्षि याज्ञवल्क्य और चाक्राणी संवाद-920729

सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में परमपिता परमात्मा निहित

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महमना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गयें हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा निहित है, और वह सर्वत्रता में ओत प्रोत रहते हैं। इसीलिए हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, अथवा परमात्मा के गुणों का वर्णन कर रहा है। गुणाधानं ब्रह्मा वर्णासुतं देवाः वेद का मन्त्र कहता है, उसके गुणों को धारण करना ही मानो उसकी उपासना कही जाती है। परमपिता परमात्मा संसार का रचयिता है, और एक कण कण मे व्याप्त है, कोई परमाणु ऐसा नही है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा जिसके अन्तर्गत में वह विद्यमान न हो समुद्रों की कोई गुफा ऐसी नही है, कोई भी तरंग ऐसी नही है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। कोई पर्वतों की गुफा ऐसी नहीं परन्तु वह मानव की अन्तर्गुफा में भी सदैव विद्यमान रहते हैं, प्रत्येक मानव परम्परागातों से उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में नाना प्रकार की विचारधाराएं प्रायः व्यक्त करता रहा है।

पृथ्वी वरणीय वसुन्धरा है

मुझे वह काल स्मरण रहता है जिस समय शिकामकेतु उद्दालक का यह कथन था उन्होंने एक वेदमन्त्र जब अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में उद्गीत रूप में गाते तो उन्होंने एक वेदमन्त्र उच्चारण किया अमृतं ब्रह्मे कर्माम ब्रव्हा श्रुति तो शिकामकेतु उद्दालक ने कहा हे ब्रह्मचारी! कवन्धि वहाँ विद्यमान थे, ब्रह्मचारी कवन्धि से कहा कि तुम बहुत तुमने बहुत भ्रमण करते हुए मेरे आश्रम में तुम्हारा आगमन हुआ है, परन्तु यह वेद का मन्त्र यह कहता है, यज्ञनं ब्रह्मे पृथ्वी वर्णा हमारे यहाँ पृथ्वी को वरणीय कहा जाता है। यह वरणीय क्यों है, जबकि परमपिता परमात्मा को वरणीय कहा जाता है। तो ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा कि वर्णनं ब्रह्मे पृथ्वी यह जो पृथ्वी इसीलिए वरणीय है। क्योंकि यह वसुन्धरा है, और इसके गर्भस्थल में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ तपता रहता है, और इसके गर्भस्थल में नाना प्रकार का जलाश्य अपने में तपायमान रहता है। तो इसीलिए अपनी वरणीय है, क्योंकि जो भी इसमें समाहित रहता है। वह उसी में मानो देखो, निहित हो करके उसको अपना वरणीय बनाता है। इसी प्रकार माता को भी वरणीय कहा गया है। वर्णनं ब्रह्मा देवत्वां प्रथम ब्रव्हे क्योंकि यह पृथ्वी भी मातृता की आभा में निहित रहती है। हमारे यहाँ पृथ्वी को ममतामयी के रूप में वर्णित किया गया है। जब मुनिवरों! देखो, यह संसार का पिण्ड का निर्माण होता है, तो पिण्ड में यह पृथ्वी अपने में अद्वितीय कहलाती है परन्तु उस पिण्ड में सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का प्रायः दर्शन होता रहता है। तो मेरे प्यारे! जब ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा क्या वाक तो तुम्हारा ब्रह्मचारी यथार्थ है, परन्तु मैं एक वाक और जानना चाहता हूँ कि यह वसुन्धरा इसे क्यों कहा गया है। तो ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा हे प्रभु! इसको इसीलिए वसुन्धरा कहा गया है, क्योंकि वसुन्धरा कहते हैं, जिसमें हम वशीभूत रहते हैं इसी के गर्भ में निहित रहते हैं। तो इसीलिए इसको वसुन्धरा कहा जाता है। वसुन्धरा का अभिप्राय है वसु ब्रह्मणा वर्णासुतं मानो जो जिसमें बसता है, उसी को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया जाता है। तो इसीलिए पृथ्वी को वसुन्धरा कहते हैं। क्योंकि इसमें हम सब बसते हैं, और यह नाना प्रकार का खाद्य और

खनिज पदार्थ देता रहता है। जब वैज्ञानिक जन इसके गर्भ में प्रवेश करते हैं, तो इसके गर्भ में मानो परिणित हो जाते हैं। तो यह नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को जानने वाले वैज्ञानिक नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हैं, ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा हे प्रभु! एक समय मैं और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तत्त्व मुनि महाराज के द्वारा पंहुचे तो महर्षि तत्त्व मुनि महाराज ने हमारा बड़ा आश्रय ब्रहे मानो स्वागत किया तो प्रभु! उस सयम देखो, ब्रह्मणे व्रत्यं तत्त्व मुनि महाराज के आचार्य ने एक प्रश्न किया यह वसुन्धरा क्या है।

सर्वत्र ब्रह्माण्ड वसुन्धरा

तो उन्होंने कहा कि यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड ही वसुन्धरा के रूप में वर्णित रहता है। मानो इसमें जो वशीभूत रहता है, एक मण्डलों की माला बनी हुई है, और एक दूसरी माला, माला को प्रभावित कर रही है। जिस प्रकार प्राणी प्राणी में एक दूसरें में कटिबद्ध हो रहा है। जैसे माता का पुत्र माता में कटिबद्ध है, और वसुन्धरा में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में वशीभूत रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह ब्रह्मचारी कवन्धि ने जब ऐसा कहा तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा तुम यथार्थ हो क्योंकि तुम अपना मन्तव्य नही, केवल ऋषि मुनियों का जो मन्तव्य है। उसका तुम अपने में गुणगान गाते रहे हो। इसीलिए तुम्हारा अध्ययन पवित्रतव कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार वसुन्धरा के सम्बन्ध में हमारे यहाँ नाना प्रकार का प्रसंग आता रहता है। परन्तु वसुन्धरा का अभिप्राय यह कि जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत रहते हैं। इसीलिए परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा कहा जाता है। क्योंकि वसुन्धरा के गर्भ में ही परमात्मा के गर्भस्थल में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड निहित रहता है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तर इसी में परणित हो जाते हैं तो विचारवेत्ता यह कहते हैं कि अमृतं ब्रह्मा वेदां भूतप्रव्हा परमात्मा को वेदमन्त्रों में बेटा! विभु के नाम से वर्णन किया गया है, क्योंकि हमारे यहाँ दो प्रकार के विश्वस्त माने जाते हैं। एक अणु है, एक विभु है, तो अणु का मानो देखो, विभाजन हो जाता है। परन्तु देखो,

विभु का विभाजन नही होता। विभु तो एक एक कण कण में व्याप्त रहता है। तो इसीलिए परमपिता परमात्मा को विभु के रूप में वर्णित किया गया है। विभां भूतं ब्रह्मा विभाम् ब्रव्हे तो वेद का ऋषि कहता है कि वह तो मानो देखो, विभु के रूप में वर्णित रहता है परमाणु का जब मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ एक समय देखो, कुछ ब्रह्मचारी जन कुछ विज्ञानवेत्ता उनके समीप पंहुचे, उन विज्ञानवेत्ताओं में बेटा! देखो, महर्षि प्रवाहण और दालभ्य और शिलभ क्योंकि तीनों ब्रह्मवेत्ता भी थे, और ब्रह्मवेत्ता होने से विज्ञानवेत्ता भी थे दोनों प्रकार के विज्ञान के ऊपर मानो अधिपथ्य रहता क्योंकि मानो उनका विज्ञान अपनें में अद्वितीय कहलाता था।

परमपिता परमात्मा अणु या विभु

तो ब्रह्मचारी कवन्धि ने ये कहा अमृतं ब्रह्मा वर्णसुते हे प्रभु! देखो, वह उद्दालाकां कायां भूतं ब्रह्मे आज्ञा ब्रीहि कृतं देवाः जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ये कहा कि महाराज! आपां ब्रहे वृत्ति देखो, दालभ्य बोले कि हे प्रभु! मैं ये जानना चाहता हूँ कि परमात्मा अणु है, या विभु है, उन्होनें कहा विभु किसे कहते है। तुमने अब तक क्या जाना है। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि प्रवाहण ने कहा कि प्रभु! हम तो परमपिता परमात्मा को विभु और अणु दोनों स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा एकोकी रूपां एकामि दुश्रम ब्रह्मे व्रतं वेद का मन्त्र कहता है कि मानो देखो, एक ही पर आचरण किया जाता है, द्वितीय पर आचरण नही किया जाता। इसीलिए तुम्हारा ये वाक अकथनीय हो जाएगा, इसीलिए कथनं ब्रह्मा व्रत्यं देवत्वां तुम कथन के वाक्यों को प्रगट करो। तो मेरे प्यारे! देखो, वह प्रवाहण जी ने कहा प्रभु! मैं इतना नही जानता तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा तो जानने के लिए सदैव तत्पर रहो। उन्होंने कहा कि जितने अणु थे, ब्रह्माण्ड में अब तुम दृष्टिपात करो तो बेटा! देखो, सब ऋषि विद्यमान हो गएं, उन्होंने रेणकेतु नाम के एक परमाणु का विभाजन किया तो एक एक परमाणु में बेटा! सर्वत्र सृष्टि का सृजन होने लगा उन्होंने कहा एक

एक परमाणु में देखो, सृष्टि का दर्शन है तो यह मानो देखो, अणु विभु नही हो सकता। क्योंकि विभु सर्वत्रता में विद्यमान रहता है तो इसीलिए अणु सर्वत्रता में विद्यमान नही अणु के गर्भ में वह व्याप्त रहता है, इसीलिए देखो, वह विभु कहलाता है। जैसे यागां भूतं ब्रह्मा लोकां जैसे एक मानव देखो, उसमें वशीभूत रहता है उसी में मुनिवरों! देखो, उस की प्रथा कहलाती है, और उसी में वह निहित हो जाता है। तो आओ, मुनिवरों! देखो, मैं तुम्हें दर्शनों के क्षेत्र में नही ले जा रहा हूँ, विचार विनिमय केवल यह कि महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ अणु और विभु के ऊपर बड़ा विचार विनिमय होता रहा, परन्तु ब्रह्मचारी कवन्धि ने एक ही वाक कहा सम्भूति ब्रह्मा लोकां वे परमपिता परमात्मा तो सम्भूति है। उन्होंने कहा सम्भूति तो है, परन्तु सम्भाम् भूतं ब्रह्मे अणां ब्रहे भूव कृतं तो मुनिवरों! देखो, वह प्रवाहण ने कहा कि महाराज! विभु है। वह वह उसमें अवृत्तियां तो है, तो वह उसमें इस प्रकार मुनिवरों! देखो, अपना कथन कहते हुए वह शान्त हो गएं। अपने आसन पर विद्यमान हो गएं। तो महर्षि प्रवाहण मुनि महाराज शिलभ और दालभ्य इन सर्वत्र वैज्ञानिको ने बेटा! परमात्मा को देखो, वे परमपिता परमात्मा को देखो, वह विभु के रूप में स्वीकार किया, अणु के रूप में नही अणु में प्रतियां होती हैं, जो एक दूसरे को नही जान पाता, परन्तु देखो, अणु का एक तारतम्य बन जाता है। वह किसी की चेतना से चेतनित हो करके मेरे प्यारे! एक दूसरे का गठन करता रहता है।

जीवात्मा अणु

तो आओ, बेटा! मैं इस सम्बन्ध में एक दूसरे में नही ले जा रहा हूँ, विचार विनिमय केवल यह कि आज का हमारा वाक क्या कह रहा है, ब्रह्मचारी अमृतं देखो, वह शिकामकेतु उद्दालक की चर्चाएं मैं कर रहा था, शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ नाना प्रकार के परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण होता रहा परन्तु देखो, उनमें अणुनाम भूतं ब्रह्मा देखो, भूत आत्मा को जानने का उन्होंने प्रयास किया आत्मा देखो, पञ्च महाभूतों के लोक में रहने से वह पञ्च महाभूतों देवां वह पंचामि कहलाता है। तो

मेरे प्यारे! देखो, जब उसका पंचाम् समाप्त हो जाता है। तो मोच्चां भूतं ब्रह्मे आमत्व प्रव्हे तो यहाँ जीवात्मा को देखो, बेटा! ऋषि ने अणु के रूप में परणित किया है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल ये कि परमात्मा विभु हैं, और जीवात्मा अणु के रूप में विद्यमान रहता है। वेद का मन्त्र कहता है, अणु ब्रह्मे कृतं ब्रव्हा आत्मां तो मेरे पुत्रों! देखो, वह इस प्रकार का अपना निर्णयात्मक अपना विचार देते रहे हैं, तो आज मैं बेटा! देखो, इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं केवल यह कि देखो, कि आज का हमारा वाक क्या कहता है क्या ऋषि मुनि अपने में बेटा! देखो, अपने में निहित होते रहे हैं। ये तो पृथ्वी की चर्चा कर रहा था, पृथ्वी वसुन्धरा है, और वसुन्धरा माता है, और वसुन्धरा नाम बेटा! उस परमपिता परमात्मा का जिसके गर्भस्थल में सर्वत्र ब्रह्माण्ड मेरे प्यारे! देखो, ओत प्रोत रहता है सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी में निहित रहता है। वह अमृतं वे परमपिता परमात्मा अपने मानो देखो, वसुन्धरा कहा जाता है। इसका प्रत्येक वेदमन्त्र अपने में गुणगान गा रहा है, प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! अपनी आभा प्रगट कर रहा है, अपने में अपने पन को दर्शा रहा है।

आध्यात्मि और भौतिक विज्ञान एक दूसरे के पूरक

तो आओ, मुनिवरों! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनि एक एक वाक पर अनुसन्धान करते रहे हैं। विचार विनिमय करते रहे हैं विज्ञान के गर्भ में जाने का प्रयास करते रहे हैं। क्योंकि विज्ञान अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है, और परमपिता परमात्मा का जो विज्ञान है। वह अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि वह आत्मां भूतं बेटा! क्योंकि आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों का परस्पर सम्बन्ध रहता है, और एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो इसीलिए मानो देखो, एक दूसरे में समाहित रहते हैं इसीलिए वे परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है।

महर्षि याज्ञवल्क्य और चाक्राणी संवाद

तो आओ, मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है चाक्राणी गार्गी की वे चर्चाएं मुझे स्मरण है, जब राजा जनक के यहाँ, महर्षि याज्ञवल्क्य और उन दोनों का मुनिवरों! देखो, संवाद होता रहा है उनका दोनो का विचार विनिमय होता रहा है, तो चाक्राणी गार्गी अमृतं ब्रह्म देखो, महर्षि राजन्नं ब्व्हा देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान है, परन्तु राजा जनक ने देखो, एक सौ एक गऊओं के सींगों पर स्वर्ण को मथ करके और उन्होंने अपनी ये घोषणा की जो ब्रह्मवेत्ता विशेष है, वह इन गऊओं को अपने आश्रम में ले जा सकता है। तो बेटा! देखो, उस सभा में ब्रह्मचारी कृतिका और देखो, अश्वल इत्यादि सर्वत्र ऋषि मुनि उसमें विद्यमान थे। इमसें महात्मा अर्द्धभाग और दिग्ध भी थे, और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हो करके ब्रह्मचारियों से बोले कि हे ब्रह्मचारियों! जाओ इन गऊओं को यज्ञदत्त ब्रह्मचारी से कहा अपने आश्रम को ले जाओ। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी गऊओं को ले गएं। अब ब्राह्मण अब ब्रह्मवेत्ताओं में मानो एक क्रान्ति हुई, उन्होंने कहा क्या यह याज्ञवल्क्य सब बुद्धिमानो से महान है, ये अपने को ब्रह्मवेत्ता जानता है, महात्मा दिग्ध ने कहा हे ब्रह्मवेत्ता! क्या तुम अपने को ब्रह्मवेत्ता स्वीकार करते हो, उन्होंने कहा नही मैं ब्रह्मवेत्ता नही हूँ, तुम बारी बारी प्रश्न करो, मैं जानता हूँगा, तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे सकूंगा। मुझे तो आश्रम के लिए आवश्यकता है, क्या यह ब्रह्मचारियों को आवश्यकता है गऊ ले जाने की यह गऊ ले गएं हैं आप बारी बारी प्रश्न करो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा दिग्ध अपने आसन पर विद्यमान हो गएं महाराज अश्वल ने कहा क्या तुम अपने में ब्रह्मवेत्ता हो उन्होंने कहा तुम बारी बारी प्रश्न करो इस वाक को बारम्बार तुम पुनरुक्ति वाक क्यों उद्गीत गा रहे हो।

चाक्राणी का महर्षि याज्ञवल्क्य से प्रश्न

मेरे प्यारे! देखो, जब इन्होंने इस प्रकार उद्गीत गाया तो वह अपने में मौन हो गएं शान्त हो गएं मानो सभा समं ब्रह्मे सान्त्वना को प्राप्त हो गएं सब ब्रह्मवेत्ता तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और चाक्राणी गार्गी ने कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं इस ब्रह्मवेत्ता से प्रश्न करूं। उन्होंने कहा अवश्य कीजिए। तो मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी ने कहा हे प्रभु! मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहती हूँ। उन्होंने कहा अवश्य कीजिए, और यदि मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर जानता हूँगा। तो अवश्य दूंगा मेरे प्यारे! ऋषि मुनि निरभिमानी होते हैं, क्योंकि परमात्मा निभिमानी है। इसीलिए उसका जो भक्तजन है। वह भी निरभिमानी होता है। तो उस सयम देखो, ऋषि ने कहा क्या मैं जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर अवश्य दूंगा मेरे प्यारे! चाक्राणी ने कहा क्या प्रभु! आप जानते हैं आप मेरे प्रश्न का उत्तर अवश्य दीजिए। उन्होंने कहा तुम प्रश्न करो, उन्होंने कहा प्रभु! मेरे भुजों में मानो एक तरकश है, और उस पर देखो, वह तीर कसा हुआ है, अमृतं देखो, कमान पर तीर कसा हुआ है। उसके लक्ष्य को जानना चाहती हूँ अमृतां ब्रह्मे दोव प्रव्हा हे प्रभु! उसका लक्ष्य क्या है? तो उस समय देखो, ऋषि ने कहा हे देवी! तुम यह क्यों जानना चाहती हो? उन्होंने कहा प्रभु! मेरे भुजों में जो कमान है उस पर एक मानो देखो, एक तीर कसा हुआ है लक्ष्य तो उसका कोई न कोई होना चाहिए। उन्होंने कहा अवश्य। तो ऋषि चिन्तन करने लगे। यह तो प्रश्न मानो देखो, क्षत्रिय का तो नही है ये ब्रह्मवेत्ताओं का प्रसंग है, तो उसने कहा मानो तुम्हारे प्राण रूपी कमान पर मन रूपी तरकश कसा हुआ है, और वह मानो उसका लक्ष्य ब्रह्म है। ब्रह्मण्ड ब्रह्मे ब्रह्मो व्रतं तुम्हारा जो मन और प्राण है। इन दोनो को एकाग्र करते हुए मानो तुम तरकशं ब्रहे देखो, लक्ष्य को प्राप्त हो जाओगे। तो वही लक्ष्य ब्रह्म कहा जाता है। प्रत्येक मानव नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है, नाना प्रकार के द्रव्यपति बनना चाहिए, जिससे मैं सुखद हो जाऊं और नाना प्रकार के प्राणायाम करता है साधना करता है। साधना में रत्त होता है। इसीलिए कि मैं प्रभु को प्राप्त हो जाऊं मैं सुखद को प्राप्त हो जाऊं, मेरे प्यारे! नाना प्रकार का सुअध्याय करता

है। दर्शनों का अध्ययन करता है, परन्तु उसका एक ही मन्तव्य है कि मैं सुखी हो जाऊं। मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊं, और मैं परमात्मा को प्राप्त कर सकू। मैं अपने लक्ष्य को जा संकू तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा देवी! इसीलिए प्रत्येक मानव अपने अपने क्रियाकलाप में लगा हुआ है, माता कहती है कि मेरे पुत्रां भूतं ब्रह्मा मानो मेरा पुत्र मेरे लिए सुखद होगा, पति मेरे लिए सुखद होगा, यह संसार सुखद की कामना करता रहता है। परम्परागतों से परमात्मा की आभा में रत्त रहता है हे देवी! देखो, तुम्हारे ये जो प्राण है, ये कमान है और मन मानो देखो, तीर कसा हुआ है, उसका लक्ष्य ही ब्रह्म कहा जाता है, और ब्रह्म को जानने के लिए मानव नाना प्रकार का प्रयास करता रहा है। आज से नही परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके ही मानव वर्तमान के काल तक प्रयास में लगा रहा है। और देखो, ये गति चलती रहेगी क्योंकि इन्द्रियों से परे अवर्चनीय विषय बन जाता है। इसलिए उसमें मानो देखो, अपने में मानव भ्रमित हो जाता है। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा देवी! तुम मानो देखो, अपने तरकशं ब्रह्मणे व्रते प्रत्येक मानव देखो, अन्त में जब ये लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है, तो लक्ष्य उसे कहते हैं, जहाँ हमारे अन्तःकरण में जो नाना प्रकार के संस्कार हैं। उन संस्कारों से विहीन होने का नाम ही मानो देखो, मोक्ष की प्रणाली कही जाती है। और जब ये देखो, संस्कारों से विहीन हो जाता है, विहीन हो जाना ही मानो देखो, प्रभु के उस आनन्दमयी पगडण्डी को प्राप्त करना है। मेरे प्यारे! देखो, आत्मा के तीन प्रकार के जो शरीर हैं, सबसे प्रथम स्थूल, सूक्ष्म और कारण कारणाति ब्रह्मे कारणाति विजयं ब्रव्हा व्रतं देवत्वां लोकाः ये कारण लिंग में प्रवेश हो करके ही मानो देखो, अपने प्रभु के आनन्द की पगडण्डी को ग्रहण कर सकता है।

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, जिस समय देखो, महर्षि अङ्गिरस गोत्र मेरे प्यारे! देखो, अङ्गिरस गोत्र में एक व्रेतकेतु ऋषि थे व्रेतकेतु अङ्गिरस उन्हें कहा जाता था वह एक समय बेटा! देखो, मौन हो गएं, और अपने चित्त के संस्कारों

को अपने क्या देखो, धारणा के आधार पर वह अपने में धारयामि बनाने लगे। और ये विचारने लगे कि मैं इनको प्रत्यक्ष करना चाहता हूँ। उन्होंने एक पिच्चासी वर्ष का मौन रह करके और प्राण से अमृतां वृत्तियों को प्राप्त करके अपने चित्त के संस्कारों को जानने का प्रयास किया, चित्रं रथं ब्रह्मा चित्रों देवतवा चित्र का ही क्योंकि रथ बनता है, और वह रथ ही द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है। तो इसीलिए देखो, संस्कारों को और रथ को जानने का उन्होंने प्रयास किया तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा देवी! तुम्हारे मानो देखो, तुम्हारे भुज में जो मानो तरकश कसा हुआ है, कमान है, कमान के ऊपर जो तरकश है, मानो उसका लक्ष्य ही ब्रह्म है। तुम ब्रह्म को पाना चाहते हो, अन्तःकरण में संस्कारों को परमात्मा को समर्पित करना चाहते हो, इसीलिए तुम्हारा जो लक्ष्य है। वही ब्रह्म है। तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें दर्शनों की चर्चा में चला गया हूँ। यह दार्शनिक विचार अपने में बड़ा अद्वितीय कहलाता है हमारे यहाँ ऋषि मुनि अपने में देखो, प्रायः अपनी आभा को प्राप्त होते रहे हैं, आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नही करूंगा विचार विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनिवरों! देखो, जब उन्होंने प्रश्न किया तो अमृतां ब्रह्मे देवत्वाम् तो उन्होंने मोक्ष की पगडण्डी तक चाक्राणी के प्रश्नों का उत्तर दे दिया, चाक्राणी अपने में मौन हो गई और मौन हो करके बोली कि प्रभु! आपको धन्य है और उन्होंनें ये घोषणा की कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! ये ऋषि तुम्हारे में विशेष ब्रह्मवेत्ता है इसीलिए तुम मानो बारी बारी प्रश्न करोगे तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देगें तुम्हारी शङ्काओं का निवारण हो जाएगा।

तीन आहुति

मेरे प्यारे! देखो, वह तो अपने में शान्त हो गई। ब्रह्मचारी देखो, उनके पुरोहित अश्वल अपस्थित हुए और अश्वल ने कहा कि प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ क्या ये देखो, ये तीन प्रकार की यज्ञमान आहुति देता है, एक चटा चट है, एक अवृत्ति है, एक पुनारुक्ति है इसका अभिप्राय क्या? उन्होंने कहा तीन प्रकार के देखो, शरीर में

विचार बनते रहते हैं। सबसे प्रथम जो चटा चट है, वह राज्य वह रजोगुण कहलाता है। और मानो देखो, जो निस्वार्थ होता है, वह सतोगुण कहलाता है। और मानो देखो, अमृतां तत्त्वों को प्राप्त होता है, वह मानो देखो, पुत्राम् भूतं यागाम् देखो, चित्राम् भूतं यागा वह एक प्रकार का याग करता है, तो वह तमोवृत्तियों में रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! तीनों में सतोयुग की प्रतियां कहलाई जाती हैं। तो यह विचार देते ऋषि अपने में मौन हो गया, अश्वल ने यह वाक स्वीकार कर लिया तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या मानव के तीन प्रकार के विचार हैं। तीन प्रकार की प्रतिभा में मानव सदैव रत्त रहता है। सबसे प्रथम सतोगुण है, सतोगुण कामना का मूलक है, और रजोगुण वह भी पालना का अनुशासन का मूलक कहलाया जाता है, और तमोगुण मुनिवरों! देखो, उत्पति के मूल में रहता है। इसीलिए परमपिता परमात्मा तीनों गुणों वाला है, वह परमात्मा इसीलिए पालक है, रक्षक है और मुनिवरों! देखो, उत्पति के मूल में विद्यमान है। तो परमपिता परमात्मा के ऊपर हमारा सदैव अन्वेषण होना चाहिए। विचार विनिमय होना चाहिए जिस विचार को ले करके हम प्रायः अग्रणीय बनते चले जाएं और हम देखो, अपनी मानवीयता में सदैव तत्पर हो जाएं और आत्मा और मन मस्तिष्क एकाग्र करते हुए परमात्मा को अपने को समर्पित करते रहें। ऐसी बेटा! देखो, हमारी यह मनो भावना रहती है। ऐसा ही हमारा वेद का मन्त्र कहता है। आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करूंगा विचार विनिमय क्या क्या हम अपने में मानो याज्ञिक बनें रहें और अपने मन से अपने जीवन को मानो एकाग्रता में ले जाएं। जिससे हमारा मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके परमपिता परमात्मा के लिए हम सदैव तत्पर हों, और उसको जानते रहें तो यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह क्या हम अपने को देखो, पृथ्वी को देखो, वसुन्धरा के रूप में वर्णित करते रहें, और माता वसुन्धरा है। और प्रभु भी वसुन्धरा के रूप में वर्णित रहा है, तो इसीलिए हमारा जीवन माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में सदैव विचार विनिमय करता रहे। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा, तो मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट

करूंगा आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे । ओ३म् देवाः आभ्यां मनु रथं आप्या ऋवा रथा। ओ३म् सर्वं मन्थमा वाचन्नमा...।

10. शिव की याचना-920730

परमपिता परमात्मा सदैव नवीनता में परिणत

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जो रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी सदैव अनन्तमयी माना गया है, क्योंकि ज्ञान सदैव नवीन बना रहता है, ज्ञान और विज्ञान में कदापि भी वृद्धपन नही आता। क्योंकि वह सदैव नवीन बना रहता है, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक, वह सदैव नवीनता में सदैव परणित रहा है। तो इसीलिए हमें उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव अन्वेषण करना चाहिए। क्योंकि वह सदैव नवीनतम रहता है, और प्रत्येक मानव की यह प्रबल इच्छा बनी रहती है कि मैं नवीन से नवीन बन जाऊं। मेरा जीवन सदैव नवीन बना रहे, एक मानव वृद्धपन को प्राप्त हो गया है, अवस्था भी जीर्ण हो गई है, परन्तु उसके पश्चात भी उस मानव के हृदय में यह कामना रहती है, कि मैं नवीन बन जाऊं और मैं पुनः से युवा अवस्था में चला जाऊं। जैसे ज्ञानी सदैव युवा रहता है, परमात्मा का ज्ञान भी सदैव वृद्धपन को प्राप्त नही होता, तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव विचार विनिमय करते रहें। क्योंकि उस पर मानव चिन्तन करता हुआ उबता नही हैं। वह उससे घृणित नही होता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा घृणा में नही हैं, वह घृणा से सदैव पृथक रहते हैं। तो इसीलिए वह घृणात्मक नही है। हम उस परमपिता परमात्मा जो, घृणा से और द्वेष से मानो वंचित रहता है। तो उस परमपिता परमात्मा का ध्यानवस्थित हो करके हमें घृणा, राग और द्वेषों से पृथक रहना चाहिए। तो इसीलिए हमारे यहाँ

वेद का प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के नवीनतम के ऊपर विचार विनिमय करता रहा है। और उसकी नवीनता का प्रत्येक वेदमन्त्र में मानो बखान होता रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा जो हमारा देव है, वैदिक आचार्यों ने उसे महादेव के नाम से वर्णन किया है। कि वह महादेवों का भी देव है, जिसमें देवता सदैव रमण करते रहते हैं। वह महादेवां भूतं देवात्वाम् ब्रह्मा वह देवता कहलाता है। तो इसीलिए हम महादेव की उपासना करते रहें, जो मानव के मध्य में रहता है मानव की अन्तरात्मा में रहता है। तो हम उस महादेव की इसीलिए परमात्मा का नामोकरण नाना प्रकार का वाची शब्द आता रहा है। क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में दो प्रकार के शब्द होते हैं। एक यौगिक होता है, तो द्वितीय रूढ़ि होता है। तो वह जो यौगिक शब्द उस यौगिकता के ऊपर सदैव हमें विचार विनिमय करना चाहिए, और रूढ़ि को त्यागना चाहिए। क्योंकि बिना रूढ़ि के वास्तव में पालन नही होता है। परन्तु रूढ़ि के गर्भ में भी यौगिकवाद रहना चाहिए, और वह यौगिकवाद एक साम्यता में परणित रहता है।

शिव

साम्य विचारों का नाम हमारे यहाँ रूढ़ि से पृथक होना है, और उसके यौगिकवाद में परिवर्तित होना है, जैसे हमारे यहाँ शिव का वर्णन आता रहा है। शिव के दो प्रकार के पर्यायवाची माने गएं हैं, एक शिव मानो देखो, रूढ़ि में रहता है, वह रूढ़ि क्या कि शिव देखो, राजा रहा है, वह शिव देखो, हिमालय और पृथ्वी का राजा भी शिव रहा है। जैसे त्रेता के काल में लंका का स्वामी महाराजा शिव रहा है। क्योंकि एक समय लंका अमृतं शिवं ब्रह्मा देखो, शिव के राज्य में सूर्य भी उदय नही और अस्त नही होता था। क्योंकि पृथ्वी के चंहु और देखो, शिव का राज्य रहता था। मेरे प्यारे! देखो, हिमालय से ले करके ये लंका स्वामी भी शिव कहलाता है। और हिमालय का राजा भी शिव था मानो देखो, कोई स्थली नही जहाँ शिव का राज्य न हो। राज्य का अभिप्राय अनुशासन और अनुशासन में जहाँ प्रजा ऊँचे

विचारों वाली और अनुशासित हो उसका नाम शिव राज कहा जाता है। परन्तु उसी प्रकार शिव नाम जहाँ राजा को कहा गया है। वही शिव नाम बेटा! देखो, यौगिकवाद में शिव कहते हैं, जो हम स्वतः अपने में अनुशासित हो और मानो देखो, है मानो देखो, यह यौगिक शब्द है, जहाँ शिव के शृङ्गार में मानो परणित होता है। तो शृङ्गार में शृंगारित करता है और वह मुनिवरों! देखो, शिव नाम अमृतं देखो, समाधिष्ट होने वाला है। जैसे बेटा! मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय वर्णन कराया क्या शिव के कण्ठ में मानो देखो, सर्पों की माला रहती है। सर्पों की माला रहती है, वह समाधिष्ट हो करके और यह मानो देखो, जब विषधर को हलाहल और देखो, मानो देखो, विष को अपने में धारण कर लेता है, तो वह शिव कहा जाता है। तो मुनिवरों! देखो, ये यौगिक शब्द बन जाता है। हमारे यहाँ देखो, शिवां ब्रह्मा योगी उसे कहा जाता है जो सर्पों की माला बना लेता है। ये जो सर्प है ये क्या है? हमारे वैदिक साहित्य मे सर्पों का बड़ा महत्व आता रहा है। वास्तव में अहिंसा परमोधर्म की विवेचना होती रही है, परन्तु जब अहिंसा में परणित हो जाता है, तो मानव का कोई शत्रु नही होता, इसी प्रकार देखो, महाराजा शिव के कण्ठ में देखो, सर्पों की माला रहती थी, माला का अभिप्राय ये कि यह यदि यौगिकवाद से यदि उपराम हो गएं, क्या उसके जीवन में उसकी दृष्टि में योगी की दृष्टि में कोई भी उसका शत्रु नही रहा, अथवा कोई हिंसक नही रहा है, तो अहिंसा में विचार बनते हैं। मुनिवरों! देखो, कोई शत्रु नही रहता। तो विचार आता रहता है, हमारे यहाँ शिव की विवेचना करने वाले, अनन्य वेदमन्त्र हमें उद्घोष कर रहे हैं। नाना प्रकार की चर्चाएं कर रहे हैं, कि हम देखो, शिवं ब्रह्मा देखो, वह समाधिष्ट हो करके, इस प्रकार का देखो, एक निर्णायक विचार है, क्या देखो, राजा को भी इस प्रकार रहना चाहिए। क्योंकि राजा के राष्ट्र में कोई हिंसक प्राणी न हो, स्वयं भी मानो देखो, हिंसक न हो, तो राष्ट्रीय अपने में शिव कहलाता है, वह शिव राष्ट्र है। तो इसी प्रकार देखो, तो देखो, शिव को हमें अपने में पूज्य दृष्टि से अपने को पूजक बना करके बेटा! उसका पूजन करना चाहिए।

शिव का श्रृङ्गार

तो विचार आता रहता है कि देखो, हम वह जो शिव है जो मुझे हिमालय की प्रतिभा में सदैव मुझे रत्त होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यागों में जाने के पश्चात साहित्य से पृष्ठों को अपने समीप ले जाता हूँ, तो देखो, हिमालय से विचारने वाला राजा मानो शिव अपने में कितना तपस्वी है, क्या वह मुनिवरों! देखो, उसके कण्ठ में देखो, सर्पों की माला है, यह सर्प कहाँ है? कहीं कहीं देखो, सर्वत्र अमृति बेटा! यह सर्प नाम मन को भी कहा गया है। मानो ये जो मन है अपनी चञ्चलता को लिए हुए रहता है, जब तक मन में चञ्चलता रहती है। कोई मानव अपने में सफलता को प्राप्त नही होता। कोई भी क्रियाकलाप हो, चाहे वह संसार का हो, चाहे वह रूढ़ि हो, चाहे वह यौगिकवाद हो, परन्तु जब तक मन चञ्चलता में रहता है, नाना प्रकार के संस्कारों का उद्गीत गाने वाला होता है, तब तक मुनिवरों! देखो, मन की एकाग्रता नही होती। तो मुनिवरों! देखो, वह यौगिकवाद में सफलता को प्राप्त नही होता। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ सर्पं ब्रव्हे कृतं देवत्वां मनाः वेद का वाक कहता है, कि जो सर्प है वे मन की संज्ञा में ऋषि मुनियों ने इसका विश्लेषण किया है। उन्होंने का है कि ये मन जैसे सर्प योगी को जब योग साधना में परणित होना चाहिए, तो मानो देखो, मन मन रूपी सर्प को अपने कण्ठ में माला को अपने में धारण करना चाहिए। वह माला में जब धारयामि बन जाता है, तो धारयामि बन करके बेटा! देखो, वह शिवत्रां भूतं ब्रहे वह शिव बन जाता है। तो विचार आता रहता है कि शिव नाम ये श्रृङ्गार से मानो श्रृंगारित होता है, और देखो, उसकी जटाओं में, इस प्रकार की धारा हो जिसको हम गंगा के रूप में वर्णित करते हैं।

माताओं द्वारा महान सन्तान को जन्म देना

तो वेद का ऋषि कहता है जब देखो, ध्यानावस्थित होता है, योगी तो यह प्राणों को एकाग्र करता है। आज के हमारे वेद के मन्त्रों में आ रहा था, प्राणं ब्रव्हे व्रत्यं

प्राणा वृत्ति देवत्वां मानो देखो, ये जो प्राण है, प्राण को अपान में व्यान को समान में समान को उदान में, जब मानो तीनों इन प्राणों को मिलान करना जानता है। मेरी प्यारी माता पूर्व काल में मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में मेरी प्यारी माताएं प्राण और अपान को दोनों का मिलान जान करके व्यान में विचरण करती रही हैं और व्यान को समान और उदान में चित्त के संस्कारों को दृष्टिपात करती रही हैं। तो प्रायः मानो देखो, वे माताएं उसके पश्चात वह गृह में उनका आदर और देखो, वह सन्तान के सुयोग्य बनती हैं। जो माता प्राण की प्रतिक्रिया को नही जानती, हमारे यहाँ देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि दुर्वासा मुनि का जीवन, दुर्वासा मुनि मुनिवरों! देखो, वह अपने विद्यालय में कन्याओं को, ब्रह्मचारिणीयों को शिक्षा देते रहते परन्तु देखो, वह एक एक मानो देखो, दो दो पल और घड़ियों में मानो देखो, प्राण की प्रतिष्ठा में लगे रहते, प्राण और अपान को अपने में मिलान करते थे स्वयं, परन्तु देखो, वह भी उसी प्रकार का मन्त्र ले करके उसका प्रायः अध्ययन करते रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि दुर्वासा मुनि, एक समय अपने विद्यालय में बेटा! देखो, कन्याओं को प्राण को अपान में और अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को मानो देखो, उदान में प्रवेश करते हुए, वह कहा करते कि तुम्हारे गर्भस्थल में जो वीरतव विद्यमान हो करके उसमें शिशु का प्रवेश हो गया है, अथवा बाल्य है उस बाल्य को अपने में अनुभव करो देखो, उसको अन्तरात्मा से मन और प्राण को एकाग्र करके तुम उस आत्मा के समीप पंहुचों। और उसमें गुणों का गुणाधानम करो, इस वेदमन्त्र का अध्ययन करो, जिस वेदमन्त्र का जो देवता है, उसका अपने में देखो, ध्यानावस्थित हो जाओ, तो मेरे प्यारे! देखो, माता को उसे उसी गुणों वाले सन्तान का जन्म होता है, और प्राण की प्रतिष्ठा में सदैव लगी रहती है माताएं। तो प्रायः देखो, यहाँ विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, दुर्वासा मुनि अपने में बड़ा अद्वितीय अध्ययनशील थे, और वह तपश्चर में परणित रहते। मेरे प्यारे! देखो, वह देवियों पुत्रियों को सदैव प्राण और अपान की शिक्षा देते हुए और मुनिवरों! देखो, देवता

का मन्त्र दे करके अपने में बड़े प्रसन्न रहते। मैं जब द्वापर के काल में प्रवेश करता हूँ, तो प्रायः मुझे मानो यह मानं ब्रहे महाभारत की चर्चाएं स्मरण आती रहती हैं। जहाँ मुनिवरों! देखो, उनके यहाँ नाना ब्रह्मचारियों को अस्त्रों शस्त्रों का विद्या को अध्ययन कराने का कार्य देखो, वह अमृतं देखो, वह दोर्णाचार्य करते रहे, उनका परीक्षा फल भी लेते रहे इसी प्रकार मानो देखो, महर्षि दुर्वासा देखो, राज कन्याएं उनके विद्यालय में प्रायः अध्ययन करती रहती देवियां मानो देखो, अध्ययन करती रहती कुन्ती इत्यादि देखो, जब अध्ययन करती रहती, तो उनको प्राणों की शिक्षा देते रहते, तो स्वयं प्राणायाम करना और वही प्राण की शिक्षा दे सकता है। जो स्वयं प्राणों का अभ्यासी होता है। अन्यथा उसके मनों में चञ्चलता की प्रतिभा न आ जाएं, क्योंकि प्राण और मन का जब मिलान होता रहेगा तो चञ्चलता नही आयेगी, और वह चञ्चलता के न आने से मानो देखो, मन्त्रों की पुट लगाता रहता है। और मन्त्रों की पुट लगा करके तो मुनिवरों! देखो, वह विद्या अपने में सार्थक बन जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह कहा करते क्या तुम इन्द्र के गुणों वाली सन्तान को जन्म देना है। तो मानो देखो, इन्द्रश्चम् ब्रहा कृते देवत्वाम् इस वेदमन्त्र का अध्ययन करो और मानो देखो, इसका इन्द्र है तुम इन्द्र को विचारने वाले बनों। और विचारते हुए, अपने में अमृतं विचारों को ऊँचा बनाओ तो बेटा! देखो, महर्षि दुर्वासा मुनि महाराज का जीवन, जब मुझे स्मरण आता रहता है, तो प्रायः हृदय गद गद हो जाता है। और भी अनन्य इस प्रकार के ऋषि हैं, जो इस प्रकार की विद्याओं को जानने वाले थे क्योंकि वेद में विद्या की कोई सीमा नही हैं। विद्या मानो देखो, सीमा से रहित होते हुए, वेद का मन्त्र सीमा से रहित है, क्योंकि वे परमात्मा का ज्ञान है, उस विज्ञान ज्ञान में कोई भी ज्ञान और विज्ञान ऐसा उन्होंने नहीं त्यागा है, नही अप्रत किया है, जिसके ऊपर अनुसन्धान न हो। परन्तु वह अपने में सार्थक माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि दुर्वासा मुनि प्रायः देखो, विद्यालयों में कन्याओं को शिक्षा देते और वह पुत्रियों को महान बनाने की सदैव उनकी सदा चेष्टा रहती। मेरे प्यारे! प्राण और अपान की विद्या दे करके वह देवताओं

का जिस देवता का मन्त्र है, उसी को वह देने का प्रयास, जैसे पवन देवता है। देखो, जो प्रयाग जो मन्त्र हैं उसको वह परणित करते रहे तो वेदमन्त्र का उद्गीत गाते रहे वायुं ब्रव्हा वायु अमृतां ब्रव्हे कृतं देवत्वां वायु आकृति अवर्णा इस प्रकार के वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहते। वैदिक साहित्य में बेटा! इसके बड़े उद्गार हैं, और वेदमन्त्र की पवित्र जो विद्याएं विद्यमान रहती है, जो विज्ञान को मेरे प्यारे! मानव सार्थक बना सकता हैं। अब वह क्रियात्मकता में ला करके यौगिक क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है। और माताएं अपने में धन्य स्वीकार करती हैं। मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार महर्षि दुर्वासा मुनि ने नाना प्रकार की विद्याओं को जैसे अणाम् ब्रहे कृतं धर्मक्त ब्रहे उन्होंने धर्म का उपदेश दिया, और उन्होंने कहा देखो, इससे धर्म स्थायी रहता है। धर्म कहते हैं जहाँ इन्द्रियों का सामंजस्य होता है, और इन्द्रियों में मानो देखो, जहाँ इन्द्रियों का ज्ञान धर्म समाहित होकर के एक सूत्र में परणित होता है, तो इस प्रकार मानो धर्म को अपनाना चाहिए। जो प्रत्येक मानव का इन्द्रियों का जो धर्म है, उसको विचार विनिमय करके वेदमन्त्र को जो वेदमन्त्र है, उसी का का जो धर्म है उसी का अध्ययन होना चाहिए और वेदमन्त्र कहता है धर्ममं ब्रहे धर्मसुतं ब्रह्मा आत्मां धर्मं ब्रहे कृतं देवाः तो यह मुनिवरों! देखो, ये सर्वत्र विद्या, मेरी पुत्रियों और पुत्रों को होनी चाहिए जिससे बेटा! देखो, संसार देव पर्व बन जाएं और देवता प्रवृत्ति वाला बन जाएं, तो मेरे प्यारे! देखो, इससे पूर्व काल में ऋषि मुनियों में यह प्रायः विद्या रही है। तो मेरे प्यारे! धर्मं अश्विनी कुमार इस प्रकार की विद्याओं को अपने में धारयामि बनाते रहे हैं।

प्राण की विद्या के द्वारा महान सन्तान को जन्म देना

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं अपने विचारों को देता हुआ दूरी न चला जाऊं, विचार विनिमय ये क्या मानो देखो, देवता की हमें उपासना करनी है, और जिस देवता को हमें ले करके गमन करना है उस देवता के गुण अपने में धारण करने चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, अग्न्याध्यान करते हुए, अग्नं ब्रह्मा अग्नं देवत्वां देखो, इस प्रकार

वेदमन्त्रों का, जब उद्गीत गाया जाता है। तो उसी वेदमन्त्र को ले करके, अग्न्याध्यान अग्नि का ध्यान करती हैं माताएं तो वह तेजस्वी अपने पुत्र को जन्म देती हैं। प्राण में उसी को समाहित कर लेती है। तो मानो देखो, इस प्रकार की विद्याएं प्रायः वैदिक साहित्य में हमें प्राप्त होती रही हैं। तो मुनिवरों! देखो, मैं दुर्वासा की वार्ता प्रगट करने लगा विचार विनिमय यह चल रहा था, कि मैं शिव की याचना कर रहा था हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! शिव नाम परमपिता परमात्मा का है। पर्यायवाची शब्दों में शिव नाम राजा का भी है और शिव नाम प्राणों को भी कहा जाता है और शिव नाम और मेरे प्यारे! आत्मा का नामोकरण ब्रहे कृतं देखो, कर्णासुतं ब्रह्मा वे नामोकरण में आता है, कि शिव नाम मुनिवरों! देखो, आत्मा को भी माना गया है। तो विचार आता है क्या मुनिवरों! शिव नाम परमात्मा का है, शिव कहते हैं, जो मेरे प्यारे! देखो, शिवाम् ब्रह्मा देखो, शिव देखो, जो ऊर्ध्वा गति में हमारी ऊर्ध्वा गति बनाता है, और ऊर्ध्वा में इस संसार को रचाता है, तो उसका नाम शिव है। तो मेरे प्यारे! शिव बन करके इसका संहार भी कर देता है। मानो देखो, वह नाम शिव कहा जाता है, रुद्र बन करके ही मुनिवरों! देखो, शिव की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि शिव नाम यहाँ राजा को कहा गया है परमात्मा को कहा गया है जो परमात्मा का जो नाम वाची शब्द है वह केवल कल्याण कारक है, वह मानो देखो, अनुशासन है, इसी प्रकार देखो, राजा का नाम भी शिव है राजा जो जिसकी प्रजा ऊर्ध्वा में विचारों वाली हो जिसकी प्रजा में ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने हों, और जिस प्रजा में मानो मेरी पुत्रियाँ नाना प्रकार की विद्याओं का अध्ययन करने वाले पुरूष और देवियां होनी चाहिएं। जिससे गृह स्वर्ग बन जाएं, और गृह में मानवता का प्रसार हो जाए, राष्ट्र उसी के आश्रित हो करके गमन करता है। तो ऐसी प्रजा का जो स्वामीतव होता है, उसको शिव कहा जाता है। जिस राजा के राष्ट्र में साधक होते हैं, जिस राजा के राष्ट्र में राजा स्वयं साधक होता है वह मानो देखो, मन की माला बना करके, और वह मानो देखो, प्रत्येक श्वांस को मनका बना करके, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मसूत्र

में जो पिरो करके, उस माला को धारण करता है, तो सर्वत्र माला को मानो धारण कर लिया है। मानो देखो, अभ्रंश हो करके उसी गुणों का अप्रत करके बेटा! देखो, उसका सर्प नाना उद्गीत गाने लगे। परन्तु देखो, वह सर्वसुतं ब्रह्मे वह सर्वत्र माला कहलाई जाती है। जिसको धारण करके बेटा! साधक अपने में योगाभ्यास करता है। साधक अपने में साधना करता हुआ, अपने प्रभु का ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाता है। तो इसी प्रकार बेटा! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया, तो विचारवेत्ताओं ने कहा सम्भूति ब्रह्मण सम्देवत्वां लोकां दिव्यं ब्रह्मा लोका वृत्ति देवाः तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, वेद का मन्त्र जब अपने में गान गा रहा है वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ ऋषि कहता है शिवत्रम् ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, शिव नाम आत्मा को भी माना गया है मानो देखो, आत्मा इसीलिए शिव है वह मन उसी के आश्रित हो करके क्रियाकलाप करता है जब मानो देखो, मन की प्रतिभा मन देखो, जब उस आत्मा के प्रकाश में रमण करता है, तो वे नाना प्रकार का रचनाकार बन जाता है, और रचना में ही मानो निपुण बन जाता है। क्योंकि प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु होने से क्योंकि प्रकृति में अपना स्वतः रचना का स्वभाव विद्यमान हैं। बेटा! देखो, रचना के कारण, प्रकृति का होने से ही रचना में बड़ा निपुण है, और ये नाना प्रकार की रचना करता रहता है। इसी प्रकार ये जब यही आत्मा मानो देखो, जब नेत्रों के समीप रहती है। तो भिन्न भिन्न प्रकार की प्रवृत्ति में यह नेत्रों की ज्योति गमन करती रहती है, वह ज्योतिवान बन करके मेरे प्यारे! जिस भी इन्द्रिय के साथ में मन रहता है, और मन का समन्वय जब आत्मा से होता है। तो यही मानो देखो, विभक्त क्रिया को उत्पन्न करता रहता है। विभक्त क्रिया में रत्त रहता है। तो इसीलिए मानो देखो, वह मनं ब्रह्मा वर्णसुतं देवत्वां शिवाः तो बेटा! देखो, आत्मा का नाम इसीलिए शिव कहा जाता है। क्योंकि प्राण जो रूद्रं ब्रह्मा देखो, देखो, इन प्राणों को रुद्र कहते हैं, और रुद्र नाम मेरे पुत्रों! देखो, शिव को भी कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जो अमृतं देखो, जो संहार करने वाला वही शिव है। वही मानो देखो, रुद्र हैं, जब यह प्राण आत्मा के साथ निकस जाते हैं,

तो बेटा! देखो, यह समाज रूदन करता है, मेरा देखो, सम्बन्धी चला गया, तो यह मानो देखो, इसीलिए इसे रुद्र कहा जाता है। वह रूलाता रहता है। तो इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, शिवं ब्रह्मां ब्रहे शिव नाम बेटा! आत्मा को माना गया है। मानो देखो, यह आत्मा जब मन मस्तिष्क और विचार को जब एकाग्र करता रहता है। एकाग्रित हो जाते हैं, तो बेटा! देखो, उस मन की माला बन जाती है। सर्प माला और उसे संसार का भान नही रहता, क्योंकि आत्मा एक रस रहने वाला है। आत्मा एक रस रहने से मेरे प्यारे! देखो, उसे संसार का कोई भान नही रहता। वह मन मस्तिष्क जब एकाग्र हो जाता है, मन की माला बन जाती है, और बुद्धि गन्धर्व बन जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, उसका मृग रूप बन करके निचरले स्थलों पर गमन हो जाता है।

यौगिक शब्द

तो विचार आता रहता है कि परमपिता परमात्मा के नाना प्रकार के मानो देखो, एक एक शब्द के मानो देखो, पर्यायवाची शब्द है, जो यौगिक शब्द बनता है और यौगिक शब्दों का अपना अपना महत्व माना गया है। एक रूढ़ि शब्द होता हैं, वह रूढ़ि में बेटा! देखो, अज्ञान विराजमान होता है। इसीलिए रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए, और रूढ़ि का विनाश हो करके यौगिकता होनी चाहिए। राजा के शब्दों में राज में देखो, यह रूढ़ि नही होता परन्तु यह भी यौगिकवाद होता है, इसके पश्चात जब राजा को अपनी प्रजा में वृत्तियां नही रहती, तो वह रूढ़ि बन जाती हैं। राष्ट्र भी एक रूढ़ि है, परन्तु देखो, और भी ऊर्ध्वा में जाओगे यदि राजा यह स्वीकार कर ले कि यह मेरी प्रजा यह मेरी प्रजा नही है, मानो यह परमपिता परमात्मा की प्रजा है, इसमें आत्मा सब में विद्यमान हैं। वह भी मेरे शरीर में भी आत्मा विद्यमान हैं, और परमपिता परमात्मा विभु के रूप में रमण है, वह प्रभु सब में मानो भूतेषु में रमण कर रहा है, तो मेरे प्यारे! देखो, राजा यौगिक शब्द बन जाएगा। यौगिक शब्द में परणित रहना चाहिए। यौगिकवाद में ही मुनिवरों! देखो, सर्वत्र जगत

विद्यमान रहता है।

परमात्मा के गुणों का यौगिकवाद

तो आओ, बेटा! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न करता हुआ, केवल हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के शब्दों की मानो प्रतिभाषिता होती रही है। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! जो मानव परमात्मा का आश्रित बन करके परमात्मा के गुणों का यौगिकवाद देखो, उसका स्मरण करता है, और उसमें मानो यौगिकवाद को ही दृष्टिपात करता है। तो वह योगी बन जाता है, और वह योगियों के गुण में प्रविष्ट हो जाते हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं बहुत दूरी न जाता हुआ केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वैदिक साहित्य हमें किस प्रेरणा में ले जा रहा है। प्रेरित कर रहा है, और प्रेरित करता हुआ यज्ञमानं ब्रह्मे यज्ञमान भी देखो, बेटा! देखो, यह रूढ़ि शब्द नही यह यौगिक शब्द है। यज्ञमानं ब्रह्मा यज्ञनं ब्रहे कृतं देवाः यज्ञमान कहते हैं, जो यज्ञ में जो मानो देखो, जो सर्वत्र जितने शुभ क्रियाकलाप है, जो उसका स्वामीतव करने वाला है, उसका नाम यज्ञमान है। तो यौगिक शब्द बन गया अब मुनिवरों! देखो, वही शब्द केवल यज्ञं ब्रह्मे देखो, वर्णो असुतं ब्रव्हे देखो, इसीलिए ऋषि मुनियों ने जितने भी शब्द दिए हैं, वह यौगिक है, उनमें रूढ़िवाद नही बनाना चाहिए। रूढियों में गमन करने वाला जैसे यज्ञों में सुगन्ध देता है। तो प्रत्येक प्राणी को देता रहता है। वायु मण्डल को देता रहता है।

देवपूजा संगतिकरण

इसी प्रकार वह यौगिक शब्द बन गया, मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार यज्ञं ब्रह्मे देखो, यज्ञ दानेषु और मुनिवरों! देखो, देवपूजा और संगतिकरण इन्ही मानो देखो, तीनों में वह निहित रहता है। संगतिकरण कहते हैं, जहाँ सब एकत्रित हो करके प्रभु का चिन्तन करते हैं, अथवा मनन करते हैं। देवताओं को हूत देते हैं। तो वह मानो देखो, योगी बन गया है। वह योगी शब्दों में यौगिक क्रियाकलापों में मानो सदैव

रत्त हो गया है। इदन्नमम् वह चाहता नही परन्तु वह देखो, याज्ञिक बना हुआ है, और मुनिवरों! देखो, वह अमृत संगतिकरण में परणित हो गया है, संगतिकरण कहते हैं जहाँ सामूहिक, अपने विचारों को ही एक रसता में जा करके एक मानो एकोकीकरण में परणित हो जाएं, मन, कर्म, वचन से तो मानो देखो, उसका नाम संगतिकरण कहा जाता है और मुनिवरों! देखो, दानेषु जहां द्रव्य को यह स्वीकार किया जाता है इदन्नमम् यह द्रव्य तो मेरा नही है, यह द्रव्य तो प्रभु का है। मुनिवरों! देखो, द्रव्य भी रूढ़ि शब्द नही रहा, वह यौगिक बन गया है, मेरे प्यारे! देखो, द्रव्य जो दानेषु जो दान देना मेरा कर्तव्य है, जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज यह दानेषु शब्द आपने शतपथ ब्राह्मण में निहित किया है। तो इसका क्या तारतम्य क्या इसका अभिप्राय है? तो महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा क्या देखो, जो संसार में देखो, ईश्वर का आस्तिक प्राणी होता है, वह कहता है, इदन्नमं यह मेरा नही है, परन्तु यह प्रभु का है जो सर्वत्र देखो, प्रभु यौगिक है, स्वयं यौगिक है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह द्रव्य मुझे दान देना मेरा कर्तव्य है दान किसे कहते हैं? दानामि दानत्वा दानं ब्रव्हे जो दान दिया जाता हो। और दिया क्या जाता है, जो देवताओं का परक है, देखो, बुद्धिमानो को जो शुभ कार्यों में क्रियाकलापों में परणित करते हैं, जो मानो देखो, जिससे वायुमण्डल पवित्र होता है, जिससे प्रदूषण समाप्त होता है, वही मानो साकल्य द्रव्य को ला करके वह मेरे प्यारे! दानेषु कहलाता है। और वह दानेषु क्या वह द्रव्य है, और वह द्रव्य कोई भी द्रव्य है वह दानेषु कहा जाता है वह दानव प्रवृत्ति समाप्त हो जाएं और मानव प्रवृत्ति आ जाएं तो उसको दान की संज्ञा में परणित किया जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, दानेषु संगतिकरण, दानेषु और मुनिवरों! यज्ञाम् भूतं ब्रह्मा वर्णतं देव पूजां जिसमें देवताओं की पूजा होती है।

जल और अग्नि की पूजा

जैसे **मुनिवरों! देखो, जल को यज्ञमान अपने में परोक्षण करता रहता है, और**

मुनिवरों! देखो, जल की पूजा है। और मुनिवरों! देखो, अग्न्याध्यान करता है, अग्नि के मन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ और वह उसमें साकल्य प्रदान करता है। तो अग्नि की पूजा हो गई, अग्नि देवां मुखां ब्रह्मे मैंने कई कालों में कहा है कि यह जो अग्नि है, यह देवताओं का मुख है, इसके मुख में मानो वह प्रदान किया जाता है, इसके मुखारबिन्द में जो प्रदान किया जाता है। वही मेरे प्यारे! देखो, देवताओं का मुख है वो देवताओं को प्राप्त होता है अग्नि मेरे प्यारे देखो, उसको सूक्ष्म बनाती है। और सूक्ष्म बना करके देखो, जल का शोधन करती है और वायु जिससे शोधन होता है और इसी से पृथ्वी के गर्भ में, जब यह तरंगे जाती हैं। तो नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों का शुद्धिकरण हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रदूषण नही रहता, अन्तरिक्ष में उन परमाणुओं को नष्ट करता है जिसमें प्रदूषण विद्यमान हो गया है वे तरंगें मानो देखो, उससे समाप्त होते हैं, और यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बनती है, तो कहीं खनिज है कहीं खाद्य है नाना प्रकार का रूप बनता रहता है। तो यज्ञ मेरे प्यारे! देखो, ये तीन प्रकार के रूपों में रत्त रहता है देखो, दानेषु संगतिकरणं ब्रह्मा और मुनिवरों! देखो, देवां पूजनां ब्रह्मा व्रत्यं तो इसीलिए हम शिव की पूजा करते हैं। शिव की पूजा का अभिप्राय यह कि उसका और भी सूक्ष्मता में जाओगे तो उसका सदुपयोग करना उसकी पूजा है मेरे प्यारे! देखो, अग्नि के ऊपर हम विचार विनिमय करेंगे तो हम तेजस्वी बनेंगे और जल के ऊपर अन्वेषण करेंगे तो देखो, प्राण वर्धक बन जाएंगें, और मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान होगा तो जितना पिण्डाकार यह जगत है इन पिण्डों के प्रतिभा को आन्तरिक जगत मे हम जानने का हम प्रयास करते रहेंगें, और मेरे प्यारे! देखो, वायु को जानने से उस समय देखो, उष्णा परमाणु भ्रमण कर रहें है, तों कौन सा उष्णा है, और कौन सा वृत्ति है। मेरे प्यारे! देखो, उसका ज्ञान हो जाता है और देखो, जिसमें अग्नि जल के परमाणु विद्यमान हैं। तो वह किस प्रकार के प्रदूषण से युक्त है, या प्रदूषण से रहित हैं, तो मुनिवरों! देखो, उनका योग करना ही उसकी देव पूजा कही जाती है। इनका सदुपयोग करना इनका शुद्धिकरण करना मेरे प्यारे! देखो, जैसे मानव

वाणी का उपयोग करता है। **वाणी का दुरूपयोग भी करता है, तो वाणी का सदुपयोग करना चाहिए, सत्य उच्चारण करना चाहिए, और जितनी आवश्यकता है।** उतना उद्गीत उच्चारण करना चाहिए। वेदमन्त्रों की प्रतिभा में सदैव रत्त रहना चाहिए। तो यह वाणी की पूजा कहलाती है और मुनिवरों! देखो, नेत्रों से उतना ही आप दृष्टिपात कीजिए, जितनी आपकी आवश्यकता है, शरीर की पूर्ति हो जाएं, और उसमें अति न आ जाएं यदि अति आ जाऐगी तो मानो देखो, अच्छाईयों की कोई अति नही होती, उसकी कोई सीमा नही होती, एक पुत्रीं को हम दृष्टिपात कर रहे हैं वह पुत्री हैं वह मानो देखो, आगे चल करके माता बनती है, और माता से मानो देखो, महामाता बन जाती है और वही दिव्य गुणों वाले उसको दृष्टिपात करोगे तो देवता उसमें वास कर रहे हैं। उन देवताओं का व्यवधान होने लगता है। तो मानो देखो, इस प्रकार तुम्हारे हृदय में अच्छाईयों को जब इस प्रकार गुणाधानम करोगे, तो तुम्हें कोई भी मानो देखो, वृत्तियों में और तुम्हारा जीवन एक महानता में परणित होता रहेगा। तो वाणी का नेत्रों का सर्वत्र का सदुपयोग होना ही मेरे प्यारे! देखो, यह आत्मिक साधना शारीरिक साधना और देवताओं की साधना में परणित हो करके हम आत्मिक साधना में प्रवेश हो जाएंगें। तो मेरे प्यारे! देखो, आज मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, मैं इस भंयकर वन में जाना नही चाहता हूँ, यह तो विचारों का वन है, जिसमें मैं चला गया हूँ विचार विनिमय केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा का रचाया हुआ, जो एक एक वेदमन्त्र है, उसके ऊपर हमारा अन्वेषण होना चाहिए। मेरे प्यारे! मैं शिव की याचना कर रहा था

शिव की व्याख्या

हे शिव! तू मानो देखो, मेरी अन्तरात्मा में वशीभूत हो जिससे मेरी इन्द्रियाँ मेरा जो यह अमृत देखो, यह जो शरीर रूपी पिण्ड है। मैं इसके पिण्डाकार को जानने वाला बनूँ, वह परमपिता परमात्मा ने वह पिण्डाकार का निमार्ण किया है, इसे नष्ट करने का मेरा कोई अधिकार नही है। अधिकार होगा तो मानो देखो, मेरी उग्र

क्रिया बन जाएगी, और उग्र क्रिया ही विनाश के मूल में मुझे ले जाएगी, तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार मानव जब अपना विचार विनिमय करता है और वेदमन्त्रों के उस ज्ञान को जो सदैव नवीन बना रहता है, बेटा! आज भी शिव की व्याख्या उसी प्रकार की है, पुरातन काल में भी इसी प्रकार की रही है वह मानो देखो, व्याख्याकार जब इस पर विचार विनिमय करते हैं। तो अपने में अपनेपन का व्यवधान होने लगता है, तो अपने में ही वह समाहित हो जाता है। तो आओ, बेटा! देखो, मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आज का हमारा वेदमन्त्र हमें क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा! आज हमने तुम्हें बिखरे हुए पुष्पों को एकत्रित किया है। क्या मानो देखो, अपने जीवन में क्या मानो देखो, अमृतं को धारण करे और विष को त्यागने का प्रयास करें, **अज्ञान में सदैव अज्ञान को त्यागे और ज्ञान में प्रवेश होता रहे। क्योंकि ज्ञान सदैव नवीन बना रहता है, और अज्ञान की सीमा होती है, और ज्ञान की कोई सीमा नही होती क्योंकि परमात्मा ज्ञानी है। परमात्मा मानो देखो, वेदज्ञ है।** इसीलिए परमात्मा के ज्ञान विज्ञान की कोई सीमा नही होती हैं इसीलिए ज्ञानियों की भी कोई सीमा नही हैं। परमपिता परमात्मा मानो सु कहलाता है, और सु ही रहना चाहिए। तो यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुण गाते हुए हम देखो, अपने में शिवत्र शिव में परणित हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि परमपिता परमात्मा जो शिव है, जो सदैव हमारे कल्याण के लिए संसार को रचा है, उसका संहार करता है समय समय पर मानो देखो, अमृतियां होती रहती है। उस परमात्मा की हमें उपासना करनी चाहिए। क्योंकि यह हमारा सर्वत्रता में विद्यमान है। तो यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा।

11. ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा-920731

परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और वह यज्ञोमयी माने गएं हैं, और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और प्रायः उसी में वास कर रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव उद्गीत गाते रहे। क्योंकि वह यज्ञोमयी स्वरूप है। और याग में वह रमण करने वाले हैं, संसार में किसी भी प्रकार का याग हो, चाहे वह अग्निष्टोम याग हो, चाहे वाजपेयी याग हो, चाहे वह विष्णु याग हो, चाहे रुद्र याग हो, चाहे वह ब्रह्मयाग हो, अश्वमेध हो, चाहे वृष्टि याग हो, नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे यहां वैदिक साहित्य में प्रायः आता रहा है।

यज्ञोमयी विष्णु

परन्तु जब हम नाना प्रकार के यागों में परणित होते हैं, और उनकी कर्मकाण्ड की पद्धतियों में सदैव हम निहित होते हैं, तो प्रायः हमे ऐसा दृष्टिपात आने लगता है क्या यह संसार नाना प्रकार के यागों से कटिबद्ध है। जैसे हमारे यहां पुत्रेष्टि याग का वर्णन आता रहता है और कर्मकाण्ड पद्धतियों में उसक बड़ा महत्व माना गया है। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा उन सर्वत्र यागों में निहित रहने वाले हैं। तो वेद का मन्त्र कहता है, यज्ञोमयी विष्णु तो आज याग का वर्णन आ रहा था, यागों के भिन्न भिन्न नामों का वाची शब्द आ रहा था, और वेदमन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा था, तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां विष्णु कहते हैं, पालन करने वाले को, तो

हमारे यहां पालन करने वाला वह विष्णु है। क्योंकि ये शब्द हमारे यहां यौगिक माना गया है। जो भी पालना के मूल में आता है, उसी का नाम विष्णु है। मुनिवरों! देखो, यज्ञोमयी विष्णु क्योंकि याग हमारा पालन करने वाला है यदि मानव में सुकामना नही होगी, यदि सुक्रियाकलाप नही होंगें, तो हम पालन नही कर सकेंगें। और हमारी भी पालना नही हो सकेगी तो इसीलिए जितना भी यागाम् भवितन्ना माः मानो देखो, याग अपने में विष्णु कहलाता है। क्योंकि सुगन्ध देता है, यह कर्तव्य पारायणता को दे रहा है, क्योंकि इसमें पालन करने की शक्ति है। तो हम मुनिवरों! देखो, उस परमपिता परमात्मा को जहां विष्णु कहते हैं, जैसे पालना करने वाला नमः नतमस्तिष्क हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जैसे वृक्ष नाना प्रकार के फलों का जब आगमन हो जाता है, तो फल नमः हो जाते हैं, तो नीचे को उनका नमन हो जाते हैं। इसी प्रकार जैसे माता पिता सन्तान के उत्पन्न होने पर वह नमन हो जाते हैं। पालना करने में माता सदैव तत्पर हो जाती है। तो वह नम्र बन जाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार देखो, यज्ञोमयी विष्णु, वह भी हमारा पालन करता है।

विष्णु

ऊर्ध्ववेत्ता बन करके, मानो उसके ऊपर अन्वेषण करता रहा है। विचार विनिमय करता रहा है, तो हमारे यहां विष्णु नाम परमपिता परमात्मा को कहा गया है, क्योंकि वह संसार का पालक है, नियामक है, वह निर्माण करने वाला है, मानो वह अपने में ही मानो प्रकाशक स्वरूप कहलाता है। तो उस परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है। मैं कई समय से विष्णु सूक्तों का पठन पाठन हो रहा है। आज भी कुछ मानो कुछ विष्णु सूक्तों के विचार विनिमय उनके मन्त्रों का उद्गीत गाया जा रहा था, विष्णु ब्रह्मा वर्णो मानो देखो, जहां पालना के प्रसंग में, माता का प्रसंग आता है। तो माता का नाम भी विष्णु है, और वह विष्णु बन करके पालन कर रही है। लोरियों का पान करती है। तो वह पालना के मूल में विद्यमान हैं। माता लोरियों

का पान कराती है, बुद्धो, शुद्धो निरञ्जन नाना प्रकार के पठन पाठन में लग जाती है। और वह उसको अपने में उद्गीत गाने लगती है, तो वह नम्र और वह सात्विकता में देखो, पालना के मूल में विद्यमान होती है। तो इसीलिए माता का नाम विष्णु है। हे विष्णु! तू कल्याणकारी है। मानो देखो, जहां भी पालना का मूल आता है। वही विष्णु शब्द आता है मेरे प्यारे! देखो, अमृतं पालना करने वाली माता है। माता अपने लोरियों का पान कराती हुई मानो देखो, प्रथम तो गर्भस्थल में पालन करना प्रारम्भ कर देती है, वह प्राणों का नाम भी विष्णु है, जहां प्राणों का नाम रुद्र कहा गया है। वहां विष्णु भी कहा जाता है। जब तक की शरीर में क्रियाकलाप चलता रहता है। क्रियाकलाप होता रहता है तभी तक मानो देखो, विष्णु अपने में विष्णुतव बना रहता है। इसी प्रकार जो यह प्राण है, इनका नाम भी विष्णु है। जब तक मानव में गति बनी रहती है। तो यह अपने में गतिवान होता रहता है। तो मुनिवरों! देखो, अमृतं माता जब माता के गर्भस्थल में जब शिशु का प्रवेश होता है, तो माता मानो देखो, विष्णु के द्वार पर जाती है, और वह कहती है, विष्णुं ब्रह्मा रुद्रो वर्णस्सुतं वह मन्त्र का उद्गीत गा करके कहती है हे प्रभु! हे विष्णु! मैं विष्णु रूप में प्रवेश हो करके विष्णु के द्वार पर जाना चाहती हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, वह प्राण को ले करके प्राण को विष्णु स्वीकार करके, अपान के द्वारा जाती है, और अपान को ले करके व्यान के द्वारा प्रवेश होती है। और व्यान को ले करके समान प्राण में प्रवेश हो करके और प्राण को उदान में प्रविष्ट करा देती है। तो मानो देखो, गर्भस्थल में जो शिशु पनप रहा है। माता विष्णु बन करके उसकी पालना कर रही है, और वह उसी प्रकार की औषध का पान करती है। उसी प्रकार का उसका विचार बनता है। बेटा! मैंने महर्षि दुर्वासा मुनि की चर्चाएं की तो इसी प्रकार मानव को अपने को अपने में मानो देखो, मेरी माता का नाम विष्णु है, जो पालना के मूल में लोरियों का पान करा करके पालना कर रही है। विचार दे करके उद्गीत गा रही है, तो उद्गान ब्रह्मा उदगं सुतं देवाः यह मानव अपने में उद्गीत गाता रहता है।

परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप

तो विचारवेत्ताओं ने बेटा! अपना मन्तव्य प्रगट करते हुए कहा क्या हम इसको अपने में धारयामि बनाते रहें, जिससे धारणा करने से हमारे जीवन में एक महानता का जन्म होता है। तो आओ बेटा! देखो, आज का विचार आज के हमारे यागों में ऊपर विचार विनिमय हो रहा था तो मेरी प्यारी माता अपने गर्भस्थल में याग कर रही है, और उस बाल्य से वार्ता प्रगट करती है। जो शिशु गर्भस्थल में विद्यमान होता है, तो मानो देखो, अपने में उदगीत गाती रहती है। तो मेरे प्यारे आओ मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। याग उसका आयतन है, उसका गृह उसका सदन है, तो बेटा! देखो, याग में हमें परणित होना है। तो मेरे प्यारे! विचारवेत्ताओं ने यह कहा है कि अमृतं ब्रह्मा व्रतप्प देवाः याग के ऊपर ऋषि मुनियों ने अपनी बड़ी लेखनियां बद्ध की हैं, वेद मन्त्रों को ले करके वेद मन्त्रों के उद्गीत गाए हैं। और याग में बेटा! देखो, ऋषि परणित हो गया है।

ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा

आओ आज मैं तुम्हें मैंने कई कालों में यह वार्ता प्रगट की है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विराजमान हैं, और विद्यालय में जब न्यौदा में से वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है। तो ब्रह्मचारियों को आचार्य मृत्यु से पार ले जाने का प्रयास करता है। मेरे प्यारे! देखो, अमृतं ब्रह्म लोकां विश्वं ब्रह्मा लोकाः तो वेद का आचार्य याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातःकालीन बेटा! देखो, ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा में ले जाते चले गएं हैं। और नैतिकता की शिक्षा देने लगे, और उन्होंने प्रातःकालीन वेदमन्त्र का उद्गीत गाया, एक पंक्ति में विराजमान होने वाले, ब्रह्मचारी यज्ञ के अङ्ग संग विराजमान हैं। और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने न्यौदा में से वेद

मन्त्रों का उद्गीत गाया, और उन्होंने कहा यागां भविते प्रमाणां ब्रीहि व्रतं तो वेद का आचार्य कहता है, क्या हे ब्रह्मचारियों! तुम प्रातःकालीन याग किया करो। हर समय तुम्हारी प्रवृत्ति याग में रहनी चाहिए। तो याग अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है। जो कर्मकाण्ड की पद्धतियों में, अन्तिम चरण में, सीमा में मानो देखो, रक्त होता रहा है। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में, विद्यमान हो करके, कहा कि यज्ञनं ब्रहे कृतं यज्ञाः तुम याग करो, क्योंकि याग से राजा पवित्र बनता है। याग से ब्रह्मज्ञान में वृद्धि होती है, और याग से पालक बनता है पालना करना ही ये यागाम् ब्रीहित कहलाता है। तो इस प्रकार ऋषि उपदेश दे रहे थे। तुम याग करो इतनें में बेटा! उनके मध्य में एक यज्ञदत्त नाम का ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ, जो रोहिणी केतु गोत्र में देखो, तपं ब्रहे भारद्वाज कहलाते थे, उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं आपसे कुछ जानना चाहता हूँ।

याग कैसे करें

याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि उच्चारण करो ब्रह्मचारी! उन्होंने कहा कि हे प्रभु! आप याग के लिए हमें बाध्य करते रहते हैं, कि प्रभु! हम याग कैसे करें? कौन सा कर्मकाण्ड है, याग की वृत्तियों में रक्त होने वाला? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि तुम्हारे द्वारा सुन्दर यज्ञशाला हो और नाना प्रकार की समिधाएं हों और साकल्य होना चाहिए। विचारों का साकल्य भी पवित्रतम होना चाहिए। और क्रियाओं का साकल्य द्रव्य का साकल्य भी होना चाहिए। और परन्तु तुम याग करो, क्योंकि याग एक यज्ञशाला हो, और यज्ञशाला में चतुष स्थान होने चाहिए। मानो एक स्थान में यज्ञमान विद्यमान होता है। एक स्थली में अध्वर्यु होता है। और उद्गाता और पुरोहितजन और ब्रह्मा का स्थान होता है। मानो इस प्रकार तुम्हारे एक निर्वाचितता मानो याग होना चाहिए। जब याग प्रारम्भ हो जाएं, तो उनसे मानो ये प्रश्न किया जाएं, द्वितीय मानव के द्वारा कि वह योग्य हैं, अथवा नही। तो अपना उत्तर भाव देते हैं। तो इस प्रकार उन्होंने कहा यज्ञं भूतं ब्रह्म लोकां मानो देखो, यागां ब्रहे

याज्ञवल्क्य बोले कि तुम याग करो, परन्तु याग में नाना प्रकार का साकल्य और समिधा और अष्ट खम्बों वाली यज्ञशाला हो बारह खम्बों वाली हो, और चतुष कोणों वाली हो, और पञ्च कोणों वाली हो चौबीस कोणों तक की यज्ञशाला का व्यवधान किया गया। जब वह यज्ञशाला द्वि काणों में तृतीय कोणों में भी रत्त होना चाहिए।

आत्मा की ज्योति से सना हुआ भाव द्यौ लोक में प्रवेश

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तब उन्होंने यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ, कहीं ऐसा स्थान हमें प्राप्त हो जाएं। जहां हमें यह सुविधा न प्राप्त हों, और देखो, न साकल्य हो, न यज्ञशाला हो, न खम्बों वाली हो, तो हे प्रभु! हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा तुम मानो देखो, साकल्य नही हैं, और तुम्हारे द्वारा यज्ञशाला भी नही हैं, तो तुम मानो देखो, प्रातःकालीन यज्ञ ब्रहे मानो देखो, समिधाओं को ले करके और अग्नि अग्नि को चैतन्य करो, और अग्नि में जब साकल्य न हो तो व्यानाय स्वाहाः साकल्य के द्वारा याग करो, और कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। क्योंकि वह हूतं ब्रह्मणा देवाः तुम्हारी आत्मा की ज्योति से सना हुआ जो तुम्हारा स्वाहा है। वह द्यौ लोक में प्रवेश हो जाता है। मानो वही तो द्यौ में प्रविष्ट हो जाता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा इस प्रकार तुम याग करो, और अग्नि को अग्न्याध्यानं ब्रह्मा देखो, समिधा के द्वारा तुम अपने वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो, और स्वाहा कहते रहो, वह अग्नि ही देवां मुखं ब्रह्मा देवां मुखां ब्रहे वेद का वाक कहता है, कि अग्नि देवताओं का मुख है। और यह देखो, अग्नि आहार करती है। वह देवताओं को प्राप्त होता है। मानो जैसे माता के गर्भस्थल में शिशु होता है, और वह देवता उसकी शिशु की रक्षा करते हैं। तो माता जो भी पवित्रता से आहार करती है। वह मानो उसी आहार से बाल्य शिशु पनपता रहता है। देवताजनों के द्वारा माता के विचारो के द्वारा उसकी बुद्धि और अन्तःकरण का निर्माण होता रहता है।

तो विचारवेत्ताओं ने यह कहा सम्भं ब्रह्मा कृतं देवो मानो देखो, यज्ञं ब्रह्मा यागां वृत्ति वह याग कहलाता है। तुम अग्नि के द्वारा कहो प्राणाय, अपानाय, उदानाय, समानाय व्यानाय कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो। यज्ञदत्त ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! ये भी हमने पूर्व काल मे श्रवण किया है, परन्तु हम जानना चाहते है कि कहीं ऐसी सुविधा देखो, न हो कि कहीं समिधा भी न प्राप्त हो, और अग्नि भी न हो तो याग हम कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम मानो तुम्हारे द्वारा न अग्नि है, न साकल्य है, और न समिधा हैं, तो तुम जल को प्रोक्षण करो, मानो जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करक हूत प्रारम्भ करो। मानो देखो, जल को अञ्जलि में लों क्योंकि जल ही अमृत देने वाला है। एक मानव पिपासी हो रहा है, और पिपासा लग रही है। तो मानो देखो, जल जब प्राप्त हो जाता है। तो उसकी पिपासा शान्त हो जाती है। वह मानो देखो, पिपासा से रहित हो जाता है। जीवन सत्ता उसे प्राप्त हो जाती है। तो मानो देखो, तुम उसके द्वारा जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहा वेदमन्त्र का उद्गीत गाते रहो, परन्तु अञ्जलि में जलं ब्रह्मा वर्णासुते जल के द्वारा याग करो मानो देखो, जल ही अमृत है। माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु ही तो जाता है। परन्तु उसमें शिशु विद्यमान है, और जब माता के गर्भस्थल में शिशु का प्रवेश होता है। तो देवताजन मानो रक्षा करना प्रारम्भ करते हैं। तो उस समय यह जल ही मुनिवरों! अमृतमयी देता है, यह पिण्ड बनाता है। क्योंकि चन्द्रमा रस देता है। चन्द्रमा अमृत बहाता रहता है, और समुद्रों से उसका समन्वय रहता है। मानो देखो, वह अमृतां जब यह सूर्य प्रकाश देता है। अग्नि उष्णा बनाती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, जल अमृत बना हुआ वह अङ्ग संग में पांशे बने हुए मेरी भोली माता को यह गर्भस्थल में जब शिशु होता है। तो एक स्थान में उसका जल बिछौना भी वही बना हुआ है, और पांशे भी वही बने हुए हैं, परन्तु जल में रहने वाले हम

जैसे शिशु अपनी जीवन सत्ता को प्राप्त करते रहते हैं। तो मेरे पुत्रों! वेद का आचार्य कहता है, क्या माता के गर्भस्थल में निर्माण होता है, वायु प्राण देता है, और देखो, यह जल पांशे बने हुए हैं। अन्तरिक्ष अवकाश देता है, और गुरूतव मानो देखो, यह पृथ्वी का जो अणुवृत्ति है। यह उसका पिण्ड बना देती है, और वह पिण्डाकार बन करके माता के गर्भस्थल से बाह्य जगत में आता है, मानो जितना भी पिण्ड बना हुआ है। यह सब देवताओं की महिमा है। मेरे प्यारे! देखो, गुरूतव ब्रह्मे वृतं देवाः तो वह मुनिवरों! देखो, आपो ही मानो देखो, तरल पदार्थ है। और वह तरल को ले करके ही मुनिवरों! माता के गर्भ में तरलता में रत्त रहने वाला यह जगत्यं कहलाता है।

पृथ्वी की रज से याग

तो मेरे पुत्रों! देखो, आगे वेद के ऋषि से यह प्रश्न किया कि महाराज! कहीं सुविधा भी न प्राप्त हो, कहीं जल भी प्राप्त न हो, तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा कि कहीं जल भी प्राप्त न हो, तो तुम मानो देखो, पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपनाय स्वाहा, समानाय, उदानाय स्वाहा कह करके मानो पृथ्वी की रज को ले करके तुम याग करो और यह उच्चारण करो कि पिण्ड का मूल इसी से बनता है, जब जल ओर देखो, इस पिण्ड पृथ्वी के परमाणुओं का अथवा गुरूतव का मिलान होता है, तो अथवा पिण्ड बन जाता है। और पिण्ड की मानो सङ्कल्प में कोई वस्तु होती है। जैसे माता का ओर पितर का दोनों का समावृत्ति होता है तो मानो देखो, उनके सङ्कल्प में सत्ता है वह पिण्ड बन करके आता है, वही पिण्ड है बेटा! देखो, जो नाना प्रकार की बुद्धियों वाला है। और वही पिण्डाकार बन करके बेटा! देखो, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों का निर्माण होता है। वे परमपिता परमात्मा निर्माणवेत्ता कहलाते हैं। जैसे पृथ्वी का पिण्ड है, और चन्द्रमा सूर्य का पिण्ड है, और भी नाना लोक लोकान्तर पिण्डाकार में दृष्टिपात हो रहे हैं। यह पिण्डाकार जगत हमें दृष्टिपात हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा क्या तुम पृथ्वी की रज को ले करके हूत करो, जिससे तुम्हारा जीवन महान बन जाएं, और तुम मानो देखो, इस पिण्ड जगत को जान जाओ मानो जैसे हमारे यहां माला बनी हुई है बेटा! देखो, एक आभा में माला है मानो पृथ्वी की गणना करोगे, तो अनन्त पृथ्वियां दृष्टिपात आयेंगी, सूर्यों की गणना करने लगोगे तो अनन्त सूर्य आयेंगें, चन्द्रमा भी अनन्तमयी हैं और भी नाना प्रकार के यम नाना रूपों में यह पिण्ड जगत दृष्टिपात आ रहा है। यह लोक लोकान्तर यह पिण्डाकार बने हुए हैं, जगत भी एक पिण्डकार है, इनकी माला बन करके इन्हीं पिण्डों की मनकों की तो देखो, ब्रह्म सूत्र में यह पिरोया हुआ जगत दृष्टिपात आता है। तो मेरे प्यारे! देखो, प्रभु कितना अनन्तमयी हैं, तो मानो देखो, ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम मानो देखो, इस पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, अञ्जलि में ले करके मानो वही पिण्डों का मूल बना हुआ है। परन्तु यज्ञदत्त ने कहा प्रभु! जब बाल्यकाल हम पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते रहे हैं।

वेदमन्त्र के द्वारा याग

तो यह वाक उन्होंने स्मरण कराया हम यह जानना चाहते हैं क्या हे भगवन! देखो, कहीं ऐसा काल आ जाएं, क्या हमे यह पृथ्वी की रज भी प्राप्त न हो और इच्छा यह रहती है कि हम याग करें तो कैसे करें? तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा तुम अञ्जलि को लो और अञ्जलि को ले करे वेदमन्त्र उच्चारण करो और वेदमन्त्र उच्चारण करके स्वाहा उच्चारण करो मेरे प्यारे! देखो, अञ्जलं ब्रह्मा वह मन मस्तिष्क एकाग्र रहना चाहिए मन मस्तिष्क और विचार जब एकाग्र हो जाता है और वेद मन्त्रों का जब उद्गीत गाता है, प्राणं ब्रह्मा प्राणं ब्रहे अस्सुतं देवं यज्ञानाम ब्व्हे अस्सुतम स्वाहा ऐसा उद्गीत गाता है, जब स्वाहा कहता है, तो मेरे प्यारे! देखो, अपने में अपनेपन को धारण करता है। तो विचार आता रहता है क्या वेद का ऋषि कहता है याज्ञवल्क्य क्या हे ब्रह्मचारी! तुम मौन हो करके मानो वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो, और

अपने में याज्ञिक बन जाओ और याग करो याग तुम्हें इस संसार से पार करा देगा, क्योंकि तुम्हारे अन्तःकरण में एक एक कण कण का याग होने लगेगा, तुम अञ्जलियों से याग करोगे प्रत्येक इन्द्रियों के साकल्य को ले करके तुम अन्त मानो देखो, यज्ञं ब्रह्मा तुम याग में परणित हो जाओ, तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो यज्ञदत्त ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गएं। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आपने हमें देखो, याग के समीप पंहुचा दिया है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि नही कि यह तो मानो देखो, क्रियाकलाप है, यह प्रत्येक मानव को करना चाहिए कर्मकाण्ड की पद्धतियों में प्राण को अपान में, अपान को प्राण में और प्राणं ब्रह्मा प्राणं ब्रहे इस प्रकार वेद मन्त्रों का उद्गीत गा करके स्वाहा उच्चारण करना चाहिए। वही अन्तरिक्ष में तुम्हारे चित्र बन जाते हैं, और वही तुम्हें ही प्राप्त होते रहते हैं। तो इसीलिए तुम याग किया करो तो मेरे प्यारे! याग का व्याख्या देने के पश्चात ऋषि अपने में मोन हो गया और वेद मन्त्रों का उन्होंने उद्गीत गाया और उद्गीत गा करके सम्मं ब्रह्मा लोकां वाचसुतं तो वह यज्ञदत्त ओर याज्ञवल्क्य मुनि महाराज दोनों मौन हो गएं, अपने में मौन हो करके अपनी आभा में परणित रहे अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवां भूतं भवि वरूणाश्चमं वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा भद्र ऋषि मण्डल! भद्र समाज! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। गागर और सागर दोनों ही सूक्ष्म रूप में रहते है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना करते हुए, उन्होंने सर्वत्र जगत को इसमें भरण किया है। तो आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष या टिप्पणी नही कर सकूंगा क्योंकि टिप्पणी करना भी हमारा कर्तव्य नही हैं। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अपने उद्गीत गाने के लिए अपनी विडम्बना युक्त और मानो शब्दों को उद्गीत गीत रूप में गाता रहता हूँ। देखो, जहां यह हमारी आकाशवाणी जा रही है। वहां एक याग सम्पन्न हुआ है ओर मेरा अन्तरात्मा देखो, यज्ञमान के साथ रहता

है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखराड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है, वह गृह सौभाग्यशाली होते हैं, और जिन गृहों में द्रव्य का दुरुपयोग होता है। वह गृह मानो बड़े दुर्भागी होते हैं।

आधुनिक काल वाममार्ग का काल

तो इसीलिए देखो, आधुनिक जो काल है मैं इस काल को पूज्यपाद वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ। यहां मानव सुरा और सुन्दरी में और द्रव्य की लोलुपतता में लगा हुआ है, और वह द्रव्य की लोलुपता में न तो सुन्दरी को दृष्टिपात कर रहा है। और न मानो देखो, सुरा में अपने में परणित हो करके और प्रिय अप्रिय को दृष्टिपात नही कर रहा है। आधुनिक काल में चाहे तो राजा चाहे प्रजा हो दोनों ही वाममार्ग की प्रथा को लिए हुए हैं। और वाममार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करता है। जो शुद्ध मार्ग पर न चलता है। उल्टे मार्ग पे गमन करता है, राजा तो यह नही चाहता चाहे वह प्रजा नष्ट हो जाएं। चाहे उसकी देखो, पदों की लोलुपता उसकी समाप्त हो जाएं, वह तो पदों की लोलुपतता में लगा हुआ है। मानव का नर संहार हो रहा है। तो ऐसा जो राजा है, उसको राजा नही कहा जा सकता। पूज्यपाद गुरुदेव ने इसके पूर्व काल मे देखो, राजाओं का अपना महत्व प्रगट किया था। राजा को विष्णु के रूप में उसको उपाधि से अलंकृत किया है, परन्तु देखो, जब यह अलंकृत किया जाता है। तो वह जितेन्द्रिय होना चाहिए। परन्तु देखो, यहां जितेन्द्रिय न हो करके सुरा सुन्दरी में मानो देखो, पान कर रहा है सुरा में अपने को ले जा रहा है विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ कि यह राष्ट्र और समाज कैसे ऊँचा बने? तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से युक्ति प्रगट किया करता हूँ, क्या कोई राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता तो राष्ट्र ऊँचा बन सकता है और जब पदों की लोलुपतता में ऊँचा नही बना सकता। तो यह ऊँचा नही बनेगा मानो देखो, किस प्रकार ऊँचा बने सबसे प्रथम तो ईश्वर

के नाम पर जो रूढ़ियां बनी हुई हैं, नाना प्रकार की रूढ़ियां बनी हुई हैं, और ईश्वर के नाम पर जो रूढ़ियां हैं। यह राजा का कर्तव्य है यह रूढ़ि नही रहनी चाहिए, क्योंकि यह जो रूढ़ि बनती है। यह कोई न कोई सूक्ष्मता को लिए हुए कोई न कोई त्रुटि को लिए हुए होती हैं। और जब वह त्रुटि के ऊपर कोई आघात करता है, तो उसी समय देखो, रक्त भरी क्रान्ति के अवाशेष उत्पन्न हो जाते हैं। तो ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नही होनी चाहिए।

आचार्यों के शास्त्रार्थ स रुढ़ि समाप्त

मुझे बहुत काल स्मरण आता रहा है। यहां मोहम्मद के मानने वालों ने देखो, रूढ़ि को स्थापित किया, ईसा के मानने वालों ने मानो देखो, रूढ़ि बनाई और यह और भी नाना प्रकार की रूढ़ियां बनी हुई हैं। जिन रूढ़ियों में एक दूसरे के विनाश का मूल बनाते रहते हैं। एक दूसरे के विचारों में मानो देखो, विचार नही हो पाते, तो इसीलिए देखो, राजा यदि अपने राष्ट्र में शान्ति चाहता है, अपने राष्ट्र में, मानो देखो, वह विद्या और अमृति चाहता है। तो वह देखो, सब आचार्यों को एकत्रित करे मोहमम्द के मानने वाले आचार्य भी एक स्थली पर हों। ईसा के मानने वाले भी हों, और भी जितनी ईश्वर के नाम पर रूढ़ि हैं। सब आचार्य एकत्रित हों, राजा की मध्यस्थता में बुद्धिमानो का सम्मेलन होना चाहिए, और बुद्धिमानो से मानो देखो, धर्मं ब्रह्मा आधुनिक राजा कहता है, कि हम धर्म निरपेक्ष हो गएं हैं। अरे, जब धर्म की अपेक्षा कर रहे हो, तो तुम्हारे द्वारा रह क्या गया है। जब धर्म ही नही रहा परन्तु धर्म को समाज में देखो, रूढ़िवाद में स्वीकार कर लिया एक राजनेता कहता है, हम नाना धर्मों को स्वीकार करते हैं अरे, भोले प्राणियों! तुमने विद्या को यह अध्ययन करके उसको भी देखो, गेद्दले में परणित कर दिया है। क्योंकि देखो, यह जो धर्म है, यह तो वचन ही एक है। यह बहुवचन नही कहलाता। एकोवचनं ब्रह्मा धर्मा धर्म एक ही वचन कहा जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया कि धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। मानो नेत्रों में सुदृष्टिपान करना, सु

शब्द, सु सुगन्ध, सु उच्चारण करना उत्तम ब्रह्म ओर सु मानो देखो, सब इन्द्रियों में समाहित रहता है। उसी का नाम धर्म है। उसी से मानवता का जन्म होता हैं, और कर्तव्यवाद उसी से आता है। मैं सदैव यह करता हूँ कि जब रूढ़िवाद पनप जाता है। तो विज्ञान का दुरूपयोग होने लगता है, और विज्ञान के दुरूपयोग होने से रक्तभरी क्रान्ति आ जाती है। और वह रक्तभरी क्रान्ति एक दूसरे प्राणी को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाती है इसके मूल मे यह ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ि हैं। राजा के मध्यस्थता हो और वह बुद्धिमानो का सम्मेलन हो और राजा निर्णायक हो मानो देखो, वेद के आचार्य के द्वारा और वह निर्णायक हो कि देखो, धर्म किसे कहा जाता है। देखो, धर्म एक है और रूढ़ि अनेक कही जाती है, तो इसीलिए रूढ़िवाद को नष्ट करना और धर्म ओर मानवता को अपनाना यह राष्ट्र का कर्तव्य कहलाता है। यह राजा इस प्रकार का होना चाहिए जो धर्म और मानवता की ऊर्ध्वा गति को और रूढ़िवाद को नष्ट करने वाला हो, परन्तु देखो, आधुनिक काल मे तो राजा तो नही मैं राष्ट्र के ऊपर क्या उद्गीत गा सकूंगा। क्योंकि देखो, राजा भी स्वार्थी है। प्रजा भी स्वार्थी है। ईश्वर के नाम लेता भी स्वार्थी हैं, और स्वार्थपरता में मानो देखो, अपनी आत्मा को ऊँचा न बना करके वह अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाते हैं राष्ट्र को समूह में ले जाते हैं। तो यही रक्त भरी क्रान्ति के अवाशेषों का जन्म होना है। तो मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई कालों यह प्रगट कराया है कि क्या राजा को चाहिए, कि इसमें रूढ़ि नही रहनी चाहिए। धर्म मानवीय मस्तिष्क आत्मिक धर्म है, उस धर्म को अपनाना चाहिए मानो अन्तःकरण में जिसमें हिंसा नही हो क्योंकि अहिंसामयी विचार होना चाहिए ओर यौगिकवाद होना चाहिए। रूढ़िवाद मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने रूढ़ि उच्चारण किए हैं, मानो देखो, यहां ऋषि मुनियों को भी पत्नियों की उपाधि प्रदान की जाती हैं, और पत्नी कहा जाता है। परन्तु हैं वह ऋषि जैसे कागभुषुण्ड जी ने माता स्नेह लता है। और पिता का नाम महर्षि विभाण्डक वृत्ति कहा जाता था परन्तु वह उनको कागभुषुण्ड के नाम से कागा के नाम से समाज ने उसे वर्णन किया, क्योंकि अपभ्रन्श शब्दों में ले गएं क्या आज

तो साहित्य भी भ्रष्ट हो गया तो इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता हूँ। क्या राजा की मध्यस्थता में रूढ़िवाद समाप्त होना चाहिए।

राजा की मध्यस्ता से रुढ़ि समाप्त

यौगिकवाद आ जाना चाहिए और यौगिकवाद को जो समन्वय है। वह मन और प्राण से जो सर्वत्र हृदयों में मानो विद्यमान हो रहा हैं आत्मा उसके मध्य में आत्मा के प्रकाश से गमन कर रहा है। तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से विशेषता नही केवल यह क्या राजा परन्तु अन्त में मैं यह कहता हूँ, कि राजा तो यह चाहता ही नही क्या राष्ट्र में शान्ति हो राजा तो यही चाहता है कि क्रान्ति हो तो तुम्हारा जीवन का मानो तुम द्रव्य को एकत्रित करने में लगे रहो और द्रव्य का दुरूपयोग करके राजा तो संसार का पृथ्वी के सर्वत्र राष्ट्र यही चाहते हैं, परन्तु देखो, रूढ़िवाद में परणित हो रहा है। तो रूढ़िवाद समाप्त होना चाहिए। राजा यदि अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो हिंसा नही होनी चाहिए। अहिंसामयी विचार होना चाहिए। जिससे राष्ट्र एक मानवीयता में परणित हो जाएं। और धर्म एक मानवीय इन्द्रियों का विषय बन करके साकल्य बन करके यह यौगिक प्रतिक्रियाओं में रत्त होता रहे। जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया है आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह मेरे हृदय मे एक विडम्बना बनी रहती है कि राष्ट्र समाज किस काल में ऊँचा बनेगा, यह अपनी स्वार्थपरता को मानो देखो, किस काल में वाममार्ग की बलवती होती जा रही है। केवल राष्ट्र में रूढ़िवाद होने से केवल राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर रूढ़िवाद यह केवल वाममार्ग का काल है। और यह केवल वाम मार्गी देखो, राजा है, प्रजा है, और धर्मज्ञं देखो, यह रूढियां हैं। जिसको यह धर्म कहता है वह धर्म नही वह रूढ़ि है। धर्म मानव की इन्द्रियों में कर्तव्यवाद में समाहित हो रहा है जो विज्ञान के ऊपर कर्तव्यवाद में निहित हो जाएं, वही धर्म माना गया है। तो अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। विचार केवल यह कि राष्ट्र को ऊँचा बनना है, तो वह उनके धर्म की धार्मिक देखो, रूढ़ियों के आचार्य एकत्रित

हों, और राजा दार्शनिक हो और राजा ब्रह्मवेत्ता हो उनके आचार्य उनके पुरोहित आचार्य ब्रह्मवेत्ता जिससे वह अपना मन्तव्य दे सकें। धर्म की मीमांसा कर सके तो यह आज का विचार मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ क्या मेरा जो अन्तरात्मा है। वह यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और गृह में दव्य का सदुपयोग होता रहे जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है, वाममार्ग क्रियाकलापों में या विज्ञान के दुरूपयोग में देखो, सुरा सुन्दरी का वह पान कर रहा है, अथवा देखो, नाना प्रकार की मेरी पुत्रियों का नृत्त हो रहा है विज्ञान में तो वह मानव के ब्रह्मचर्य को भ्रष्ट कर रहा है। इसीलिए देखो, मैं यह कहता हूँ कि हे राजवेत्ताओं! तुम्हें विज्ञान का सदुपयोग करना चाहिए। हे प्रजाओं! तुम विज्ञान के सदुपयोग में अपने को ले जाओ द्रव्य को वह द्रव्य मां हैं। इसको मां बना करके पूजा करोगे, तो यही द्रव्य यही मायावती बना करके तुम्हें धन्य करा देगा, और इसका दुरूपयोग करोगे तो एक समय देखो, मां अपने पुत्र को त्याग देती है। पुत्र देखो, द्रव्यहीन बन जाता है। वह किसी भी वृत्तियों में नही आता, तो इसीलिए द्रव्य का सदुपयोग हो गृह में महानता हो यह मेरा एक मन्तव्य रहता है। तो अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार व्यक्त किए इनके विचारों में कितनी सार्वभौमता विद्यमान हैं, राजा के प्रति क्या क्या कर्तव्य है, राजा के यहां रूढ़ि नही होनी चाहिए। मानवीय विचारों में व्यापकवाद और धर्म रक्षा होनी चाहिए क्योंकि राष्ट्र को जो निर्माण है। वह धर्म की रक्षा करने के लिए होता है, तो देखो, यह वाक अब सम्पन्न होने जा रहा है, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हमें याग करना चाहिए। मन्त्रार्थ भूतं वेद मन्त्रों का उद्गीत गायें, और देखो, साकल्य भी न हो तो याग करो परन्तु अपने विचारों से याग करो यह आज का वाक सम्पन्न हो गया है। समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं। कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मां ग्राहणां त्वा यम मयाः।

12. मृत्यु का अभाव-920801

परमपिता परमात्मा वेदज्ञ

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वेदज्ञ हैं, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके। तो उसका ज्ञान और विज्ञान सीमा से रहित है, तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का, सदैव गान गाते रहते हैं। क्योंकि वह अव्रय है, और वह सर्वत्रता में विद्यमान हैं। कोई एक भी गुफा नहीं हैं पर्वतों में जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो, समुद्रों की कोई भी तरंग ऐसी नही हैं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा नही हैं, वह सर्वत्रता में विद्यमान रहते है। आज का हमारा वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गान गा रहा था। और उसकी महिमा का वर्णन कर रहा था जो परमपिता परमात्मा वरणीय है। जो मानव उसको अपना वरूण बना लेता है, अथवा उसे पर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। तो हमारे यहाँ वेदमन्त्र कह रहा था, विष्णु ब्रह्मा वर्णा व्रतं देवाः क्या वे परमपिता परमात्मा विष्णु है, और वह पालना करने वाला है।

पालना के मूल में विष्णु

क्योंकि हमारे यहाँ मैंने तुम्हें कई कालों में प्रगट कराया, क्या जहाँ भी पालना का मूल आता है, वहीं विष्णु शब्द का प्रतिपादन किया जाता है। हमारे वैदिक साहित्य

में, भिन्न भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना होती रही है। परन्तु देखो, दो प्रकार के शब्द हमारे यहाँ, परम्परागतों से माने जाते हैं। एक यौगिक होता है द्वितीय रूढ़ि होता है, तो परमात्मा यौगिकवाद में निहित रहता है। इसीलिए वह पालक है और जहाँ भी पालना का मूल आता है। वहीं विष्णु शब्द का प्रतिपादन किया जाता है। हमारे यहाँ जैसे परमात्मा का नाम विष्णु है। इसी प्रकार माता का नाम भी विष्णु हैं, और सूर्य का नाम भी विष्णु है, और यज्ञोमयी विष्णु क्योंकि याग का नाम पालन करने वाला और पालना के मूल में सर्वत्र मानो देखो, विष्णु शब्द का प्रतिपादन होता रहा है। तो यह यौगिक शब्द बन करके हमारी अन्तरात्मा में एक मानो प्रकाश का पुंज बन करके जीवन में एक महानता की ज्योति जागरूक होने लगती है। परन्तु जहाँ वेद का मन्त्र यह कहा रहा था एक वेदमन्त्र आज आ रहा था यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञनं ब्र्व्हे कृतं देवाः वेद का वाक कहता है कि हे मानव! तू यम बन, तू मानो देखो, मृत्यु को विजय करने वाला बन यमं ब्रह्मा देखो, यम कहते हैं जो देखो, मृत्यु को विजय करने वाला बन, तू मृत्युञ्जय बन करके यम बन करके तू अपने जीवन को इस संसार को विजेता विजय करने के पश्चात तू गमन करने वाला बन, मेरे प्यारे! देखो, यह मृत्यु शब्द प्रायः प्रत्येक मानव के हृदयों में समाहित रहती है। आओ, बेटा! मैंने तुम्हें कई कालो में चर्चाएं की हैं, आज भी मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ प्रत्येक मानव मृत्यु के आङ्गन में सदैव रत्त रहता है। मुझे बेटा! वह सभा स्मरण आ रही है, जिस सभा में नान ऋषिवर विद्यमान हो करके अपना विचार विनिमय किया करते थे।

ऋषियों का मृत्यु के विषय में विचार

मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, जिस समय महात्मा जमदग्नि के आश्रम में एक सभा थी और पारेत्वर ऋषि महाराज उनके अङ्ग संग रहने वाले थे परन्तु इसमें महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, ब्रह्मचारी सुकेता ब्रह्मचारी कवन्धि ब्रह्मचारी रोहिणी केतु महर्षि पिप्लाद चाक्राणी गार्गी देवर्षि नारद और गाड़ीवान रेवक

मुनि महाराज महर्षि भारद्वाज और महर्षि रेणकेतु सर्वत्र ऋषि मुनियों का एक समूह विद्यमान था। परन्तु देखो, वहाँ उस सभा में महात्मा जमदग्नि ने एक वेदमन्त्र का उद्गीत गाया और वह वेदमन्त्र कह रहा था, मृत्युं जमदम्ब्रह्मा लोकां ब्रव्हे कृतं देवाः वेद का ऋषि कहता है कि हे वेदज्ञ! मैं ये जानना चाहता हूँ, क्या मृत्यु क्या है? इसीलिए मैंने सर्वत्र ऋषि मुनियों का एक सभा एकत्रित की है, जिसमें नाना ऋषिवर विद्यमान हैं, जो मृत्यु के ऊपर अध्ययन करने वाले हैं। परन्तु देखो, यह जो संसार है, यह मृत्यु के आङ्गन में सदैव निहित रहता है। यह मृत्यु क्या है? मैं मृत्यु को जानना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! ऋषि मुनियों में यह बड़ी विचारधारा क्रान्तिमयी विचारधाराओं में रत्त हो रहे हैं, और जमदग्नि इस वाक को कह करके और वेदमन्त्र उद्गीत गा करके वह शान्त हो गएं। मेरे प्यारे! देखो, सभा शून्य है कोई भी उनके प्रश्नों का उत्तर नही दे रहा है।

चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई, चाक्राणी ने कहा हे प्रभु! हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं ऋषि के प्रश्नों का उत्तर दे सकूं। उन्होंने कहा अवश्य दीजिए। तो उन्होंने कहा कि मैंने तो अब तक इतना जाना है, शरीर और आत्मा के दोनों के पृथक पृथक हो जाने का नाम मृत्यु है। मेरे पुत्रों! देखो, इतने में महर्षि प्रवाहण ने यह प्रश्न किया कि हे देवी! ये मृत्यु शब्द इससे नही बनता, क्योंकि दोनों का अस्तित्व है। मानो देखो, ये पञ्च महाभूतों का यह शरीर है, इसका परिवर्तन हो गया है, और आत्मा अपने चित्त के मण्डल के लिए भ्रमण करता है। तो इसीलिए ये मृत्यु शब्द नही बनता है। उन्होंने कहा प्रभु! मैं तो इतना ही जान पाई हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ये प्रकरण ही चल रहा था इतने मे पिप्लाद मुनि महाराज उपस्थित हुए, और पिप्लाद ने कहा देवं ब्रह्मा मृत्यु वेद के ऋषि पिप्लाद ने कहा कि मेरे विचार में तो मृत्यु का अभाव है। मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही होती है। तो उन्होंने कहा तो प्रभु! भव्यं ब्रहे कृतं व्रणासुता क्या यह संसार रूदन क्यों करता है। प्रत्येक मानव देखो, मेरी प्यारी माता अपने बाल्य के लिए दुःखित हो रही है। पति पत्नी के लिए

दुःखित हो रहा है। पत्नी पति के लिए दुःखित हो रही है। यह संसार भगवन! क्या है? जो इतना विडम्बनामयी युक्त यह मानो देखो, एक वृत माना गया है।

मृत्यु का अभाव

तो महर्षि पिप्लाद मुनि ने कहा, क्या ये अमृतं ब्रह्मा क्या संसार अमृत को नही जानता, और अमृत के न जानने से ही मानो देखो, ये विडम्बना बनी हुई है इसीलिए यह उत्तर दे करके वह अपने में मौन हो गएं। मेरे प्यारे! सांयकाल का समय था, और सन्ध्या काल हो गया और सन्ध्या काल होते ही सब ऋषि मुनि अपने अपने कक्ष में जा पंहुचे, और विचारणीय विषय था उसके ऊपर विचार विनिमय करने लगे, परन्तु महर्षि पिप्लाद मुनि का आश्रम निकटतम में था उन्होंने विचारा कि मैं रात्रि समय अपने गृह मे वास करूंगा। मेरे प्यारे! देखो, देवर्षि नारद मुनि के विचारों ने सर्मथन किया कि तुम्हारा वाक यथार्थ है।

विष्णु द्वारा शरीर का निर्माण माता के गर्भस्थल में

मेरे प्यारे! पिप्लाद मुनि जब अपने गृह में अपने आश्रम में पंहुचे तो उनकी पत्नी शकुन्तका अपने देव को दृष्टिपात करके, वह चरणों की वन्दना करने लगे और व्याकुल होने लगी उन्होंने कहा देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा मैं इसीलिए व्याकुल हूँ पुत्रां भूतां लोकाः वृत्ति उन्होंने कहा कि मेरा एक पुत्र था वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है भगवन! मैं इसीलिए व्याकुल हो रही हूँ, क्योंकि मेरा सात वर्षीय पुत्र था वह मृत्यु को चला गया। मेरे प्यारे! पिप्लाद मुनि ने कहा देवी! तुम्हें यह प्रतीत है, क्या मैं ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से मेरा आगमन हो रहा है, और मैं ब्रह्मवेत्ता को निर्णय दे करके आया हूँ, वेदमन्त्रों का उदगीत गाता हुआ कहता हूँ, अभावां मृत्युं ब्रह्मा लोकाः वृत्ति देवाः क्या यह मानो देखो, मृत्यु अभाव में रहता है। इसका भाव नही हैं अभाव है मानो देखो, अपने में कोई मृत्यु नही होती उन्होंने कहा तो देव! मैं तुम्हारे वाक्यों का समर्थन करती हूँ। परन्तु मैं जानना

चाहती हूँ कि यह मेरा शरीर क्या है? उन्होंने कहा देवी! यह परमाणुओं का संघात है। मानो देखो, माता के गर्भस्थल में, एक शिशु है, मानो बिन्दु हैं, बिन्दु में शिशु है, और शिशु का निर्माण करने वाला, उस शरीर का आकारं ब्रह्मे देखो, परमात्मा कहलाता है। और वह मानो देखो, उसका निर्माण करता है। इसीलिए ये परमाणुओं का संघात है। बाल्य काल में माता के गर्भ से संसार में आता है, परमाणुओं का संघात होता रहता है अन्नादं ब्रह्मे प्रमाणं ब्रहे ये परमाणुवाद ही तो बलवती होता रहता है। तो वही बाल्य युवा हो जाता है, वृद्धपन को प्राप्त हो जाता है, वही परमाणुओं का संघात है। और यह पञ्च महाभूतों का पिण्ड कहलाता है। परन्तु इसमें अग्नितव है, तरलतव है, और गुरूतव है और इसी में देखो, प्राणं ब्रह्मा वायु सम्भवा वायु है। और इसी में देखो, अवकाश विद्यमान रहता है। तो इसीलिए वेदाम् ब्रह्मा पञ्च लोकां भूतं ब्रह्मे यह पञ्च महाभूतों का लोक कहलाता है, इसमें मानव सदैव गमन करता रहता है मानो प्रमाणं ब्रह्मा वर्णं चरेवेति अस्वात यह गति करता रहता है। चरैवेति है तो विचार आता रहता है देवी! ये मानो देखो, चन्द्रतं यह परमाणुओं का संघात है जैसे ऋषि मौन होने लगे देवी! ने कहा प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ कि जब मानो देखो, यह परमाणुवाद इस रूप में नही था? तो कहाँ रहता था उन्होंने कहा देवी! परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में विद्यमान था, माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। परन्तु देखो, मेरी प्यारी माता के गर्भस्थल में, जैसे शिशु का प्रवेश हो जाता है, आत्मां भूतं ब्रह्मे मानो देखो, पञ्च महाभूतों के लोक में उसी समय देवता रक्षा करना प्रारम्भ करते रहते हैं। चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है, अग्नि उष्ण बनाती है, और देखो, ये माता के गर्भ में होता है, तो ये मानो देखो, जल इसके पांशे बने रहते हैं, जल ही ओढ़न है, जल ही बिछौना है, और जल ही पांशे बने हुए हैं, बेटा! उसमें हम जैसे शिशु वास करते रहते हैं। तो विचार वेत्ताओं ने कहा है कि गमनं ब्रहे वह उसी मे गमन करता रहता है निर्माण करने वाला निर्माण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वायु प्राण देता है और अन्तरिक्ष अवकाश देता है अग्नि तेजोमयी बनाती है, और मुनिवरों!

देखो, पृथ्वी गुरूतव देती है। पिण्डों का निर्माण हो जाता है। विचार आता रहता है वे परमपिता परमात्मा निर्माणवेत्ता है, जब निर्माण करता है, तो बेटा! देखो, कहीं बुद्धि का निर्माण है, कहीं नाना प्रकार की नस नाड़ियों का निर्माण हो रहा है, मेरे प्यारे! निर्माणवेत्ता ने जब निर्माण किया तो बहतर करोड़, बहतर लाख, दस हजार, दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता रहा है। तो मेरे प्यारे! निर्माण करने वाला जो चैतन्य देव है जो रक्षिता रक्षां ब्रहे सुरक्षं रक्षा करने वाला वही मानो देखो, निर्माण करने वाला है। तो मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में, कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी का निर्माण हो करके ये परमात्मा की दर्शनों की आभा में सदैव रत्त रहता है। कहीं मानो देखो, मनस्तव ब्रह्मा और हृदयों का निर्माण हो रहा है, और मुनिवरों! देखो, ये मानव का शरीर एक महान, अपने अपने रूपों में रत्त हो करके, प्रभु का यशोगान गा रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा कि यही परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में विद्यमान है, तो माता उन परमाणुओं को मानो देखो, उसके मूल में विद्यमान रहती है। बेटा! देखो, मेरी भोली माता को ये ज्ञान नही होता, कौन निर्माण कर रहा है? कौन निर्माणवेत्ता है। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि इतना उच्चारण करके शान्त होने लगे। परन्तु देवी ने कहा प्रभु! जब यह माता का गर्भाशय नही होता यह परमाणुवाद कहाँ रहता है। उन्होंने कहा देवी! यही परमाणुवाद मानो कुछ वीरांगना के रूप में होता है, कुछ वीरतव के रूप में होता है, वीरांगना इनकी रक्षा करने वाली ब्रह्मवेत्ता कहलाती है, और ब्रह्मवादिनी बन जाती है, और ब्रह्मवर्चोसि बन करके अपने में अहिंसा में परणित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है। हे देवी! चाक्राणी गार्गी जब साम गान गाती थी तो मानो देखो, भंयकर वनों में सर्पराज और देखो, सिंहराज देखो, उनके चरणों की वन्दना करते रहते थें, जब मानव अहिंसा में परणित हो जाता है। इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला ही अहिंसक बनता है। वही महान बन करके कहीं मानो देखो, अपने मन्तव्य से वह सदैव देखो, गनतप्रहा अपने में ही रत्त जाता है। तो विचार वेत्ताओं ने कहा है क्या मुनिवरों! देखो, इन परमाणुओं

की रक्षा करने वाली मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है, और इन्ही परमाणुओं की रक्षा करने वाला, वीरतव को प्राप्त होता है। इसे हम ब्रह्मवर्चोसि कहते हैं, ब्रह्मवर्चोसि उसे कहते हैं जो ब्रह्म और चरी को जानने के लिए सदैव तत्पर होता है। ब्रह्म कहते हैं, परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को, जिसके सन्निधान मात्र से यह जगत नाना रूपों में दृष्टिपात आता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह चरी कहलाती है ब्रह्मा जिसमें ओत प्रोत होने से गतिवान रहता है। तो विचार वेत्ताओं ने कहा है यम ब्रह्मा वर्णनं इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला वीरतव को प्राप्त हो जाता है। वह देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है। देवताओं की सभा में मानो उसका अपना अस्तित्व हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वीरतव भूतं ब्रहे वीरतव वह परमाणुवाद विद्यमान रहता है। मुनिवरों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला योगी बनता है। साधक बनता है, और साधक बन करके यागेश्वर बन करके प्रभु की महिमा में सदैव रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! ब्रह्मरन्ध्र से ले करके मूलाधार से ले करके ब्रह्मरन्ध्र में अपनी आत्म चेतना को ले जाता है, और वह त्रिवेणी के स्थान में होता हुआ मुनिवरों! देखो, उसमें भ्रमण करता है। तो विचार आता रहता है कि वह आत्मा विष्णु कहलाता है। जैसे हमारे आज के वेदमन्त्रों में बेटा! विष्णु शब्द की प्रतिभा का वर्णन आ रहा था, विष्णु गतं ब्रह्मा लोकां वाचसुतं वही तो लोकों में रत्त रहने वाला मानो देवतव माना गया है। तो विचार आता रहता है कि वे परमपिता परमात्मा हमारे अन्तर्हृदयों में विद्यमान और गुरूतव के रूप में विद्यमान रहता है। यह ब्रह्मवर्चोसि के रूप में रहता है। उसी से बेटा! आत्मा विष्णु कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विष्णु का अभिप्राय जब तक वह शरीर में रहता है, वह क्रियाशील बना रहता है, चेतना से शून्य होने पर प्रभु की शून्यता को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो देवी! ने कहा प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ। जब मानो यह गुरूतव भी नही होता, अमृतं ब्रह्मा यह परमाणुवाद नही होता तो यह अमृतं ब्रह्मा यह परमाणु अपने में कहाँ रहता है।

साझा अन्न

प्रभु! जब वीरता वीरांगना भी नही होती तो यह परमाणु कहाँ रमण करता है? मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा कि हे देवी! यह परमपिता परमात्मा का अनूठा जगत है, जब सृष्टि के पिता ने सृष्टि का प्रारम्भ किया तो सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। सबसे प्रथम वह अन्न जो अपना साझा अन्न है, मेरे प्यारे! देखो, एक ही पौधा है। जिसमें दो प्रकार का अन्न है। एक अन्न जो पशु पान करता है, वह पय दे रहा है और एक जो मानव पान कर रहा है, वह ओज और तेज की उत्पति कर रहा है। वह तेजोमयी बन रहा है। तो मुनिवरों! देखो, अन्नादं ब्रह्मणे लोकां वृत्ति देवाः अमृतां देवाः तो मेरे प्यारे! देखो, अमृत को प्राप्त हो रहा है। एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है, और एक अन्न को मुनिवरों! देखो, पशु पान कर रहा है, वह दुग्ध दे रहा है, तो वह ओज और तेज की उत्पति कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानो देखो, ब्रह्माण्ड का निर्माण किया, यह एक ही पौधा दो प्रकार का अन्न है, एक पशु का है, तो एक मानव का प्राणं ब्रहे एक मानव का अन्न है, मेरे प्यारे! वर्णतं ब्रह्मा वर्णसुतं ये अमृतों को प्राप्त होता रहता है। और देखो, तृतीय अन्न है, जो हूत कहलाता है यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है, और वह हूत कर रहा है, और देवाम् रथं ब्रह्मा वर्णनं ब्रह्मे अग्नि को देवताओं का मुख बना करके उसमें स्वाहाः कह रहा है और यह कहता है प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः कह करके और वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके हूत दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह जो यज्ञमान अपनें में याग कर रहा है देवता उनको अग्नि के मुखारबिन्द में नाना प्रकार का साकल्य प्रदान कर रहा है। जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, और ये नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। ये एक समय देखो, मुझे एक अलंकार की वार्त्ताएं स्मरण आती रहती हैं।

तीसरा अन्न-हूत

एक समय जिज्ञासु जन विद्यमान थें, उन्होंनें कहा कि एक समय देखो, याग को काला हिरण ले गया और काले हिरण को उस याग को वत्रासुर को प्रदान कर दिया और वत्रासुर के उसके अमृतं याग की रक्षा करने के लिए जब देवता अपने अपने स्थान पर उन्होंने गमन किया, तो वह प्रार्थना करने लगे, कि याग की रक्षा करो मेरे प्यारे! देखो, वह शचि के द्वारा पंहुचे और शचि से कहा कि हे मातेश्वरी! हमारी रक्षा करो उन्होंने बेटा! इन्द्र से कहा हे इन्द्र देव! देखो, यह देवताजनों का आगमन हुआ है, और यह याग को काला हिरण ले गया, उन्होंने वत्रासुर को दे दिया है मेरे प्यारे! उन्होंने देखो, इन्द्र ब्रह्मा वर्णानं ब्रव्हे इन्द्र ने मानो देखो, अपने काग रूपी वज्र का निर्माण किया मानो देखो, वज्र को ले करके वत्रासुर का उन्होंने वध किया, तो वत्रासुर जब विनाश को प्राप्त हो गया तो धीमी धीमी वृष्टि हो गई, और जब वृष्टि हो गई तो बेटा! उसमें मानो गो के बछड़े की बलि का वर्णन आता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ये वैदिक साहित्य में, भिन्न भिन्न प्रकार की प्रतिभा कहलाती हैं। तो विचार आता है कि वह अमृतं मेरे बेटा! देखो, काला हिरण जहाँ याग को काला हिरण कहते हैं, धुएं को वह काला हिरण ले गया और काले हिरण ने बेटा! वत्रासुर मेध को प्रदान कर दिया और वत्रासुर ने देखो, उसी याग को ले करके धीमी धीमी वृष्टि कर दी, शचि नाम विद्युत का है और इन्द्र नाम वायु का है, जब मुनिवरों! देखो, वृष्टि हो गई तो यह पृथ्वी में देखो, अमृतं ब्रह्मा बेटा! देखो, पृथ्वी व्यंजनों वाली बनने लगी ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, बांझपन में रहती है मेरे प्यारे! देखो, गऊ के बछड़ों को ले करके वहाँ मुनिवरों! देखो, उन्होंने पृथ्वी के चमड़ी को उधेड़ करके, मानो उसके मांस में बीज की स्थापना की। तो ये नाना प्रकार के अन्नाद वाली बन गई। यह नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन गई तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय यह क्या मानो देखो, जहाँ बैल मानो देखो, जहाँ बलि का अभिप्राय है पुरूषार्थ करना और पुरूषार्थ करके ही मानो देखो, अपने में नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देना, द्रव्य को एकत्रित करना, यह अन्नाद को लेना ये सर्वत्र मानो उनका एक क्रियाव्रत कहा जाता है, तो विचार आता है बेटा! उसका नाम बलि है।

पुरूषार्थ का नाम ही बलि है, न कि किसी के प्राणों के हनन करने का नाम बलि नहीं है। यह पामरों का कर्तव्य है। जो देखो, प्राणियों की बलि प्रदान करते हैं। बलि का अभिप्राय है कि प्राणी प्राणी एक दूसरे का सहायक बना हुआ है, पुरूषार्थ करके अपने में नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाला बनें। तो मेरे प्यारे! देखो, जिससे देवता प्रसन्न होते हैं। देवा नाम अग्नं ब्रह्मा वाचप्रहे यह अग्नि देवताओं का मुख है। इसके मुख में यज्ञमान आहुति देता है, कहता है, अमृतं ब्रह्मा लोकां वाचन्नमं ब्रहे स्वाहाः इस प्रकार हूत करता हुआ मानव अपने में प्रसन्न होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, हूतं ब्रह्मे लोकां ऐसा उद्गीत गा करके उन्होंने कहा देवी! यह मानो देखो, तीसरा अन्न है, जिसको हूत कहा जाता है।

चतुर्थ अन्न-प्रहूत

चतुर्थ जो अन्न है। मानो वह प्रहूत कहलाता है। इसीलिए प्रत्येक गृह में राजा के राष्ट्र में समाज में पुरोहित होने चाहिएं। जो पराविद्या के देने वाले हों। जिससे समाज ऊँचा बनता है, और समाज में पुरोहित नही होते पराविद्या नही होती, वह समाज मानो देखो, अधूरेपन में परणित हो जाता है। इसीलिए मुझे स्मरण आता रहता है त्रेता के काल में देखो, महाराजा विश्वामित्र वशिष्ठ दोनों एक स्थली पर विद्यमान थे, एक समय देखो, महाराजा वशिष्ठ ने कहा हे यम ब्रह्मे व्रतं हे ब्रह्मवेत्ता! जाओ तुम देखो, एक याग करो, धनुर्याग उन्होंने कहा बहुत प्रिय मेरे प्यारे! उन्होंने धनुर्याग की रचना की दण्डक वनों में धनुर्याग को रचा और रचने के पश्चात वशिष्ठ से बोले कि प्रभु! बिना राजकुमारों के याग सफलता को प्राप्त नही होगा। तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से महर्षि विश्वामित्र गमन करते हैं, भ्रमण करते हुए वह अयोध्या में पंहुचे, अयोध्या में जाने के पश्चात मुनिवरों! देखो, त्राहि हो गया क्या एक ऋषि का आगमन हुआ है, इसका कोई कारण है। क्योंकि बिना सूचना के ऋषि का आगमन होना यह कोई न कोई मानो देखो, अवश्य है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह राजस्थली पर पंहुचे राजा ने अपने स्थान को त्याग दिया और ऋषि से कहा आईए

भगवन! विराजिए उन्होंने आसन पर विराजामान हो गएं राजा ने नत मस्तिष्क हो करके कहो भगवन! आप मुझे सूचना दे देते मैं अपने वाहनों में अपना आगमन कराता प्रभु यह क्या कारण है। जो बिना सूचना के आज अयोध्या में तुम्हारा आगमन हुआ है उन्होंने कहा राजन तुम्हें प्रतीत है कि मैं दण्डक वनों मे याग कर रहा हूँ, धनुर्याग और मेरे धनुर्याग को तुम पूर्ण कराओ। मुझे राजकुमारों को प्रदान करो। उन्होंने कहा प्रभु! मैं राजा हूँ, और तुम्हारे याग का कर्तव्य पूर्ण कराना मेरा कर्तव्य है। परन्तु मं ब्रहे आज्ञा दो उन्होंने कहा नहीं मुझे राजकुमार चाहिएं। उन्होंने कहा राजकुमार तो किशोर हैं। तो बेटा! यह वार्ता चल रही थी, इतने मे राजलक्ष्मियों को यह प्रतीत हुआ आज तो विश्वामित्र का आगमन हो रहा है। तो विश्वामित्र के आगमन के उपलक्ष्य में बेटा! देखो, देवियों ने अपने आसन को त्याग करके अपने न्यायलयों को त्याग करके वह राजस्थली पर आ गएं, और ऋषि के बारी बारी चरणों को स्पर्श किया। कौशल्या जी ने कहा कहो भगवन! आज बिना ही सूचना के आपका आगमन हुआ है। उन्होंने कहा हां दिव्या! उन्होंने कहा तो क्या आज्ञा है? क्या मैं राजकुमारों को चाहता हूँ। मैं अपने याग को पूर्ण करा रहा हूँ। उन्होंने कहा ब्रह्मे राजन आप राजकुमारों को अवश्य दीजिए। जिससे याग सम्पन्न हो राजकुमारों मे देखो, पुरोहित का नाद हो, उन्होंने कहा देवी! यह बाल्य तो किशोर हैं। कौशल्या ने कहा तुम मोह में मत आओ, क्योंकि देखो, राजकुमारों से मोह में नही आना चाहिए। यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य यदि एक ऋषि की सेवा नही कर सकता तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा। मेरे पुत्रों! जब कौशल्या ने ऐसा कहा राजा मौन हो गएं, और चारों राजकुमारों को मुनिवरों! देखो, उन्होंने प्रदान कर दिया जाओ तुम धनुर्याग में धनुर्विद्या को प्राप्त करो तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र उनको देखो, कुछ अन्न जल का पान करने के पश्चात उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए बेटा! वह दण्डक वनों में आ गएं जहाँ दो सौ चौरासी ब्रह्मचारी देखो, आश्रम में अध्ययन कर रहे थे। जहाँ बेटा! देखो, धनुर्याग अपने में अस्त्रों शस्त्रों की विद्याओं को बेटा! वह पान करते रहते थे नाना ब्रह्मचारी

अध्ययन करते रहते देखो, वह समय समय पर उनका दीक्षान्त उपदेश भी होता और नाना ऋषि मुनियों का आगमन भी होता रहा बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है वहाँ महर्षि भारद्वाज और भी नाना ऋषिवर बेटा! देखो, आश्रम में बेटा! दीक्षान्त उपदेश देने के लिए सदैव तत्पर रहे तो यह प्रहूत कहलाते हैं। जो राष्ट्र और समाज का कल्याण करते हैं। जो राष्ट्र और समाज के कल्याण में लगे हुए हैं, वह पुरोहित हैं तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा देवी! यह अन्न मानो चार प्रकार का अन्न मानो देखो, इससे तृप्ति होती हो मानो देखो, ज्ञान की उपलब्धि होती हो देखो, ज्ञान भी अन्न है और जिससे देवता प्रसन्न होते हैं जिससे शरीर पौष्टिक बनता है वह भी अन्न है जिससे पशु पौष्टिक होता है, वह भी अन्न है, तो देवी! संसार के नाना रूपों में यह अन्न प्रदीप्त हो रहा है और इसी प्रकार से चार प्रकार का अन्न सबका साझा अन्न है और तीन प्रकार के अन्न है जो आत्म कल्याण के लिए जिससे आत्मा मानो देखो, साधक अपनी साधना में आत्मा को ऊँचा बनाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह मन, कर्म और विचार वह मन देखो, मनं ब्रह्मे देखो, मन को एकाग्र करता हुआ, उस पर विचार करता है, और कर्म करता है मन, कर्म और विचार को ले करके बेटा! अपनी आत्मा का उत्थान करता है, और नाना इन्द्रियों का साकल्य बना करके वह अन्तरात्मा में हूत कर रहा है। वह आहुति दे रहा है। तो मानो देखो, वह ब्रह्मचारी बन रहा है। साधना में परणित होता हुआ साधना कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा देवी! मेरे परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के सृजन करने वाले ने यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया, यह सृष्टि के प्रारम्भ से इस प्रकार का क्रियाकलाप चला आ रहा है। इससे समाज और देखो, राष्ट्र ऊँचा बनता है तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय जब यह वाक्यं ब्रह्मे उन्होंने उद्गीत गाया, तो ऋषि मौन होने लगे परन्तु देवी! ने कहा प्रभु! नानं ब्व्हे प्रमाणां भूतं ब्रह्मे हे प्रभु! शरीरं अमृतं देखो, जब यह अन्न भी नही होता, तो यह परमाणु कहाँ रहता है? उन्होंने कहा देवी! यही परमाणुवाद मानो देखो, गुरुतं ब्रह्मा वर्णासुतं मानो देखो, कुछ गुरूतव के रूप में हैं, कुछ अग्नि के

रूप में अपने अपने अव्वयों में रमण करता रहा है, एक यह कि आत्मा जब शरीर को त्याग देता है। तो उस समय अग्नि का भाग अग्नि में चला जाता है। जल का भाग जल में परणित हो गया है। और देखो, गुरूतव पृथ्वी में रमण कर गया है प्राण वायु में चले गएं हैं और मानो देखो, अवकाश अन्तरिक्ष में चला गया है, और देखो, आत्मा अपने संस्कारों को ले करके उदान प्राण के साथ में शरीर को त्याग देता है, और यह अपने सूक्ष्म शरीर को ले करके गमन करता है। अमृतं ब्रह्मा लोकां वाचसुतं वेद का वाक कहता है जो विचार जो संस्कार अन्तःकरण में होते उसी से माता के गर्भस्थल में जाने का सौभाग्य प्राप्त होता है, आत्मा जब तब अपने संस्कार विद्यमान रहते हैं। जब तक देखो, यह पुनःरूक्तियों में रमण करता रहता है। माताओं के गर्भ में मानो देखो, यह अपने शरीरों को प्राप्त करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा देवी! न तो परमाणुवाद का विनाश होता है, और न आत्मा का विनाश होता है।

तो मैं जानना चाहता हूँ मृत्यु है क्या? मुझे मृत्यु मेरे आङ्गन में नही आई है, उन्होंने कहा सम्भवं ब्रह्मे हे प्रभु! यह भी वाक मैंने जान लिया है। परन्तु देवी! नतमस्तिष्क हो गई, देवी! ने कहा धन्य है, प्रभु! आप ने मेरे अज्ञान को दूरी कर दिया है मैं अज्ञान में थी मृत्यु के मुखारबिन्द में मानो स्वार्थपरता में लगी हुई थी। क्या मेरा हिरण्यं देखो, जो सङ्कल्प में था परन्तु वह सङ्कल्प मात्र रह गया है, और सङ्कल्प मात्रों से मानो देखो, मैं दूखित हो रही थीं। हे प्रभु! न आत्मा का विनाश है और न नाना प्रकार के अव्वयों का विनाश होता है, तो प्रभु! मृत्यु भी नही हैं मेरे प्यारे! जैसे देवी! शान्त हो गई। तो ऋषि ने कहा देवी! मृत्यु भी है। तो देवी! बोली प्रभु! वह क्या है, उन्होंने कहा रमं ब्रहे कृतं तुम्हें यह प्रतीत है कि राजा जनक की सभा में नाना ब्रह्मवेत्ताओं का समाज एकत्रित हो रहा था, एक समय और महात्मा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे, और महात्मा अर्द्धभाग ने यह प्रश्न किया क्या हे ऋषिवर! मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो याज्ञवल्क्य ने कहा था

हे अर्द्धभाग! मत कहो मृत्यु की मृत्यु नही होती अरे, मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है। क्योंकि ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नही हुआ करती, तो मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह कहा तो देवी! चरणों में ओत प्रोत हो गई और यह कहा कि प्रभु! आपको धन्य है। आप ने मुझे प्रकाश में पंहुचा दिया है। तो मेरे प्यारे! देखो, जानात्वं जन्म ब्रह्मा लोकां ज्ञानी ही संसार में बेटा! प्रकाश में रत्त रहता है, जो अपने को यह स्वीकार करता है। मैं प्रभु के राष्ट्र में विद्यमान हूँ। तो प्रभु! के राष्ट्र में बेटा! रात्रि नही होती वहाँ सदैव प्रकाश रहता है, और जहाँ प्रकाश ही प्रकाश होता है रात्रि नही होती वहाँ आलस्य नही होता और जहाँ आलस्य और प्रमाद नही होता वहाँ संसार में मृत्यु भी नही हुआ करती, और अन्धकार नही होता और अन्धकार कहते हैं अज्ञान को, इसीलिए प्रत्येक मानव को ज्ञानी बनना चाहिए, क्योंकि ज्ञान सदैव नवीन रहता है, अरबो खरबों वर्ष हो गएं, क्योंकि देखो, ज्ञान नवीन था देखो, आज भी एक रस रहने वाला है। तो हमें बेटा! ज्ञान में रत्त रहना चाहिए, और ज्ञानी बन करके, देखो, अपने में मानो देखो, अन्धकार को त्याग करके अज्ञान को त्याग करके परमात्मा के राष्ट्र में अपने को स्वीकार करना चाहिए यह है।

बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए तो महात्मा पिप्लाद ने अपनी, पत्नी के अज्ञान को नष्ट किया और वही ब्रह्मवताओं की सभा में अपना व्यक्तव्य दे करके ब्रह्मवेत्ता अपने में शान्त हो गएं तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, मृत्यु भूतं ब्रह्मा मृत्यु का अभाव है, इसीलिए अभावां में रत्त रहना चाहिए और ज्ञान मानो देखो, अनन्त है क्योंकि मानो देखो, परमात्मा ज्ञानी है, और उसके अपने क्षेत्र में पंहुचोंगें, उसको जानता रहता है उसे अपने प्रकाश में जाने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मां वायु गा रथं आ पाहाम्। ओ३म् यशश्चां प्राची रथं आ

पाहाम् ।